शाश्वतधर्म

अगस्त १९९१

संपादक - जे. के. संघवी

साहित्य मनिषी आचार्य देव श्रीमद्विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी द्वारा लिखित / सम्पादित उपलब्ध साहित्य आज ही मंगवाइये।

* नमो मन से नमो तन से — पांच रूपये
  नवकार पर आधारित प्रवचनों का सुन्दर संकलन (द्विरंगी मुद्रण)
* जीवन ऐसा हो — पांच रूपये
  (मार्गानुसारी के पेंतीस गुणों का वर्णन, द्विरंगी आकर्षक मुद्रण)
* जयन्तसेन सतसई — चार रूपये
  (विविद विषयों पर ७०७ दोहों का संकलन)
* ज्योतिष प्रवेश — सात रूपये
  (ज्योतिष सम्बन्धी प्रारंभिक जानकारी)
* नवकार गुण गंगा — पांच रूपये
  (नवकार पर सुन्दर / भाववाही स्तवनों का संकलन)
* चिर प्रवासी — चार रूपये
  (जीवन यात्रा के विभिन्न पड़ावों पर उपदेशात्मक मुक्तक)
* गुरूदेव पुष्पांजलि — तीन रूपये
  (श्रद्धेय गुरूदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी के भक्ति गीतों का संग्रह)
* तीर्थ - वंदना — तीन रूपये
  (विविध तीर्थों के मूलनायक भगवंतों के स्तवन)
* भगवान महावीर ने क्या कहा ? (हिन्दी/गुजराती) — बीस रूपये
  (आगम ग्रन्थों से चुनी हुई २५० सुक्तियों पर सुन्दर विवेचन)
* भक्ति सागर — दो रूपये
  (स्तवनों का संकलन)
* अरिहंते शरणं पवज्जामि (हिन्दी/गुजराती) — दस रूपये
* यतीन्द्र मुहुर्त दर्पण — इक्कावन रूपये
  (मुहूर्त संबंधी वृहद् संकलन)
* भक्ति प्रदीप (स्तवन) — दो रूपये
* हेम मुक्ति स्वयं सुधा (गुजराती) — पांच रूपये
* नवकार आराधना (हिन्दी / गुजराती) — पांच रूपये
  (नवकार पर मननीय प्रवचन)
* अष्टान्हिका व्यख्यानम् — दस रूपये
  (पर्युषण व्याख्यान)
* जिनेन्द्र पूजा संग्रह (वृहद्) (गुजराती) — इक्कीस रूपये
  (विविध पूजायें रंगीन चित्रो के साथ)
* जिनेन्द्र पूजा संग्रह (लघु) — दस रूपये
  (विविध पूजाये रंगीन चित्रो के साथ)
* पंचप्रतिक्रमण विधी सह (पॉकेट साईज) — दस रूपये
  (प्रतिदिन आवश्यक क्रिया में उपयोगी)

उपरोक्त पुस्तकें मंगवाने हेतु मूल्य के साथ प्रति पुस्तक पोस्टेज एक रूपया जोड़कर मनीआर्डर निम्नांकित पते पर भिजवायें —

शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका, थाने - ४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

1313

शाश्वतधर्म

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक

संस्थापक - व्या. वा. आचार्यदेवश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

संपादक : जे. के. संघवी

सहसंपादक : शांतिलाल सुराना

: संपर्क सूत्र :

☎ 5340724

शाश्वतधर्म कार्यालय,

जामली नाका, थाने - ४०० ६०१. (महाराष्ट्र)

सदस्यता शुल्क

बीस वर्षीय – तीन सौ रूपये

पांच वर्षीय – एक सौ रूपये

वार्षिक – पच्चीस रूपये

विज्ञापन शुल्क (एकबार)

पूरा पृष्ठ – ३००/- रूपये

आधा पृष्ठ – १७५/- रूपये

पाव पृष्ठ – १००/- रूपये

अंतिम पृष्ठ – ५००/- रूपये

(विशेषांक पर यह दर लागू नहीं है।)

वर्ष : ३९ ★ अंक - 3 ★ अगस्त १९९१

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित

अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

कहां क्या ?....

अपनी बात .... जे. के. संघवी 3
श्री पंच-परमेष्ठि स्वरूप दर्शन .... आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी 5
श्री चंद्रप्रभ जिन स्तवन (८) .... मुनिराज श्री जयानंदविजयजी 9
तेरह काठिया स्वरूप सज्झाय .... मुनिराज श्री सम्यगूरत्नविजयजी 11
जिसके मन में नवकार, उसको क्या करे संसार? साध्वी श्री सम्यगूदर्शनाश्रीजी 15
नवकार मंत्र का प्रभाव.................. साध्वी श्री चारुदर्शनाश्रीजी 17
शब्द, मंत्र एवं मंत्रराज नवकार.......................... श्री सुरेन्द्र लोढ़ा 19
आचारांग की सुक्तियां (२) .... श्री पुखराज भंडारी 22
ज्ञान कसोटी (८)........................... श्री महेन्द्र जे. संघवी 25
णमोकार मंत्रसाहित्य.............................. श्रीमती गीता जैन 26
साधना नवकार की .... जे. के. संघवी 33
नमस्कार महामंत्र...................... श्री मुमताज एहमद चिस्ती 35
शब्द सागर इनामी स्पर्धा (४) .... श्री प्रदीप एम. जैन 39
समाचार दर्शन 40
Navkar Mantra-The way to Success Shri Rajendra P. Mahatma 56
શ્રી પંચમંગલ મહાશ્રુત સ્કંધ......... શ્રી સુધર્મ સાગરજી (માલણવાલા) 58
નવકાર આરાધના.................... શ્રી કીર્તિલાલ હાલચંદ્ર વોરા 59
જંગલમાં મંગલ .... શ્રી રસિકલાલ સી. પારેખ 61
શ્રી નમસ્કાર મહામંત્રની આરાધનાની વૈજ્ઞાનિકતા 63

Computer Typesetter : Laser Print Master
3/13, Gograswadi, Dombivli (East)-421 201

अवकाश सूचना

अनिवार्य संयोगों के कारण **शाश्वत धर्म** का **सितम्बर १९९१** अंक ग्राहकों की सेवा में नहीं पहुंच पाएगा। अगला अंक अक्तूबर १९९१ में प्राप्त होगा। पाठकगणों को होने वाली इस असुविधा के लिए हम क्षमा चाहते हैं।

J. K. Sanghvi
—सम्पादक.

अपनी बात

व्यवसाय बन गयी है शिक्षा

भारतीय संस्कृति या परम्परा में शिक्षा को सेवा या कर्तव्य समझा जाता था। ब्राह्मण किसी भी प्रकार का लोभ न रखते हुए बच्चों को अच्छा नागरिक बनाने हेतु उनमें नैतिक संस्कारों का सिंचन जी-जान-से करते थे। विद्यार्थी भी शिक्षादाता के प्रति विनय, विवेक व निष्ठा रखता था। गुरूकुल व्यवस्था में तो कुमार वय तक विद्यार्थी घर पर भी न आकर गुरु सानिध्य में ही रहकर विद्याध्ययन करता था। विद्या को पवित्र संस्कार समझा जाता था।

आज सेवा या कर्तव्य की भावना लुप्त होकर शिक्षा एक व्यवसाय बन गयी है। इसे पैसा कमाने का साधन बना लेने से सारी नीतियाँ या मूल्य ध्वस्त हो गये हैं। प्रारंभ में स्कूल प्रवेश के समय डोनेशन के नाम से लूट की शुरुवात होती है। डोनेशन का अर्थ होता है स्वेच्छा से भेंट किन्तु यह स्वेछा से नही, मांगकर लिया जाने से मजबूरन देना पड़ता है। फिर खेल, लायब्रेरी (पुस्तकालय) बस सुविधा के नाम पर लूट चलायी जाती है। किताबें व नोटबुकें भी वहीं से खरीदने का दबाव डालकर दुगने-तिगुने रुपये वसूल किये जाते हैं। फिर युनिफॉर्म (गणवेश) के विषय में कमीशन लेकर जिस व्यापारी से साठ-गांठ की जाती है उसे अधिकृत बनाया जाकर वहीं से गणवेश खरीदने के लिये कहा जाता है। उस दूकान की रसीद बताने पर ही वह गणवेश मान्य होता है। व्यापारी भी बिना स्पर्धा के कारण मनमाने ढंग से पैसे वसूल करता है। फिर माँ - बापों कों बच्चा पढ़ायी में कमजोर बताया जाकर अपनी विशेष आवक हेतु उसके ट्यूशन के लिये बाध्य किया जाता है। यदि कोई इसके लिए तैयार नहीं होता तो उसे जानबुझकर कम नंबर दिये जाने के किस्से भी प्रकाश में आये हैं, इस प्रकार विद्यार्थी पर मानसिक दबाव ड़ाला जाता है। इधर ट्यूशन करने पर प्रश्नपत्र पहले बताकर याद करवा दिये जाते हैं या बच्चे को उत्तीर्ण कर दिया जाता है, बच्चे को कुछ आता हो या नहीं किन्तु, उत्तीर्ण प्रमाणपत्र से माँ-बाप खुश जरुर हो जाते हैं। फिर प्रतिवर्ष डोनेशन का सिलसिला कोई न कोई बहाना आगे कर जारी रखा जाता है।

भ्रष्टाचार का यह चेपी राग उपर के सरकारी अधिकारीयों से चलता आ रहा है। अकेला कोई व्यक्ति आगे नहीं आता, वह फरियाद करे तो भी कहाँ करे एवं सुनने वाला है कौन? इसीलिये चुपचाप मजबूर होकर इस जुल्म को वह सहन कर लेता है।

शिक्षा का स्तर भी आज कितना गिर गया है, इस पर चर्चा हम और कभी करेंगे।

सरकार द्वारा सभी को साक्षर बनाने का ढ़ोल पीटा जा रहा है किन्तु दूसरी ओर अधिकारियों की सांठ गांठ से लूट चलायी जा रही है। इसके दूरगामी परिणाम अच्छे नहीं होंगे। प्रारंभ से ही बच्चों के मानस पर पैसों का प्रभाव पड़ जाने से यह धारणा बन जाती है कि जैसे पैसा ही सब कुछ है।

भ्रष्टाचार व्याप्त इस शिक्षा प्रणाली के द्वारा शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी का राष्ट्र के या समाज के प्रति समर्पित नागरिक बनना संदेहास्पद लगता है। आदर्श जीवन जीने वाले शिक्षकों द्वारा एवं दबाव या भष्टाचार से मुक्त शिक्षा प्रणाली द्वारा विद्यार्थी जीवन में उच्चादर्शों, संस्कारों के बीजारोपण द्वारा शिक्षा को उपयोगी बनाया जा सकता है, अन्यथा व्यवसाय बनी हुयी यह शिक्षा प्रणाली दुःखद साबित हो रही है व होगी।

J. K. Sanghvi

जे. के. संघवी

अध्यक्ष की ओर से.....

आदरणीय गुरूभक्त सहयोगियों,

समाज संगठन, धार्मिक प्रचार, समाज सुधार तथा कमजोर वर्ग का आर्थिक विकास जैसे मूल समाजोत्थानकारी उद्देश्यों को आत्मसात कर अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के रूप में एक संगठन की स्थापना स्व. गुरूदेव श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज ने समाज को उन्नत करने के लिए तीस वर्ष पूर्व परमपवित्र श्री मोहनखेड़ातीर्थ पर की थी एवं आरोपित उस बीज को अंकुरित तथा सुफलित करने के लिए पूज्य वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराज 'मधुकर' को उसे सौंपा था। पूज्य वर्तमानाचार्यश्री मधुकरजी ने वरदायी कर्मठ प्रेरणा प्रवाहित कर परिषद को आज एक सुविशाल वटवृक्ष में परिणत कर दिया है। हम सभी परिषद के माध्यम से जुड़े हुए हैं। परिषद ने हममें चेतना का संचार किया है, यही नहीं समाज की प्रगति के कदमों को मज़बूत बनाया है। स्व. गुरुदेव श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज फरमाया करते थे- 'जो परिषद है, वही समाज है। परिषद की प्रगति समाज की प्रगति है'। इसे ही सार्थक बनाने के लिये हजारों युवाओंका समूह परिषद मंच पर एक जूट होकर एकता व निर्माण की जयध्वनि गूंजा रहा है। हमें गुरूदेव के सपनों एवम् वर्तमान आचार्य देव के संकल्पों को साकार रूप देने हेतु समर्पण भाव से स्वशक्तियों को इस महायज्ञ में आहुत करना है।

प्रसन्नता है कि अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का अधिवेशन आगामी १५ व १६ अगस्त को वर्तमानाचार्य श्री मधुकरजी के मंगलकारी सान्निध्य में आयोजित किया जा रहा है। परिषद के साथी एवम् समाज के माननीय सहयोगी अधिकाधिक संख्या में पधारकर इस अधिवेशन को सफल बनाएँ। मेरा निवेदन है कि जिन नगरों तथा ग्रामों में परिषद शाखाएँ नहीं है, वहां शाखा स्थापित कीजिए। जो महानुभाव परिषद के सदस्य नहीं है वे कृपया सदस्य बनिए, और सक्रिय होने की प्रतिज्ञा ग्रहण किजिए।

हम सभी को मिलकर समाज में क्रान्ति लानी है। ऐसी क्रान्ति जो तीर्थंकर महावीर स्वामी के उपदेशों को घर-घर पहुँचाए, गुरु राजेन्द्र के आदर्शों को जन-जन तक विस्तृत कर, समाज विकास संकल्प से हर साथी को परिपूर्ण करें एवम् एक सुसंगठित-सुसंस्कारित, सुविकसित समाज की रचना के लिए हम सभी को प्रेरित करें।

जय जिनेन्द्र!

सेवंतीलाल एम. मोरखिया
अध्यक्ष, अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

परम पूज्य गुरुदेव प्रातः स्मरणीय प्रभु श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरिश्वर कृत नवपदपूजार्तगत श्रीपंच-परमेष्ठि स्वरूप दर्शन

विवेचन – प. पू. आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा.

अनिष्ठों का समापन एवं सन्निष्ठों का सम्मिलन, परमेष्ठियों की शरणागति एवं आत्मोन्नति की परिणति, जिनेन्द्र शासन की विश्ववत्सलता और जीव मात्र की कारूण्यता ! अद्भूत अलौकिक ब्राह्यभ्यन्तर स्वरूप जिसमे सन्निहित है, ऐसे नमस्कार महामंत्र के एक-एक पद का अरे ! एक-एक अक्षर का अर्थ अनन्त है ! उसका संपूर्ण दर्शन या चित्रण सर्वथा संभव नहीं ।

इस महामंत्र में प्रतिष्ठित पंच परमेष्ठि भगवन्तों का विशद वर्णन एवं स्वरूप दर्शन विभिन्न पुण्य पुरूषों ने जन साधारण को समझाने के लिये किया है । उनमें परम कृपालु सरस्वती पुत्र पूज्यपाद गुरुदेव प्रभुश्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म. के द्वारा किया गया जो निरुपण-वर्णन है, वह संक्षेप में भी अति गंभीर है ।

उन श्री द्वारा रचित श्रीनवपद पूजान्तर्गत पंच परमेष्ठि का वर्णन है, उस पर सामान्य विवेचन यहाँ पर देने का प्रयास किया गया है ।

यद्यपि किसी कृति पर विवेचन करने का साहस दुःसाहस होता है तथापि भक्तिवश किया गया विस्तार आत्मभावना को जगाने वाला होता है । पूजा में दिये गये छन्दों का यहां विवेचन किया जा रहा है ।

(भुजङ्गप्रयात्त छंद)

तित्थयरं नाम प्रसिद्धिजायं, णरामरेहि पणयं हि पायं ।
संपुण्णणाणं पयडं विशुद्धं, णमामि सोऽहं अरिहंत बुद्धं ॥ १ ॥
भव्वाण बोहे उवएसजस्स, विवाग सो अत्थि सुकम्मगस्स ।
रागोण दोसोण विकार तस्स, णमोणमो हो उसहाइयस्स ॥ २ ॥

तीसरे भव में जिन्होंने बीसस्थानक तप की आराधना करके तीर्थंकर नाम कर्म बांध लिया था और अंतिम भव में उसे भाव तीर्थंकर रूप में सार्थक किया है । जिनकी अलौकिक अतिशय शक्ति एवं दिव्य आत्मिक अनन्त चतुष्टयी के प्रकटीकरण से तीनों लोक के नर-नृपेन्द्र और सुर-सुरेन्द्र जिनके चरणों में सश्रद्ध वन्दन नमस्कार करते हैं ।

कैवल्य लक्ष्मी से जो सम्पूर्णताः संपन्न हैं, जिनका केवल ज्ञान आवरण रहित एवं प्रकृति से ही सर्वथा विशुद्ध है ।

जिनको किसी के उपदेश की या किन्ही गुरु की कोई आवश्यकता नहीं है, अपितु जो स्वयं संबुद्ध हैं । सब के मध्य रहते हुए भी जो सब से भिन्न रहते हैं और अपने प्रकट स्वरूप को विशेषतः स्पष्ट करने में सन्नद्ध रहते हैं ।

संपूर्णता के चरम क्षणों तक भी जो अपने विमल उपदेश से जन-जीवन को सम्यग् दृष्टि, सम्यग् मार्ग प्रदान करते हैं और निर्भीक जीवन हेतु अभूतपूर्व आत्मधर्म की घोषणा करते हैं।

अष्ट कर्म में से ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय एवं अंतराय जिन के सर्वथा क्षयंगत हो चुके हैं और जो कर्मों की भयंकरता एवं विचित्र बंध, उदय, सत्ता, स्थिति का अनुभूतिपूर्ण दिग्दर्शन कराते हैं। भास्कर की भांति भव्य-जीवों के हृदयकमल को जो प्रतिबोध करके अनादि अनन्त के मिथ्यात्व दलिकों के अन्धकार से प्रकाश पुञ्ज की ओर गति एवं प्रगतिशील करते हैं।

जिन की देहयष्टि के दर्शन मात्र से ही राग या द्वेष के सर्वथा समाप्ति का अनुभव हो जाता है। राग का द्योतक लाल रंग एवं द्वेष का द्योतक श्याम वर्ण जिनके रक्त में, अस्थि में या मज्जा में रह नहीं सका है और कषायों की उपस्थिति को जहाँ अवकाश भी नहीं रहा है, ऐसे श्री ऋषभदेवादि अनन्तानन्त तीर्थकरों-अरिहंतों को मेरा बार-बार नमस्कार हो।

(भुजङ्गप्रयात्त छंद)

कम्मट्ठचिच्चा समएणमेगं, वगाह आगासपयेसवेगं।
भागंतिगं देहसमग्गहिच्चा, भजोभवि ! सिद्ध सयासुणिच्चा ॥
को जस्स सुक्खं भएणं हिसूरो, भवोदहिं एत्थि सणाण पूरो।
आलंबणं मुक्ख पहस्स सुद्धं णमामि सिद्धं सरणं पसिद्धं।

एक समय में ज्ञानावरणीयादि आठ कर्मों को जिनने नष्ट करके मोक्ष सुख यानि आदि-अनन्त की स्थिति को प्राप्त कर लिया है, जिनका पुनः इस जन्म-मरण रूप जगत में पुनरागमन या प्रत्यगमन नहीं होने वाला है। अन्तिम आठ समयान्तर्गत एक समय में समुद्घात करते समय जो एक समय मात्र में चौदह रज्जु प्रमाण ऊर्ध्व, अधो, तिर्यग् विश्व में व्याप्त हो जाते हैं। सम्पूर्ण आकाश प्रदेश प्रमाण जो अवगाहना करते हैं। जिनके अन्तिम समय में अन्तराल पूर्ति के बाद शरीरावगाहना के तीन भाग रह जाते हैं ! जिनके अलौकिक लोकोत्तर सुख का वर्णन शब्दातीत है। कोई भी ज्ञानवान केवल ज्ञानी भी उस सुख का सम्पूर्ण वर्णन नहीं कर सकते। जो मोक्षं पथ में विशुद्ध आलम्बन रूप हैं। अशरण को शरण प्रदाता एवं विश्व के सर्वश्रेष्ठ आश्रयभूत सिद्ध परमात्मा की बार-बार स्तवना करते उनके शरण की भावना रखते हैं।

पारम्परिक ऊर्ध्वगमन स्वभाव परिणाम से या बंधछेदन स्थिति या कर्म संगति समाप्त होने से जो बंधनमुक्त स्थिति पा चुके हैं। लोकांत भाग स्थित ऐसे निर्मल स्थिति प्राप्त सिद्ध परमात्म-स्वरूप ज्योतिर्मय स्थिति सम्पन्न है, जिन के स्मरण मात्र से सर्वोपाधि समाप्त हो जाती है। ऐसे प्रसिद्ध सिद्ध परमात्मा को बार-बार नमस्कार हो, जो अन्तर का तमस् समाप्त करते हैं।

(भुजङ्गप्रयात्त छंद)

जिणाण आणम्मि मणं हिजस्स, णमो णमो सूरि दिवायरस्स।
छत्तीसवग्गेण गुणायरस्स, आयारमग्गं सुपयासयस्स ॥
सूरिवरा तित्थयरा सरीस्सा, जिणिंदमग्गं मिणयंति सीस्सा।
सुत्तत्थभावाण समंपयासी, ममंमणेसि वसियो णिरासी ॥

जिनके चित्त में जिनेन्द्र भगवन्त की आज्ञा पालन का ही प्रमुख ध्येय रहता है । अर्थात् तीर्थंकर परमात्मा ने जिस शासन की स्थापना की है, उसका संरक्षण एवं संवाहन संचालन ही जिनका कर्तव्य है, उसकी गति एवं प्रगतिशीलता के लिये जो सदा तत्पर रहते हैं ! जो छत्तीस विशिष्ठ जीवनोन्नायक गुणों से अलंकृत होते हैं । दुर्गणो के दलन के लिये एवं सद्गुणों की संवृद्धि के लिये जो सदा कृत संकल्प होते हैं । गुणों के सागर, आत्म-भाव के पोषक एवं विभाव के शोषक होते हैं । जो आचार मार्ग के प्रकाशक हैं अर्थात् चतुर्विध संघ रूप शासन में जो ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार रूप आचरणा का प्रचार करते संघरूप कमल को दिवाकर की भांति विकस्वर करते हैं ।

जो संघ समुदाय में सारण, वारण, चोयण, पडिचोयण की अनवरत प्रवृत्ति रखते हुए विकासोन्मुखी प्रवृत्तियों में सभी को निरत रहने की प्रेरणा देते हैं । ऐसे आचार्य भगवंतो को बार-बार नमस्कार हो !

आचार्य श्री तीर्थंकर भगवंतों की अनुपस्थिति में तीर्थंकर तुल्य माने जाते हैं । उनके द्वारा निरुपित मार्ग का अनुसरण चतुर्विध श्रीसंघ के लिये हितकारक होता है । जिनेन्द्र भगवंत के मार्ग को आचार्यवर्य शिरोधार्य करते हैं एवं आत्मार्थियों को उसमें जोड़ते हैं । सूत्र और अर्थ के भाव को सम्यग् तथा स्पष्ट प्रकाशित करते हैं ! गीतार्थपद को अलंकृत करने वाले ये पुण्य श्लोक आचार्य भगवंत श्रेष्ठतम आलम्बन-भूत हैं । संसार भार से विरक्त ऐसे तृतीय पदाधिष्ठित आचार्य भगवन्तों का मेरे हृदय में सदा निवास है या मेरे हृदय में बसे हुए हैं ।

(भुजङ्गप्रयात्त छंद)

सुत्ताणपाठं सुपरंपराओ, जहागयं तं भविणं चिराओ ।
जे साहगा ते उवज्झायराया, णमो णमो तस्स पदस्सपाया ॥
गीयत्थता जस्स अवस्स अत्थि, विहारजेसिं सुयवज्जणत्थि ।
उस्सग्गियरेण समग्गभासी, दिंतु सुहं वायग एाणरासी ॥

जिनवाणी जो सूत्रों में ग्रंथित है उन आगमसूत्रों की परम्परा का जो यथावत् अध्ययन, मनन, चिन्तन, परिशीलन और अनुशीलन करते हैं, इतना ही नहीं, अपितु मुमुक्षु जीवों को उसका अध्यापन कराते हैं । भव्य जीवों के लिये परम्परागत सूत्रार्थ को समझने जानने के लिये जो दीपक समान हैं । दीपक के प्रकाश में पथ-दर्शन सहज में हो जाता है, ठीक उसी प्रकार से जिनका अस्तित्व प्रकाशरूप रहता है, जो सदा के लिये स्वाध्याय तप में संलग्न साधक की श्रेष्ठ भूमिका पर आसीन हैं, वे उपाध्याय महाराज हैं और उनके चरणों में बार-बार नमस्कार हो !

गीत अर्थात् आगमसूत्र एवं अर्थ अर्थात् भाव ! जो आगमगत मूल बात एवं उनमें सन्निहित अर्थ की गहनता व गम्भीरता के ज्ञाता गीतार्थ हैं । जिनका कथन एवं वचन सदा अविसंवादी और जिनका सर्व-व्यवहार सत्परुपणापरक होता है ! जिन का विहार श्रुतव्यंजनक जन-जीवन को ज्ञानप्रकाश प्रदायक रहा है । जो उत्सर्ग से समग्रभावों के अवभाषक होते हैं- ऐसे उपाध्याय भगवन्त सुख प्रदान करने के साथ सम्यग् ज्ञान की अगाध-राशि प्रदान करावें ।

(भुजङ्गप्रयात्त छंद)

संसार छंडी दृढ मुक्ति मंडी, कुपक्ष मोडी भवपाश तोडी ।
निग्गंथ भावे जसु चित्तअत्थि, णमो भवि साहुमुणीजणत्थि ।
जे साहगा मुक्खपहे दमीणं, एामो णमो हो ते मुणीणं ।
मोहे नहीं जेह पड़ति धीरा, मुणीण मज्झे गुणवन्तवीरा ।।

प्रतिदिन जो चलता है, जो कभी ठहरता नहीं । जिस ओर दृष्टिपात करें, उस ओर सभी चल रहे हैं । चलते रहना ही संसार है । जहाँ चंचलता का प्राधान्य है और जहाँ स्थैर्य को अवकाश नहीं है ! उसी को संसार कहते हैं । जहाँ ममत्व की मोहक स्थिति विद्यमान है और कषाय के परिणामों का जहाँ प्राबल्य रहता है उसको संसार कहा है । स्वार्थ की निकृष्ठ हीन भावनाओं का जहाँ डेरा लगा हुआ है, और चील झड़प सी वृत्ति एवं प्रवृत्तियों का जहाँ बाजार जमा हुआ है, उसको संसार कहा गया है - परमज्ञानियों द्वारा !

ऐसे संसार के भावों को जिनने छोड़ दिया है । आवश्यकताओं का अन्त कर दिया है और समानता एवं समत्व के साधना-पथ पर जो आरूढ़ हो चुके हैं ! ऐसे मुनिप्रवर को नमस्कार करें, युक्ति की श्रृंखलाओं को छेदकर मुक्ति की ओर जिन के कदम दृढ़ता से बढ़ रहे हैं । अनेक प्रकार विचार-व्यवहारों के गतिमान होने पर सुपक्ष-कुपक्ष का निर्णय एवं स्वीकरण की जिनमें क्षमता आ गई है । कुपक्ष का परित्याग कर सुपक्ष में जो स्वयं को स्थिर करते हैं । वे ही भव (जन्म-मरण) की बेड़ियों को तोड़कर स्वयं को स्वतन्त्रता दिला सकते हैं !

जिन के चित्त में निर्ग्रन्थभाव के अतिरिक्त कोई भाव स्थान नहीं पा सकता है । ग्रन्थन-बंधन कारक कोई भी मानसिक वाचिक या कायिक प्रवृत्ति जिनको जीवन में इष्ट नहीं होती, ऐसे साधुजनों को अयि ! भव्य जनों ! तुम नमस्कार करो ।

जिनका ध्येय बंधन-मुक्ति है, पंथ उसके निकट में ले जानेवाला होता है और कार्य उसकी प्राप्ति के अनुरूप होते हैं । इन्द्रियों का दमन करते हुए जो उसी ओर सतत अनुगमन करते हैं । जिनकी धीरता को कोई डिगा नहीं सकता और किसी भी प्रकार की मोहराज की प्रबल सत्ता भी जिनकी धीरता के सामने पराजित होती है और जो गुणवन्त गरिमायुक्त है ।

भव्य-जनों ! अपने लिये ऐसे मुनि भगवंत सदा के लिये वन्दनीय एवं नमस्कारणीय हैं, उनको बार-बार नमस्कार करें ।

पृष्ठ 33 का शेष

जिसे नवकार पर प्रीत हो क्या वह स्वप्रशंसा में लीन हो सकता है ?

नवकार का रागी क्या परनिंदा में रागी बन सकता है ?

जिसने हृदय में नवकार की स्थापना की हो वह तो प्रभु स्मरण में निमग्न रहेगा, प्रभु आज्ञा को शिरोधार्य कर मैत्री, प्रमोद, कारुण्य और माध्यस्थ भाव के शिखर पर विचरण करते हुए दान-शील-तप और भाव की आराधना में रत रहेगा ।

नवकार भक्ति की यह महिमा है कि इसके साथ प्रीत बांधना अर्थात् जीव मात्र के साथ प्रीत बांधना, जिसमें न तो एक तरफी राग है और न ही एक तरफी द्वेष । उसमें होता है जीवों के प्रति सहजभाव । इस भाव में शक्ति है भवचक्र को तोडने की ।

नवकार को भाव पूर्वक नमस्कार करने से परमेष्ठियों की कृपा से साधक के मिथ्यात्वादि के साथ संबंध क्रमशः ढीले होते हैं एवं इनके अंत से जीव शीवपद वासी बनता है ।

श्री चन्द्रप्रभ जिन स्तवन (८)

विवेचन - मुनिराज श्री जयानंदविजयजी

(कोई लो परवत धूंधलो रे लाल- ए राग)

चंद्रप्रभ जिन चातुरी रे लाल, चाहु चित्त करी चंग रे जगीशर।
तु जग जागतो जगपती रे लाल, केवल थी करे काज रे जगीशर। तुं. ।।

भावार्थ : *हे चन्द्रप्रभ स्वामी! मैं चित्त को/मन को चंग अर्थात् निर्मल कर चातुर्यता पूर्वक शास्त्र की मर्मभरी रहस्य भरी बातों को समझने की बुद्धि रूपी शक्ति आपसे चाहता हूँ। निर्मल चित्त एवं समझ शक्ति रूप चतुरता से ही आप श्री के आगमों का विशिष्ट अर्थावबोध हो सकेगा।*

आप श्री इस विश्व में जागृत एक ही विश्वनाथ हो जो सारे विश्व का कार्य तीर्थंकर पदसह केवलज्ञान से कर रहे हो। अर्थात् तीर्थंकर पद के प्रबल पुण्योदय से सारे विश्व के भव्यात्माओं के हित का कार्य होता है। आपकी कृपादृष्टि यही कि आपने तीर्थंकर पद प्रगट कर प्रशासन की स्थापना की।

आप की कृपादृष्टि से मुझे निर्मल चतुरता मिलेगी उसमें मुझे कोई शंका नहीं।

सादी न भाषे संसारनी रे लाल, सादी अनंते सिद्ध जगीशर। तुं. ।। १ ।।
सिद्धि अनादि साधतां रे लाल, संसारथी थया सिद्ध रे जगीशर।
कहो कुण पहेलां कदी थयो रे लाल, पिण तुज वचन सु लिद्ध रे जगीशर।। तुं. ।। २ ।।
जिन दिगंतर जावतां रे लाल, नभ प्रदेश नि संख रे जगीशर।
समय प्रदेश न संभवे रे लाल, केवली वचन निकंख रे जगीशर।। तुं. ।। ३ ।।

भावार्थ : *संसार, सिद्ध, कर्म आदि की मूलभूत व्याख्याओं का संक्षेप में दिग्दर्शन करवाया है इस स्तवन में—*

हे चन्द्रप्रभ जिन! आप श्री संसार की आदि/उत्पत्ति नहीं मानते, नहीं कहते, सिद्ध के जीव की सादि भी कहते हैं सिद्ध गति को अनादि कहते हैं एवं संसार से ही सिद्ध होते है ऐसा भी कहते हैं।

इन बातों को श्रवण कर सहज शंका होती है कि कौन पहले हुआ कौन बाद में, सिद्ध के जीव की सादि तो कैसे? सिद्ध के जीव की सादि तो सिद्ध गति अनादि कैसे? एवं संसार से सिद्ध होते है तो सिद्ध के जीवों में प्रथम कौन?

इन शंकाओं का समाधान युक्ति पुरस्सर आप श्री के आगमों में निहित है। आगमों का मनन चिंतन एवं परिशीलन करने पर तथ्य प्रगट हो गया कि आत्मा अनादि से, कर्म अनादि से आत्मा एवं कर्म का संबंध अनादि से है तो संसार अनादि से हुआ, संसार अनादि से तो सिद्ध गति अनादि से हुई। एकजीव आश्रयी सिद्ध होना सादि हुआ। अनंत जीव आश्रयी अनादि, जो भी सिद्ध होते हैं वे संसार से सिद्ध होते है। वह भी ढ़ाई द्वीप रूप लोक से ही उसके बाहर के संसार से नहीं।

यह सारा क्रम अनंतकाल तक चलेगा इसमें लेश मात्र फर्क पड़ने वाला नहीं।

आत्मा बंधन मुक्त जिस समय में होती है, उसी समय में उसी आकाश प्रदेश को स्पर्श करती हुई, उसी स्थान के ऊपरी स्थान पर जाकर स्थित हो जाती है। न दूसरा समय लगता है न दूसरे आकाश प्रदेश का स्पर्श करती है।

ये सारी बातें आप्त पुरुषों के वचन, केवलज्ञानीयों के वचन द्वारा जानकर मैं नि:शंक/नि:कंख हो गया हूँ।

शीतादिक चौ फरसथी रे लाल, परमाणु में दोय प्रवेश रे ज.

खंध आठ किम संभव्यारे लाल, साह्या किहा थी शेष रे।। ज. ।। तुं. ।। ४।।

भावार्थ : *जिनेश्वर देव ने कहा है कि सूक्ष्म स्कंध चार स्पर्श वाला बादर स्कंध आठ स्पर्श वाला एवं एक परमाणु में दो स्पर्श होते हैं। यह कैसे होता है? इसमें मेरी तर्क युक्त शक्ति काम में नहीं आती। इसमें तो मुझे एक आप श्री के वचनों का ही आधार है।*

परमाणु से लगाकर असंख्यात प्रदेशिक स्कंध पर्यन्त और कितने ही अनंत प्रदेशिक स्कंधों में एवं एक-प्रदेशावगाढ से लेकर असंख्यात प्रदेशावगाढ स्कंधो में शीत, उष्ण, स्निग्ध एवं रूक्ष ये चार स्पर्श होते हैं।

एक अनंते अंत छे रे लाल, अन्य द्रव्ये नहीं अंतरे जगीशर।

सूरिराजेन्द्र ना सूत्र थी रे लाल, भाष्यो ए विरतंत रे जगीशर।। तुं. ।। ५।।

भावार्थ : *आत्मा जब कर्म मुक्त हो जाती है तब पुद्गल द्रव्य से उसके सम्बन्ध का सर्वथा अंत हो जाता है। तभी कहा एक अनंते अंत छे रे।*

धर्मास्तिकायादि द्रव्यों से संबंध रहता है अत: कहा अन्य नहीं अंत रे।

आत्मप्रदेश लोकाग्र भाग में स्थित है। अधर्मास्तिकाय वहाँ है, धर्मास्तिकाय वहां है, अनंतकाल तक वहां रहना है, इस प्रकार अन्य सभी द्रव्यों से संबंध है ही।

तीर्थंकर भाषित गणधर गुंफित सूत्रों के आधार से यह स्तवन रचा गया है, ऐसा गुरुदेव श्री ने स्पष्ट किया इसमें स्व मति कल्पना को स्थान नहीं दिया।

चन्द्रप्रभुस्वामी की भक्ति द्वारा हम सभी सिद्ध बनें ऐसे भाव गुरुदेव श्री ने दर्शाये हैं।

ज्ञान कसौटी (८) के उत्तर

(१७६) ५ लाख ६४ हजार ९८० वर्ष (१७७) श्रीकृष्ण के काल करने के कुछ महिनों बाद व करीब १०वर्ष तक संयम पालन किया? (१७८) चार (१७९) नहीं (१८०) लोकाग्रभाग में (१८१) दूरी समभूतला पृथ्वी से सात रज्जू प्रमाण ऊचाँ है एवं चौडाई एक रज्जू प्रमाण गोलाकार है (१८२) एक योजन (१८३) यह गोलाकार है तथा पैतालीस लाख योजन लम्बी चौड़ी है। इसकी आकृति उल्टे छत्र जैसी है (१८४) उत्कृष्ट तथा जघन्यायुष्य अंतर्मुहूर्त प्रमाण है (१८५) नौ समय (१८६) ४८ मिनट में एक समय कम (१८७) एक अन्तर्मुहूर्त प्रमाण (१८८) उत्कृष्ट २२००० वर्ष एवं जघन्य-अन्तर्मुहर्त्त प्रमाण (१८९) पाँच/वाचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा (१९०) पुद्गल (१९१) अमुक शर्तो के साथ लिया जाने वाला नियम (१९२) चारित्रोपयोगी साधन (१९३) आहार की व्याख्या में न आने वाले पदार्थ। हाँ (१९४) अतिशय (१९५) अशातना (१९६) क्रियोद्धार (१९७) आशातना (१९८) प्रमोद (१९९) लेश्या (२००) वाचना

तेरह काठिया स्वरुप सज्झाय

मुनिराज श्री. सम्यग्रत्नविजयजी म.सा.

जब कोई भवी जीव सामायिक देवपूजा,जिनवाणीश्रवण करना चाहता है,मगर मोहराय के प्रेषित दूत तेरह काठिया ऐसे बीच में आकर विध्न डालते हैं, आत्मा धर्मकृत्य भी नहीं कर पाती।उनको मार्ग से दूर करने हेतु ज्ञानी महर्षियों ने उपाय बतलाते हैं।उन्हीं की कड़ी में तेरह काठिया का स्वरुप समझाकर उन पर हमें विजेता होने का आह्वान देते हैं।तेरह काठिया का वर्णन इस प्रकार हैं।

[राग-नदी यमुना के तीर ऊड़े दोय पंखीया]

विचंरता एक सद्गुरूवरजी आवीया,
शिष्य तणो परिवार ते साथे लावीया,
पंचमहाव्रत शुध्द ते पाले सूरिवरा,
जिनवचन अनुसार ते चालेवा खपकरा (१)

समता रस भण्डार ते जिन आणा रुचि,
तप जप संजम खप करवा दिल मां जची,
वाणी सुणावे अमृतरस जाणे शेलड़ी,
सुणवा भवियण चालो के दोय-चार घड़ी (२)

खबर पड़तां ते मोहरायो तब आवीयो,
आतम ऊपर मोहनुं सैन्य जमावीयो;
जैन धरमप्रतिपालक उमराव आलीया,
मुज पंजा थी केई ते जीव छोड़ावीया (३)

जावा न देऊं जीव ने वाणी सुणवा भणी,
मोहमाया मां गुंथु जीव रुचि घणी,
सुणवा न देवे ते धर्म लइने लाठिया,
आड़ा आव्या ते आज तेरह काठिया (४)

प्रवचन सुणवा जीव ते घर थी उठियो,
आलस नाम नो काठियो अंग में पेठियो,
आज शरीर मां आलस आवे अति घणो,
सुणवा न जावे धर्म के बेठो वामणो (५)

दूजे दिन ते प्रवचन सुणवा मन करे,
मोह नाम नो काठियो आवी कर ग्रहे,

छोकरा छैयां आवी जीव ने वलगीयां,
मोहतणी आ गेल में ते पण दि गयो (६)

त्रीजे दिन ते मांड-मांड गयो जीवड़ो,
निद्रा नाम नो काठियो आवीने खड़ो;
गुरुजी उपदेश आपे ते वीर वचन भणी,
बेठो जीव ते सुणवा निंद आवे घणी (७)

चोथे दिन ते सुणवा जाबा मन करे,
अहंकार नाम नो काठियो मन में अहं धरे;
हुं मोटो छुं सेठ के पाछल बेसवुं,
ते किम मुझ ने शोभे के त्यां हुं नहिं जवुं (८)

पांचमें दिन ते जावा मन में उलसीयो,
के कोई वाद-विवाद में क्रोध ते घुसीयो;
क्रोध चण्डाल थी शेठजी मन में धमधम्या,
तेहथी धर्म नी रीत ते शेठजी सहु वम्या (९)

छट्ठे दिन ते धर्म ने दिल मां धारता,
कृपण नामनो आवी ने सेठ ने वारता,
टीप टीपणी चाले त्यां पैसा लखाववा,
ए तो मांने न रुचे के कृपण भावमां (१०)

सातमे दिन ते शोक नामनो काठियो,
जावा न देवे जीव ने शोक करी वारियो,
लोभ नामनो काठियो आवी ने नड्यो,
धर्मथी शुं धन मेलवे आवीने वड्यो, (११)

नवमे विकण नामनो आवी मन भरे,
व्रत पच्चक्खाण ने धारवा मनमां ही डरे;
दशमो रती नामनो आबी घर करे,
घरमां बेसी राखे ते रति क्रीडा करे (१२)

टी.वी., विडियो जोवे ते अंग उपांग ने,
नाच गान मां मस्त के धर्म ते ना गमे,
अग्यारमो अरति नामनो आवी ने भले,

सांभलवा सुं जईये कें सुणवा न भले (१३)

बोबड़ो साद ते गुरुनो खबर कांई ना पड़े,
मन्द आवाज छे गुरुनो काने ना पड़े,
बारमें अज्ञानी नामनो आव्यो छे वचे,
सूत्र सिध्दान्त नी वात ने अम्रने ना रुचे (१४)

घर थी ऊठ्यो भवियण सुणवा मन करे,
आव्यो चोक बजार कोई नाटक करे;
कुतूहल नामनो काठियों जावा ना दिये,
कुतूहल द्रष्टि थी जोतां ते समय हारी लिये, (१५)

इणविध तेरह ही काठिया आवी ने नड्या,
आतमराम ने घेरी घाली ने पड्या;
दश दृष्टान्ते दोहिलो नरभव पामीयो,
मोहमाया, मां गेलो थई ने गुमावीयो (१६)

अब तो चेतन चेत गुरुजी चेतावता,
नहिंतर फोगट नरक निगोद में जावता;
विरप्रभुनी सेव ते कर तुं भविजना,
मन वच काया पवित्र करी तुं एकमना (१७)

सूरिराजेन्द्रनी सीख ते सुणजो भाव थी,
वारंवार ते एवी घड़ी नहिं आवती,
सूरि यतीन्द्र को जयन्तसेन वधावीया,
सम्यग्रत्न ते गुरुवर शरणें आवीया (१८)

कलश

दोय हजार पिस्तालीशे, आहोर कार्तिक मास,
जयकीर्ति जयानन्दजी, सम्यग्रम् हरि वास,
घेवरचन्दजी आग्रहे, कीनो चातुरमास,
तेरह काठिया थी बचो, 'सम्यग्रत्न' लहो खास-

साहित्य स्वीकार

● **दिव्य संदेश (युवाचेतना विशेषांक) हिन्दी** - सम्पादक-मुनिश्री रत्नसेनविजयजी म. सा. प्रकाशक-मरुधर जैन नवयुवक मंडल, वर्ष-३ संयुक्तांक ३०-३१ जून-जुलाई १९९१, प्राप्तिस्थान - अशोककुमार रायचंद ५०/५२ मिर्जा स्ट्रीट चौथी मंजिल, बम्बई-3 मूल्य-25 रुपये, पृष्ठ/76

पश्चिमी भौतिकवाद की आंधी में आज की युवा पिढी सन्मार्ग से विचलित होकर शराब, अण्डे, धुम्रपान, जुगार, व्यभिचार, मांसाहार के शिकंजे में जकड़ती जा रही है। इन दुर्व्यसनों से युवावर्ग को बचाने हेतु विभिन्न विषयों पर दिशासूचक जानकारी इस विशेषांक में दी गयी है। लेखों का चयन सुंदर व विषयानुरुप है।

● **आचार्य कुन्द कुन्द: व्यक्तित्व एवं कृतित्व** - (हिन्दी) लेखक एवं सम्पादक - डॉ. कस्तूरचंद कासलीवाल, प्रकाशक-श्री एवं प्राप्तिस्थान श्री महावीर ग्रंथ अकादमी, जयपुर (राज.) मूल्य-20 रुपये, पृष्ठ-68

आचार्य कुन्दकुन्द के सम्पूर्ण जीवन एवं उनके सभी 23 मूल ग्रंथों एवं उन पर उपलब्ध 55 से भी अधिक संस्कृत एवं हिन्दी टीकाओं का समग्र अध्ययन।

● **दृष्टांत दर्पण (गुजराती)** - लेखक-मुनिश्री भुवनचंद्रजी, प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान अक्षरभारती प्रकाशन, 9 तुलसीधाम भालेश्वर नगर-भुज-370 001 मूल्य- ८ रुपये, पृष्ठ-64

छोटी-छोटी कथाओं द्वारा बहुत ही सुन्दर ढंग से जीवन में ज्ञान चारित्र एवं दर्शन की आवश्यकताओं का महत्व मूनिश्री ने दर्शाया है।

● **अंडे के बारे में १०० तथ्य - (हिन्दी)** सम्पादक-डॉ. नेमीचंद जैन प्रकाशन एवं प्राप्तिस्थान-तीर्थंकर शाकाहार प्रकोष्ठ, कनाड़िया रोड़ ६५ पत्रकार कॉलोनी, इन्दौर (म. प्र.) मूल्य-एक रुपया, पृष्ठ-32.

अंडे के विषय में एक सौ अकाट्य वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर डा. साहब द्वारा लिखी यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। यह पुस्तक पढने के बाद कोई अभागा ही अण्डे का सेवन कर सकता है। द्वि रंगी ऑफसेट मुद्रण में छपी यह पुस्तक मंगवाकर प्रचारार्थ बांटनी चाहिये। इस सुंदर प्रकाशन के लिये बहुत-बहुत बधाई।

● **रे कर्म तेरी गति न्यारी - (हिन्दी)** लेखक आचार्य श्री गुणरत्न सूरिजी म. सा., प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान आध्यात्मिक शिक्षा केन्द्र, खाडीलकर रोड़, बम्बई-४, आफसेट प्रिन्टींग चार रंगी मुखपृष्ठ, मूल्य १० रुपये, पृष्ठ-१९४.

जैनाचार्य श्री का कर्मवाद के विषय पर बहुत अच्छा अधिकार है। इनकी कृति पढ़कर जर्मनी से बर्लिन युनिवर्सिटी के प्रोफेसर क्लाउज ब्रुन ने प्रशंसा के पुष्प बरसाये हैं। प्रस्तुत पुस्तक में शिविर में कर्मवाद पर दिये गये प्रवचनों का संकलन है।

● **कहीं मुरझा न जाऐं - (हिन्दी)** लेखक, प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान-उपरोक्तानुसार; मूल्य १५ रुपये.

अज्ञानता, अहंकार या आवेश में किये गये पापकर्मो का नाश प्रायश्चित (आलोचना) से होता है। विविध उदाहरणों द्वारा आलोचना के महत्व को समझाकर इस ओर कदम बढाने की प्रेरणा दी गई है।

जिसके मन में है नवकार, उसको क्या करे संसार ?

– प. पू. साध्वीजीश्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी

"जिण सासणस्स सारो, चउदस पुव्वाण जो समुद्धारो ।
जस्स मणे नवकारो, संसारो तस्स किं कुणइ ॥"

श्री जिनशासन का सार तथा चौदह पूर्व का उद्धार रुप नवकार मन्त्र जिसके मन में है, उसका संसार क्या कर सकता है ? अर्थात् संसार के उपद्रव उसे किसी भी प्रकार की पीड़ा नहीं पहुँचा सकते हैं ।

नमस्कार महामन्त्र मंत्राधिराज है, सभी शास्त्रों में उसे प्रथम स्थान प्राप्त है । नवकार मंत्र में कहा गया है कि पंच परमेष्ठि नमस्कार सभी पापों का नाश करने वाला तथा सभी मंगलों का मूल है ।

ज्ञानियों ने असमाधि तथा अशान्ति को अदृश्य करने का सिद्ध शीघ्रगामी एवं अमोघ उपाय श्री नवकार मन्त्र उसके पदों तथा उसके प्रत्येक अक्षरों का अवलम्बन बताया है । नवकार के नौ पदों में और अड़सठ अक्षरों में मन गूंथ देना चाहिए, परन्तु अपना मन तो हिरण जैसा चंचल है । ज्यों-ज्यों मन को इस मन्त्र के साथ गूंथने का प्रयत्न करते हैं त्यों-त्यों यह दूर भागता जाता है । इस पर भी यदि प्रयत्न साधा जाए तो किसी न किसी दिन इस मन्त्र के अड़सठ अक्षरों में मन गूंथा जा सकता है ।

विधिपूर्वक उसके आश्रय लेनेवाले को श्री नवकार मन्त्र अपूर्व शक्ति प्रदान करता है । अनन्त कर्मों का नाश करता है साथ ही सद्धर्म तथा उसके परिणाम स्वरूप प्राप्त होते ही अनन्त सुखों का भागी बनता है । जिस तर बीज में से अंकुर, अंकुर में से वृक्ष एवं वृक्ष में से पत्र, पुष्प तथा फल स्वाभाविक रीति से ही उत्पन्न होते हैं ठीक उसी तरह पंच परमेष्ठि नमस्कार रूपी भाव बीज में से काल क्रम से सद्धर्म की, सद्धर्म श्रवण की, अनुष्ठानादिरूपी वृक्ष की तथा उसकी शाखा-प्रशाखाओं की सुदेव-मनुष्यों के सुख रूपी पत्रों की एवं फूलों के साथ ही सिद्धिगति के अक्षय सुखरूप, सदा अम्लान एवं परिपक्व मोक्षफल की प्राप्ति स्वयमेव होती है ।

श्री नमस्कार परम मन्त्र है, इतना ही नहीं यह परमशास्त्र है, महाशास्त्र है । **शास्त्रों में इसे "महाश्रुतस्कंध" नाम से संबोधित किया है ।**

श्री नवकार मन्त्र की महिमा अभूतपूर्व है । नमस्कार महामन्त्र को शुद्धभाव से गिनने वाले को सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है । नमस्कार महामन्त्र में महान शक्ति निहित है ।

भावभीना रंगे, मनड़ानो उमंगे, बोलो मानव बोलो - **महा मंगलमय नवकार**

महामंत्र ए महातन्त्र ए, महाश्रुतस्कन्ध ए नवकार ज्येष्ठ ज्ञान ए ज्येष्ठ ध्यान ए, चौद पूर्व नो ए छे सार जिन शासनमां अनुपम मंगल, आराधो नवकार - बोलो मानव - बोलो महा .....

नमस्कार महामंत्र का जितना वर्णन किया जाए उतना कम है । नमस्कार महामंत्र में चौदह पूर्वों का सार समाया हुआ है ।

चौदह पूर्व के ज्ञाता गीतार्थ (सूत्र अर्थ को जानने वाले) महाज्ञानी पुरूष आगम शास्त्र की दृष्टि से तत्व चिंतन मनन कर अपनी आत्मा को विकसित भाव में स्थापित करते हैं । फिर भी जब वे अनशन स्वीकारते हैं तब जीवन के अंतिम समय में केवल इस समय अचिन्त्य महिमाशाली महामंत्र नवकार का ही स्मरण करते हैं । क्योंकि आराधित यह प्रभाविक मन्त्र भवान्तर में 'नियमा' उर्ध्वगति प्रदान करता है । **नमस्कार महामन्त्र रूप नौका में बैठकर आत्मा निर्विघ्नरूप से संसार सागर पार उतर सकती है ।**

पार्श्वनाथ प्रभु अपने पूर्व के छठे भव में एक तपस्वी महामुनि थे । एक समय वन में कायोत्सर्ग ध्यान में थे इतने में वहाँ एक क्रुद्ध भील आ पहुँचा । उसके क्रोध का कारण था कि मुनि उसकी तरह शिकार नहीं करते थे । क्रोधावेश में उस भील ने ध्यानस्थ मुनि को बाण से बींध दिया । भील मरने के बाद मुनि हत्या के कारण सातवीं नरक में गया और नमस्कार महामन्त्र का जाप जपते हुए मुनिराज मृत्यु के पश्चात् देवलोक में देव बने । नमस्कार महामन्त्र का ऐसा साक्षात्कार करने के कारण पार्श्व प्रभु ने अंतिम भव में काष्ठाग्नि में जलते हुए सर्प के जीव को बचाया और नवकार मन्त्र सुनाकर धरणेन्द्र बनाया ।

जिस प्रकार मधु भ्रमर की अभिलाषा से दिनभर पुष्पों पर भटकता है और अन्त में एक पुष्प में ऐसा लीन हो जाता है कि उस पुष्प के मुकुलित होने पर भी मधुपान बन्द कर उड़ नहीं सकता है ठीक उसी प्रकार अपने मन भ्रमर को नमस्कार महामन्त्र के अक्षर रूपी पुष्पों पर यदि उड़ने दिया जाए तो निश्चित ही वह एकाध पद में स्थिर होकर सच्चे मकरन्द का आस्वाद कर सकेगा ।

पंच परमेष्ठियों में निहित ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप आदि गुण ही अपनी आत्मोन्नति के सच्चे साधन हैं और ये ही गुण अपने परम साध्य हैं ।

सर्व मंगलों में प्रथम मंगल, सर्व कल्याण का परम कारण, देव, दानव, और उत्तम पुरूषों का सदैव स्मरणीय महा महिमाशाली नमस्कार महामन्त्र यदि हमारे हृदय में सदैव रमण करता रहे तो हम शीघ्र ही आत्मस्वरूप को पहचान कर उसे प्राप्त कर सकते हैं ।

श्रद्धा सहित स्मरण करते हैं तो दुर्लभ मनुष्य भव को सफल बना सकते हैं ।

काया का भूषण परोपकार है;
मैत्री का भूषण सहकार है ।
भव से तारने वाला समर्थ;
महामन्त्र भूषण 'नवकार' है ॥

शाश्वत धर्म को सप्रेम भेंट......
501/- जावरा (म.प्र.) निवासी शांतिलाल, नवीनचंद्र, राजमल, सुरेन्द्र, सुरेश, नरेन्द्र, राजेन्द्र, जितेन्द्र, अंकित, अंकुर सुराणा परिवार द्वारा चि० महेन्द्रकुमार का शुभविवाह सौः कां. पुष्पादेवी के संग दि. 16.7.91 को सम्पन्न हुआ. इस निमित्ते सप्रेम भेंट
(फर्मः मधुकर जनरल स्टोर्स, 106 लक्ष्मीबाई मार्ग, जावरा (म.प्र.)

नवकारमन्त्र का प्रभाव

– प. पू. साध्वीश्री चारूदर्शनाजी

मंत्र वही है जिसमें शक्ति का संचय हो, स्मरण कर्ता भावपूर्वक श्रद्धा से मन्त्र का स्मरण कर उस अप्रकट शक्ति को सिद्ध करता है, दूसरे शब्दों में शाश्वत मोक्ष गति प्राप्त करने की जीव मात्र की इच्छा इसी महामन्त्र नवकार के द्वारा पूर्ण होती है।

मन्त्र छोटा-सा परन्तु इसका प्रभाव बड़ा है।

"नमो" यह नम्रता का प्रतीक है।

"नमो" यह राग-द्वेष और मोह को जीतने का मन्त्र है।

"नमो" यह देव-गुरु और धर्म की भक्ति का मन्त्र है।

"नमो" यह ज्ञान-दर्शन और चारित्र का मन्त्र है।

"नमो" यह मन-प्राण और इन्द्रिय को वश रखने का मन्त्र है।

"नमो" यह दुष्कृतगर्हा, सुकृतानुमोदना और शरण गमन का मन्त्र है।

"नमो" यह संसारोच्छेदक, कर्म का घातक और पाप का प्रतिपक्षी है।

नमस्कार मंत्र महाशत्रु तुल्य मिथ्यात्व मोह का नाश करता है और परम बंधुतुल्य सम्यक्त्व रत्न की प्राप्ति करता है। दुर्गतिरूप जेल को काट डालता है और सद्गति रूपी महल बना देता है। इसलिए यह अपना परम उपकारी मन्त्र है।

विवेकरूपी योग्यता के विकास के लिए और अविवेक रूपी अयोग्यता के विनाश के लिए परमेष्ठि नमस्कार अमोघ साधन है।

"चमत्कार से नमस्कार" यह लौकिक कहावत है परन्तु "नमस्कार से चमत्कार" यह लोकोत्तर सत्य है। नमस्कार यह साधना है। साधना के बिना यदि सिद्धि मिल जाती होती तो चार गति में परिभ्रमण ही नहीं करना पड़ता। सिद्धिगति यही साधना का फल है।

नवकार मंत्र के प्रभाव से फणीधर सर्प फूलमाला बन जाता है उसका साक्षात्कार श्रीमती के जीवन में देखने को मिलता है।

जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में अमरपुरी तुल्य पोतनपुर नामकी एक अद्वितीय रमणीय नगरी थी। इस नगरी में सुव्रत नामक एक श्रद्धा-संपन्न श्रेष्ठी रहते थे। उत्तम गुणोपेत श्रीमती नामकी सुपुत्री थी। श्रीमती के अनुपम रूप-सौंदर्य पर उसी नगरी का एक अन्य धर्मी युवक मोहित हो गया। उस युवक ने अपने माता-पिता के द्वारा सुव्रत श्रावक से श्रीमती के साथ विवाह की मांग प्रस्तुत की। मगर सुव्रत श्रेष्ठी ने स्पष्ट शब्दों में मना कर दिया कि "मैं अपनी पुत्री का विवाह अन्य धर्मी युवक के साथ करना नहीं चाहता।" श्रीमती के उपर ही अनुराग वाले युवक ने छल-कपट से जैन धर्म स्वीकार कर लिया और इस प्रकार का दिखावा

किया कि सुव्रत श्रेष्ठी भी प्रसन्न हो गये और श्रीमती की शादी उस युवक के साथ कर दी। श्रीमती अपनी ससुराल पहुँची। ससुराल में आकर गृहकार्य के साथ-साथ वह धार्मिक कृत्य भी उल्लास पूर्वक करने लगी। श्रीमती को जैन धर्म की आराधना करती देखकर सास तथा ननन्द ने विविध प्रकार से पीड़ा देना प्रारंभ कर दी, फिर भी श्रीमती किसी पर भी दुर्भाव न लाती हुई अपने कर्मों की ही निन्दा करती हुई सुचारू रूप से धर्माराधना करने लगी।

श्रीमती की जैनधर्म के प्रति अथाह रूचि देखकर उसका पति भी उससे द्वेष करने लगा और उसने अपनी माता तथा बहन के बहकावे में आकर निर्णय ले लिया कि श्रीमती को समाप्त कर दूसरी कन्या से विवाह कर लेना चाहिए।

एक बार गारूड़िकों (सपेरों) के पास में गुप्तरूप से महाभयंकर विषधर सर्प को मंगाकर एक घड़े में रखवाकर ऊपर से ढ़क्कन लगवा दिया। घड़े को अपने शयन कक्ष में लाकर रख दिया।

रात्रि को श्रीमती से उसके पति ने कहा - "प्रिये ! सामने कोने में रखे हुए घड़े में पुष्पमाला है अतः तू शीघ्र पुष्पमाला लाकर मेरे कण्ठ में पहना।"

विनीत और चतुर श्रीमती घड़े के पास गई। वहाँ जाकर स्वस्थ चित्त से महाप्रभाविक नमस्कार महामन्त्र का स्मरण किया।

"हजारों मन्त्रों शुं करशे, मारो नवकार बेली छे।
जगत रूढी ने शुं करशे, मारो नवकार बेली छे॥"

तत्पश्चात् घड़े के आवरण को दूर कर घड़े में दाहिना हाथ डाला। देखिए आप नवकार मन्त्र के प्रभाव से सर्प के स्थान पर अलौकिक सुगन्धवाली पुष्पमाला बन गई। पुष्पमाला लाकर श्रीमती ने अपने पतिदेव के कण्ठ में पहनायी।

अलौकिक पुष्पमाला को देखकर उसका पति आश्चर्यचकित हो गया। घड़े में जाँच करने पर ज्ञात हुआ कि उसमें सर्प नहीं था। सभी को पता चल गया कि यह नवकार का ही प्रभाव है। सभी लोगों के हृदय में धर्म के प्रति दृढ़ आस्था हो गयी क्योंकि विघ्न निवारक, वांछित दायक महामंगलकारी नमस्कार मन्त्र की महिमा का कोई पार नहीं है अन्यथा 'सांप' की 'माला' कैसे बनती ?

यह नवकार मन्त्र लोकोत्तर सुख के साथ-साथ लौकिक सुखों को भी देने में समर्थ है। यह बात अतिशयोक्ति नहीं, इसका विशेष अनुभव तो आराधना के द्वारा ही हो सकेगा।

शाश्वत धर्म को सप्रेम भेंट-....
111/- आचार्यश्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी के जावरा में चातुर्मास प्रवेश निमित्ते
-श्री नरेन्द्रकुमार मोतीलालजी धाड़ीवाल महिदपूर निवासी की ओर से सप्रेम भेंट।
100/-श्री पू. मुनिराज श्री दिव्यविजयजी आदि ठाणा के गुन्टुर में चातुर्मास निमित्ते
श्री श्वेता. जैन संघ, गुन्टुर द्वारा सप्रेम भेंट।

शब्द, मंत्र एवं मंत्रराज नवकार

– श्री सुरेन्द्र लोढा

उषा की लालिमा तथा संध्या के रंग अपनी अपनी शैली में जीवन की व्याख्याएं परिभाषित करते हैं। उषा की बिखरती रश्मियों की शैलशिखरों से स्पर्शित टकराहट के द्वारा छुईमुई-सा जीवन जन्म का संकेत प्राप्त करता है। उदय होना जन्म है। संध्या के ढलते, उतरते, अस्त होते रंग मृत्युभाव को स्पष्ट करते हैं। जन्म तथा मृत्यु इन दो अटल सत्यबिन्दुओं ने भव (जीवन) की सीमा निश्चित करने का प्रयास किया है लेकिन जैन संस्कृति जन्म तथा मृत्यु के मध्य कोई भेदरेखा स्थापित नहीं करती। ऐसी भेदरेखा को स्वीकारना विकृति है जबकि इस भेदरेखा को नकारना संस्कृति है। जैन संस्कृति के अनुसार यदि जन्म उपलब्धियों का उत्सव है तो मृत्यु मंगलमय महोत्सव है। जन्म तथा मृत्यु केवल परिवर्तन हैं, संसरण के निमित्त हैं, भवयात्रा के माध्यम हैं। जो मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की क्षमता से भरपुर है, उसी को जन्म के आनन्द की अनुभूति करने का अधिकार है। न जन्म और न मृत्यु - दोनों ही आध्यात्मिक पड़ाव के निर्णायक ठहराव नहीं हैं। आध्यात्म अन्तर का अन्वेषण करता है, यह जीवन को छूता है एवं उसकी भावी रेखाओं का निर्माण करता है। **अन्तर के नाद की ध्वनि शब्दों पर आधारित है।** शब्द ही साधना, सिद्धि तथा उपलब्धि हैं।

शब्द जीवन का एदम्पर्य हैं। शब्दों में शक्ति अन्तर्निहित हैं, ये स्वयं शक्ति हैं। शब्दों की छैनियां चिन्तन को आकार देती हैं, शब्द चिन्तन को मूर्त रूप में तराशते हैं। जीवन शब्दों का आभारी है। **शब्दों की ऊर्जा नकारात्मक एवं सकारात्मक दोनों दिशाओं में बहने की आदी हैं।** नकारात्मक दिशा में प्रवृत्त होकर वे जीवन में विवादों से लेकर विनाश तक की स्थिति उत्पन्न कर देते हैं। शब्द ही सभी झगड़े टंटों के मूल बन जाते हैं। वे दावानल तक भड़काने में सक्षम है। व्यक्ति का अन्तर्मन शब्दों के माध्यम से आंदोलित होता है एवं प्रभाव उपस्थित करता है। शब्दों की उग्रता अग्नि बिन्दुओं से भी अधिक ज्वलनशील है। अग्नि को बुझाए जाने के उपक्रम हैं किंतु शब्दों को शान्त करने में शताब्दियां खप जाती हैं। महाभारत का युद्ध शब्दों का परिणाम था। पीढियां अपनी विरासत में उत्तराधिकारियों को शब्दों की पूंजी हस्तांतरित करके जाती हैं। दूसरी ओर सकारात्मक दिशा ग्रहण करके शब्द युग के निर्माता, नियामक एवं नियंत्रक बन जाते हैं। श्रेष्ठ शब्दों से प्रमोद, प्रसन्नता एवं प्रफुल्लता की उत्ताल तरंगे हिल्लोर खाने लगती हैं। जीवन के किनारों तक को उपयोगी शब्द अपनी शक्ति से थपेड़े मार कर शकल बदल देते हैं। जीवन का महासागर शब्दों का ठहाका बारंबार लगाता है तथा अपनी उपस्थिति को दर्ज करता है। शब्दों की विनम्रता जीवन के लिए सुधाकलश की भांति है। शब्द की आंतरिक शक्तियों का उद्दीप्त रूप मंत्रो है। मंत्रो के रूप में शब्द निरंतर ध्वनि प्राप्त करते हैं। वायुमंडल में प्रसारित होकर वे अभिव्यक्ति को विकल्प देते हैं। शब्दों का वर्ण मंत्र है। वह इच्छाशक्ति का रूप है। **मंत्र की साधना व्यक्ति के लिए विकारी चिन्तन से मुक्त होने का प्रयास है। मंत्रों के माध्यम से वह अपनी सुप्त चेतना को जाग्रत करता है।** मंत्रों की

श्रेणी में पवित्र साधनाओं से सिद्ध तथा प्रतिबद्ध मंत्र विश्व के लिए कल्याणकारी, उपकारी तथा मैत्रीकारी बनते हैं। अक्षरों का समूह शब्द एवं शब्दों का संप्रेषण मंत्र, व्यक्ति के लिए हर दृष्टि से सम्बल, संतोष तथा सांत्वना के परिचायक होते हैं। मंत्र का सम्बन्ध केवल योग अथवा साधना तक ही सीमीत नहीं है। सामान्य व्यक्ति के लिए भी उसका समान महत्त्व है। सामान्य व्यक्ति उसकी प्राप्ति कर जीवन की भूमिकाओं में उसकी सार्थकता के अनुभूत कर सकता है। दर्शन व चिन्तन की कसौटी पर मंत्र सामग्री देता है एवं जीवन के धरातल पर वह व्यक्ति के लिए आत्मबल का सम्बल बनता है। वे शब्द जो व्यक्ति की रक्षा करते है, इसी कारण मंत्र हैं। 'मननात् त्रायते, यस्मात् तस्यान्मन्त्र प्रकीर्तितः' मनन करने से जो अक्षर अपनी रक्षा करते है, उन अक्षरों को इस कारण से मंत्र कहा जाता है।

जैन संस्कृति में मंत्रों में सर्वोपरी, सर्वेश्रेष्ठ, सर्वाधिक प्रभावशाली नवकार मंत्र मान्य है। अड़सठ अक्षरों से मंडित, आठ-सम्पदाओं व नव पदों से युक्त नमस्कार महामंत्र अपने आप में बीज अक्षर 'ॐ' को समाहित किए हुए है। अरिहंत, मुक्त (सिद्ध), आचार्य, उपाध्याय तथा मुनि (साधु) के प्रतिकात्मक प्रथम अक्षर अ + म + आ + उ + म = ॐ का निर्माण करते हैं। पंच परमेष्ठि स्वरूप का सूक्ष्म रूप ॐ है, इसका स्थूल व्यवहार 'असियाउसाय नमः' है, 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः' इसका लघु संस्करण है एवं नमस्कार मंत्र विराट् स्वरूप है। विराट से विराट की प्राप्ति, विराट से विराट की उत्पत्ति, विराट् से विराट् का दर्शन मनोविज्ञान का सिद्धान्त हैं। **नवकार मंत्र का प्रत्येक शब्द जैन दर्शन के रहस्य से लबालब समृद्ध है**। 'समरो मंत्र भलो नवकार, ए छे चौदह पूरब नो सार', नवकार मंत्र चौदह पूर्व ज्ञान के भंडार के रूप में उल्लेखित किया गया है। जैन व्यवहार में बालक को जन्मघुट्टी के साथ नवकार मंत्र का पाठ दिया जाता है। प्रत्येक जैन बालक चाहे वह आचारशील श्रद्धासम्पन्न हो अथवा धर्मविहीत, नवकार मंत्र को कंठस्थ करने से ही अपने जीवन व्यवहारों को प्रारंभ करता है। **नवकार मंत्र में सम्पूर्ण जैन तत्त्वज्ञान, दर्शन तथा आचार विचार समाया हुआ है**। 'नमो अरिहंताणं' से हुए प्रारंभ व 'हवई मंगलम्' के साथ हुइ सम्पूर्ति में शब्द, तत्त्व, अर्थ तथा स्वरूप की दृष्टि से परिपूर्णता है। पंच परमेष्ठि इसके केन्द्र पर हैं एवं उन्हें नमस्कार का समर्पित, श्रद्धान्वित भाव इसके चार पदों से बना वर्तुल है। धार्मिक दृष्टि से इसका प्रत्येक अक्षर पवित्र, पापों का नाश करनेवाला, चिन्तामणी रूप अचिन्त्य प्रभाव का प्रदेता एवं शाश्वत सुखों की ओर अग्रसर करनेवाला है। सभी मंत्रों का सार, रहस्य तथा हार्द इसे माना जाता है।

नमस्कार मंत्र का प्रारंभ 'नमो' शब्द से हुआ है। नमो का भाव साधक की विनयशीलता के लिए है। विनय तथा कृतज्ञता की भूमि तैयार किए बिना कुछ भी प्राप्त करना संभव नहीं है। अपने द्वारा किए गए उपकारों का विस्मरण तथा दूसरों के द्वारा कृत उपकारों का सतत् स्मरण कृतज्ञता है। कृतज्ञता नम्रता का प्रेरक है। इसमे अहंकार का नाश होता है। अहं का विलोप हुए बिना कभी भी अर्हं नहीं बना जा सकता। नमो शब्द धर्म की ओर कदम है। आचार्य हरिभद्रसूरि के अनुसार 'धर्म प्रति मूल भूता वंदना' धर्म के प्रति ले जानेवाली मूलभूत वस्तु वन्दना है। यही विनय का बीज है एवं शास्त्रों की दृष्टि में मोक्ष का फल है। 'नमो' के द्वारा साधक नमन की भंगिमा ग्रहण कर धर्म की प्राप्ति करता है।

नमस्कार महामंत्र के प्रथम पांच पदों का निर्माण नमन के लिए है । **अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय तथा साधु-ये जैन संस्कृति के आराध्य पंच परमेष्ठि हैं** । इन पांच पदों को एक चिन्तक ने पंच तीर्थों के रूप में परिकल्पित किया है । पांच नमों के प्रथम अक्षरों से वे पंच तीर्थों की अवधारणा करते हैं एवं स्पष्ट करते हैं कि अरिहंत के अ से अष्टापद, सिद्ध के सि से सिद्धाचल, आचार्य के आ से आबू, उपाध्याय के उ से उज्जन्त याने गिरनार एवं साधु के स से सम्मेतशिखर । (इस अवधारणा का कोई शास्त्रोक्त महत्व नहीं है, श्रद्धा से किया गया निरूपण है - लेखक) । पंच परमेष्ठि की उपासना जैन संस्कृति का रहस्य है। ये सभी व्यक्तिवाचक न होते हुए पद वाचक हैं, आराधक के जीवन का समुच्चय हैं । अरिहंत तथा सिद्ध देवतत्त्व एवं आचार्य, उपाध्याय व मुनि गुरु तत्त्व माने गये हैं । देवतत्त्व आत्मा की सर्वोत्कृष्ट स्थिति सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, निरंजन, निराकार या वैदिक दर्शन के अनुसार ज्योति स्वरूप, परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति से उपार्जित पद है । अरिहंत का उपकार उनके सार्थक उपदेशों के रूप में एवं सिद्धों का उपकार अव्यवहार राशि से व्यवहार राशि में आगमन का स्थान रिक्त करने के लिए हम पर है । अरिहंत, तीर्थंकर अथवा जिनेश्वर धर्मतीर्थ की स्थापना करते हैं । अष्ट प्रातिहार्यों से युक्त, वचन के पैंत्तीस अतिशयों से सुशोभित, बारह गुणों के धारक अरिहंत हमारी आराधना के चरम बिन्दु पर स्थित हैं । सिद्ध आठ गुणों से पहचाने जाते हैं एवं जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य शिखर हैं । गुरूतत्त्वों में आचार्य पंच इंद्रियों के विषयों के नियंत्रक, नौ प्रकार के ब्रह्मचर्य के धारक, क्रोध-मान-माया-लोभ चारों कषायों से विरत, पंच महाव्रत से युक्त, पांच प्रकार के आचार, पांच प्रकार की समिति तथा तीन प्रकार की गुप्ति के पालक हैं । 'शासनपति की आज्ञा में ही चलते सुविचारं, गच्छपतिगणधारी, ॐ नमो आयरियाणं' – जयन्तसेनसूरि 'मधुकर' की यह पंक्ति आचार्यों के गच्छसम्राट होने का वीरदर्शन करवाती है । सामान्य बोलचाल की भाषा में वे तीर्थंकर देवों के मौज़ूदा प्रतिनिधि हैं । पच्चीस गुणों से अलंकृत उपाध्याय श्रुत के जीवन्त ज्योतिर्मय रूप हैं । स्वपरिणाम जिनमें विशुद्ध क्रियाओं से प्रकट होता है, ऐसे साधु सत्तावीस गुणों से जुड़े हुए हैं । इन पांचों को किया हुआ नमस्कार पाप विनाशक है । सर्वश्रेष्ठ नमन है । **नमस्कार का पात्र भी परमश्रेष्ठ होना अनिवार्य है** । इनके अतिरिक्त अन्य किसी को आध्यात्मिक आराध्य के रूप में प्रतिष्ठित करना सही नहीं है । सम्यक् नमस्कार को पिछले चार पदों में सर्व पापों का नाश करने वाला तथा सभी मंगलों में प्रथम मंगल के रूप में उल्लेखित किया गया है । इन मंगलों की प्राप्ति जीवन की दिशा है ।

जीवन में मुट्ठीभर उजास भी आराधना के द्वारा ही आता है । **नवकार मंत्र आराधकों के लिए ध्रुवतारे की तरह है जो उनके जीवन को हर उंचाई देने में सिद्ध है ।** ॐ

छुपते-छुपते......
भीनमाल— मुनिराज श्री भुवनविजयजी, जयानंदविजयजी आदि ठाणा ५ यहाँ चातुर्मास विराजमान हैं। व्याख्यान में अभिधान राजेन्द्र कोष में श्रावक व धन्यकुमार चरित्र पर प्रवचन में अच्छी संख्या में लोग लाभ ले रहे हैं।

धारावाहिक -

।। 卐 ।। आचाराङ्ग की सूक्तियाँ (२) ।। 卐 ।।

संकलन-श्री पुखराज भण्डारी

(१४) 'जे गुणे से मूलट्ठाणे, जे मूलट्ठाणे से गुणे।। १-२-१-६३ ।।'

● जो गुण (विषय) हैं, वह कषायरूप संसार का मूलस्थान है। जो मूलस्थान है, वह गुण है।

(१५) 'णा लं तव ताणाए वा सरणाए वा, तुमं पि तेसिं णालं ताणाए वा सरणाए वा।।। १-२-१-६४।। तथा।। १-२-१-६७।।'

● हे पुरुष! तेरे स्वजन तेरी रक्षा करने में या तुझे शरण देने में समर्थ नहीं हैं। तू भी उन्हें त्राण या शरण देने में समर्थ नहीं है।

(१६) 'वओ अच्चेति जोवणंच।। १-२-१-६५।।'

● वय (बाल्यकाल आदि अवस्थाएँ) बीत रही है। यौवन चला जा रहा है।

(१७) 'जाणित्तु दुक्ख पत्ते य सातं। अणभिक्कंतं च खलुवयं संपेहाए खणं जाणाहि पंडिते।। १-२-१-६८।।'

'इणमेव खणं वियाणिया।। सूत्रकृतांग-१-२-३-१९।।'

● प्रत्येक प्राणी का सुख दुःख अपना है, यह जानकर आत्मदृष्टा बने। जो अवस्था (यौवन और शक्ति) अभी बीती नहीं है, उसे देखकर हे पंडित **क्षण** (अवसर) को जान।

(१८) 'अरतिं आवट्टे से मेधावी खणंसि मुक्के।। १-२-२-६९।।'

● जो अरति से निवृत्त होता है, वह बुद्धिमान है। वह मेधावी विषयतृष्णा से क्षण भर में मुक्त हो जाता है।

(१९) एत्थ मोहे पुणो पुणो सण्णा णो हव्वाए णो पाराए।। १-२-२-७०।।'

● आसक्ति में फँसे व्यक्ति मोह में बारबार निमग्न होते जाते हैं। इस दशा में वे न तो इस तीर पर (गृहस्थ) ही रह पाते हैं, न उस पार (श्रमण) जा सकते हैं।

उभयभ्रष्टो न गृहस्थो नाऽपि प्रवजितः।'

(२०) 'विमुक्का हु ते जणा पारगामिणो, लोभमलोभेण दुगंछमाणे लद्धे कामे णाभिगाहति।।१-२-२-७१।।'

● जो विषयों के दलदल से पार (-गामी) होते हैं, वे वास्तव में विमुक्त हैं (संतोष)-अलोभ से लोभ को पराजित करता हुआ साधक कामभोग प्राप्त होने पर भी उसका सेवन नहीं करता।

(२१) 'एस मग्गे आरिएहिं पवेदिते, जहेत्थ कुसले णोवलिंपेज्जासि-त्तिबेमि।।। १-२-२-७४।।'

● यह मार्ग आर्य पुरुषों (तीर्थंकरों) ने बताया है। कुशल पुरुष हिंसादि विषयों में लिप्त न हो - ऐसा मैं कहता हूँ।

(२२) 'से असइं उच्चागोए, असइं णीयागोए। णो हीणे णो अतिरित्ते। णो

पीहए।। १-२-३-७५ ।।'

● यह आत्मा अनेक बार उच्च गौत्र और अनेक बार नीच गोत्र प्राप्त कर चुका है। इसलिए यहाँ न तो कोई हीन/नीच है, न कोई विशेष/उच्च (अतिरिक्त) है। इसलिए साधक उच्च गोत्र की स्पृहा, वांछा, आसक्ति व गर्व न करे।

'**उत्तराध्ययन**' भी कहता है :-

'न सा जाई, न सा जोणि, न तं ठाणं, न तं कुलं।
जत्थ न जाओ मओ वावि, एस जीवो अणंतसो।।'

(२३) 'भूतेहिं जाण पडिलेह सातं। समिते एयाणुपुस्सी।। १-२-३-७६ ।।'

● प्रत्येक जीव को सुख प्रिय है, यह तू देख! इस पर सूक्ष्मतापूर्वक विचार कर। जो **समित** (समदृष्टि) है, वह जीवों के इष्ट-अनिष्ट कर्म के विपाक को देखता है।

(२४) 'इणमेव णावकंखंति जे जणा धुवचारिणो।
जातीमरणं परिण्णाय चरे संकमणे दढे।। १-२-३-७७ ।।'

● जो पुरुष ध्रुवचारी-अर्थात् शाश्वत सुखकेन्द्र (मोक्ष) की ओर गतिशील होते हैं, वे ऐसा विपर्यासपूर्ण जीवन नहीं चाहते। वे जन्म मरण के चक्र को जानकर दृढ़तापूर्वक मोक्ष के पथ पर बढ़ते रहे।

(२५) 'णत्थि कालस्सणागमो।। १-२-३-७८ ।।'

● काल का अनागमन नहीं है। मृत्यु किसी भी क्षण आ सकती है।

(२६)'सव्वे पाणा पिआउया सुहसाता दुक्खपडिकूला अप्पियवधा पियजीविणो जीवितुकामा। सव्वेसिं जीवितं पियं।। १-२-३-७८ ।।'

● सब जीवों को आयुष्य प्रिय है। सभी सुख का स्वाद चाहते हैं। दुःख से घबराते हैं। उनको वध (मृत्यु) अप्रिय है, जीवन प्रिय है। वे जीवित रहना चाहते हैं। सबको जीवन प्रिय है।

(२७) 'मुणिणा हु एतं पवेदितं। अणोहंतरा एते, णो य ओहं तरित्तए। अतीरंगमा एते, णो य तीरं गमितए। अपारंगमा एते, णो य पारं गमित्तेए। आयाणिज्ज च आदाय तम्मि ठाणे ण चिट्ठति। वितहंपप्प खेत्तण्णे तम्मि ठाणाम्मि चिट्ठति।।१-२-३-७९ ।।'

● भगवान् ने यह बताया है - जो क्रूरकर्म करता है, वह मूढ़ होता है। मूढ़ मनुष्य सुख की खोज में बार बार दुःख प्राप्त करता है। वे मूढ़ मनुष्य **अनोद्यंतर** (संसार प्रवाह को तैरने में असमर्थ) हैं. **अतीरंगम** (किनारे तक पहुँचने में असमर्थ) हैं, **अपारंगम** (संसार के पार-निर्वाण तक पहुँचने में असमर्थ) है। वह मूढ़ **आदानीय** (सत्यमार्ग) को प्राप्त करके भी उस स्थान में स्थित नहीं हो पाता। अपनी मूढ़तावश वह उन्मार्ग को प्राप्त कर उसी में ठहर जाता है।

(२८) 'उद्देसो पासगस्स नत्थि।। १-२-३-८० ।।'

● जो **दृष्टा** (सत्यदर्शी) है, उसके लिए उपदेश की आवश्यकता नहीं है।

(२९) 'जाणित्तु दुक्खं पत्तेय सायं।।१-२-४-८२ ।।'

● दुःख और सुख प्रत्येक आत्मा का अपना अपना है, यह जानकर इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करें।

(३०) 'आसं च छंदं च विगिं च धीरे। तुमं चेव तं सल्लमाहट्टु।।१-२-४-८३।।'

● हे धीर पुरुष! तू आशा और स्वच्छन्दता का त्याग कर दे। उस भोगेच्छारूप शल्य का सृजन स्वयं तूने ही किया है।

(३१) 'जेणसिया तेण णो सिया। इणमेव णा व बुज्झंति जे जणा मोहपाउडा।। १-२-४-८३'।।

● जिस सामग्री से तुझे सुख होता है, उससे सुख नहीं भी होता है (भोग के बाद दुःख है)। जो मनुष्य मोह की सघनता से आवृत्त हैं, ढँके हैं वे इस तथ्य को (-पौद्गलिक साधन क्षणभंगुर हैं) नहीं जानते।

(३२) 'थीभि लोए पव्वहिते। ते भो! वदंति एयाइं आयतणाइं। से दुक्खाए मोहाए माराए णरगाए नरगतिरिक्खाए। सततं मूढे धम्मं णाभिजाणति।।१-२-४-८४।।'

● यह संसार स्त्रियों द्वारा पराजित (पीड़ित) है। हे पुरुष! वे पराजित जन कहते हैं कि स्त्रियाँ आयतन (भोग की सामग्री) हैं। किन्तु उनका कथन (धारणा) दुःख के लिए एवं मोह, मृत्यु, नरक तथा नरकतिर्यंचगति के लिए होता है। सतत् मूढ़ रहने वाला व्यक्ति धर्म को नहीं जान पाता।

(३३) 'उदाहु वीरे-अप्पमादो महामोहे, अलं कुसलस्स पमादेणं, संतिमरणं सपेहाए, भेउरधम्मं सपेहाए। णालं पास! अलं ते एतेहिं। एतं पास मुणि! महब्भयं। णातिवातेज्ज कंचणं।।१-२-४-८५।।'

● भगवान महावीर ने कहा है - महामोह (विषय-स्त्रियों) में अप्रमत्त रहे। बुद्धिमान पुरुष को प्रमाद से बचना चाहिए। शांति (मोक्ष) और मरण को देखनेवाला, संसार को **भंगुरधर्मा** (नाशवान) है, यह देखनेवाला प्रमाद न करे। ये भोग अतृप्ति की प्यास बुझाने में असमर्थ हैं। यह देख! तुझे इन भोगों से क्या प्रयोजन है? हे मुनि! यह देख, ये भोग महान् भयरूप है। भोगों के लिए किसी प्राणी की हिंसा न कर।

(३४) 'एस वीरे पसंसिते जेण णिविज्जति आदाणाए।। १-२-४-८६।।'

● वह वीर प्रशंसनीय होता है, जो संयम से उद्विग्न नहीं होता। सदा संयम में लीन रहता है।

(३५) 'सव्वामगंधं परिण्णाय णिरामगंधे परिव्वए। से भिक्खू कालण्णे बालण्णे मातण्णे खेयण्णे खणयण्णे विणयण्णे समयण्णे भावण्णे परिग्गहं अममायमाणे कालेणुट्ठाई अपडिण्णे। दुहतो छित्ता णियाइ।। १-२-५-८७।।'

● वह अणगार सब प्रकार के **आमगंध** (आधाकर्मादि दोषयुक्त आहार) का परिवर्जन करता हुआ निर्दोष भोजन के लिए परिव्रजन करे। वह भिक्षुकालज्ञ है, बलज्ञ है, मात्रज्ञ है, क्षेत्रज्ञ है, क्षणज्ञ है. विनयज्ञ है, समयज्ञ है, भावज्ञ है। परिग्रह पर ममता नहीं रखनेवाला, उचित समय पर उचित कार्य करने वाला अप्रतिज्ञ व अनासक्त है।

(३६) 'परिग्गाहाओ अप्पाणं अवसक्केजा।।१-२-५-८९।।'

● साधक परिग्रह से स्वयं को दूर रखे। परिग्रह का वर्जन करे।

क्रमशः

ज्ञान कसौटी-८

~ संकलन. महेन्द्र. जे. संघवी (थाने)

(स्वाध्यायी पाठक निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर पहले क्रमशः कागज पर लिखें, फिर इसी अंक में पृष्ठ १० पर दिये गये उत्तरों से मिलान करें — संपादक)

(१७६) श्री नमिनाथ व श्री अरिष्ट नेमिनाथ भगवान के अन्तर का काल कितना था?

(१७७) श्री कृष्ण के बड़े भाई बलदेव जी ने दीक्षा कब ली व कितने वर्षो तक संयम पाला?

(१७८) शुक्ल ध्यान के कितने भेद है?

(१७९) पाँचवे आरे में शुक्ल ध्यान हो सकता है या नहीं?

(१८०) आत्मा मुक्त होने के पश्चात कहाँ जाता है?

(१८१) लोकाग्र भाग (लोक का उपरी भाग) यहाँ से कितना दूर है? एवं चौड़ाई में कितना है?

(१८२) सिध्द शिला लोकाग्र भाग से कितनी नीची है ?

(१८३) सिध्द शिला की लंबाई चौडाई कितनी है एवं वह किस आकृति में है ?

(१८४) सूक्ष्म निगोद वाले जीवों का उत्कृष्ट तथा जघन्यायुष्य कितना है ?

(१८५) जघन्य अंतर्मुहूर्त का समय कितना है ?

(१८६) उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त का समय कितना है ?

(१८७) बादर निगोद जीवों का उत्कृष्ट तथा जघन्यायुष्य कितना है ?

(१८८) बादर पृथ्वीकाय का उत्कृष्ट एवं जघन्यायुष्य कितना है ?

(१८९) स्वाध्याय कितने प्रकार के होते है तथा कौन से हैं

(१९०) जिसमें पूरण गलन संभव हो उसे क्या कहते हैं ?

(१९१) अभिग्रह से क्या समझते हैं ?

(१९२) 'उपधि' याने क्या ?

(१९३) 'अणाहारी' से क्या तात्पर्य है ? क्या ऐसे पदार्थों को पच्चक्खाण में ले सकते हैं?

(१९४) तीर्थंकरों के विशिष्ट गुणों को क्या कहा जाता है?

(१९५) जीव हिंसा से बचकर, संभलकर कार्य करने को क्या कहा जाता है?

(१९६) 'कालावधि से धर्म में आयी शिथिलता को दूर कर पुनः शुद्ध आचार का प्रवर्तन' याने क्या?

(१९७) देव, गुरू, धर्म के विषय में अनुचित वर्तन को क्या कहा जाता है?

(१९८) अन्य का गुण या सुख देखकर खुश होना कौन सी भावना है?

(१९९) मन के परिणाम को क्या कहते हैं?

(२००) जब हम गुरू के पास सूत्र एवं अर्थ का ज्ञान ग्रहण करते हैं तो उसे क्या कहा जाता है?

णमोकार मंत्र साहित्य

-संकलन श्रीमती गीता जैन

[यहाँ नवकार मंत्र से संबंधित प्रकाशित साहित्य की सूची दी जा रही है, ताकि पाठक एवं जिज्ञासु इस संबंध में पुस्तकें प्राप्त कर अधिक जानकारी उपलब्ध कर सकें। यहाँ यह कहना भी प्रासंगिक होगा कि नवकार के विषय में और भी काफी साहित्य प्रकाशित हुआ है, किन्तु जो साहित्य मुझे "पर्व-प्रज्ञा" नवकार अंक (१९९०) के संपादन के दौरान उपलब्ध हो सका अथवा जानकारी प्राप्त हो सकी, उनकी जानकारी दी जा रही है। यदि आपके पास इसके अलावा और जानकारी हों तो, कृपया मुझे भेजकर अनुगृहीत करें - गीता जैन]

(१) **अचिंत्य चिंतामणि नवकार:** गुजराती;मुनि अमरेंद्र विजय;गुर्जर ग्रंथरत्न कार्यालय,गांधी मार्ग, अहमदाबाद.- ३८० ००१. पृष्ठ ५८;- रु. १.५०; १९७६ चौथी आवृत्ति।

(२) **अपूर्व नमस्कार** :हिन्दी; मफतलाल संघवी; गुजराती से अनुवाद चांदमल सीपाणी; श्री जिनदत्त सूरि मण्डल, दादावाड़ी; अजमेर; पृ. १७०; रु. ४.५०; १९७९; प्रथम आवृत्ति।

(३) **एसो पंच णमोक्कारो** : हिन्दी; युवाचार्य महाप्रज्ञ (मुनि नथमल); आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन, चूरु (राजस्थान); पृ.१३४; रू. ६.००; १९७९; प्रथम संस्करण।

(४) **कैन्सर डीसलेप्ड बाय डीवाइन ग्रेस** : अंग्रेजी; मुनि अमरेंद्र विजय; आत्मज्योत प्रकाशन, वी. के. वोरा मेमोरियल चेरीटेबल ट्रस्ट, ८/१, अेम. के. लेन, मदुराई. - ६२५ ००१.

(५) **जैना नमोकारा** : अंग्रेजी; के. सी. ललवानी; कमला ललवानी, प्रज्ञानम, १२ डफ स्ट्रीट, कलकत्ता - ७०० ००६; पृ. १४; रु. १.००।

(६) **णमोकार मन्त्र और आत्मविकास की सीढीयाँ** : हिन्दी; पं. सरनाराम जैन; अ. भा. दि. जैन शास्त्री परिषद; बडौत(मेरठ); पृ. ४०; १९६९

७) **णमोकार मन्त्र कल्प** : हिन्दी; आचार्य देशभूषण, जैन मित्र मण्डल, धर्मपुरा-दिल्ली. पृ. १३२; १९६३।

(८) **णमोकार मन्त्र का अर्थ** : हिन्दी; हकीम ज्ञानचंद जैनी मालिक - दि. जैन धर्म पुस्तकालय, लाहौर; पृ. ४४; १९१३।

(९) **णमोकार ग्रंथ** : हिन्दी; आचार्य देशभूषण; लाला धर्मचन्द जैन कागजी धर्मपुरा, दिल्ली. प्राप्ति-स्थान : व्यवस्थापक आचार्य देशभूषण मुनि संघ, कूंचा बुलाकी बेगम, एस्प्लेनेड रोड. दिल्ली. ११० ००६; पृ. ५२४; रु. २५.००; १९०२; प्रथम संस्करण।

(१०) **णमोकार मन्त्र महात्म्य** : हिन्दी; आचार्य उमास्वामी, संस्कृत से अनुवाद लक्ष्मीदेवी जैन; वा. धरणेंद्रप्रसाद जैन; नेमचन्द जैन, वाराणसी; पृ. १६; १९५९।

(११) **णमोकार महामन्त्र** : हिन्दी रुपान्तर (पद्य); कल्याणकुमार जैन 'शशि';

शिखरचन्द जैन, अधिशासी अभियन्ता सा.नि.वि, रामपुर (उ.प्र.); पृ. ९।

(१२) **णमोक्कार अणुप्पेहा(नमस्कार मन्त्र पर चिन्तन)** : प्राकृत और हिन्दी; प्रर्वतक श्री उमेश मुनिजी "अणु"; पू. श्री. नन्दाचार्य साहित्य समिती, मेघनगर, जिला-झाबुआ(म.प्र.) ४५७ ७७९

(१३) **द जैना प्रेयर** : अंग्रेजी; हरिसत्य भट्टाचार्य; कलकत्ता युनिवर्सिटी, कलकत्ता; पृ. १३६; रु. ५.००; (१९६४)।

(१४) **नमस्कार गीत-गंगा** : गुजराती; मुनि भद्रगुप्तविजय (प्रियदर्शन) श्री. विश्व कल्याण प्रकाशन ट्रस्ट महेसाणा (गुजरात)।

(१५) **नमस्कार रस-गंगा** : (क्रम १४ अनुसार)

(१६) **नमस्कार चिंतन** : गुजराती; आ. यशोविजय; जैन साहित्य प्रकाशन मन्दिर; लधाभाई गणपतभाई बिल्डिंग; चींच बन्दर, बम्बई - ४०० ००९; पृ. २४; १९६७।

(१७) **नमस्कार चित्रावली** :(क्रम १६ अनुसार)

(१८) **नमस्कार चिन्तामणी** :हिन्दी; कुन्द-कुन्द विजय, श्री जिनदत्तसुरि मण्डल, दादावाड़ी, अजमेर; पृ. १५७; रु २.५०; १९६९।

(१९) **नमस्कार दोहन** :गुजराती; पं. भद्रंकर विजय गणि; श्री महावीर तत्वज्ञान प्रचारक मंडल, श्रीवासु पूज्य स्वामी जिनालय, संजान-कच्छ, गुजरात; पृ.४८ रु.०.५०, १९५९।

(२०) **नमस्कार निष्ठानी साधना** : गुजराती मफतलाल संघवी; पृष्ठ-१०

(२१) **नमस्कार मन्त्र एक विश्लेषण** :हिन्दी; फूलचन्द 'श्रमण'; आचार्य आत्माराम जैन प्रकाशन समिति, जैन स्थानक, लुधियाना; पृ. १७६; रु ३-००।

(२२) **नमस्कार मन्त्र सिद्धि** : गुजराती; पं. धीरजलाल शहा; जैन साहित्य प्रकाशन समिती, लधाभाई गणपत बिल्डिंग, चींच बंदर, बम्बई- ४००००१ पृ. ४२०;रू. ६.००; (१९६७)।

(२३) **नमस्कार महात्म्य** : प्राकृत-संस्कृत; देवेन्द्रसूरीश्वर; पृ.५४; (१९३७)

(२४) **नमस्कार महात्म्य** : गुजराती; देवेन्द्रसूरीश्वर ; श्री जैनधर्म प्रसारक सभा, भावनगर; पृ. ४८; (१९२२)

(२५) **नमस्कार मन्त्र महात्म्य** : हिन्दी; पं. काशीनाथ जैन; आदिनाथ हिन्दी जैन साहित्य माला, बम्बोरा- उदयपुर; पृ.४४; रू. १.००; (१९६८)

(२६) **नमस्कार महामन्त्र** : हिन्दी; पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री ; भा. दि. जैन संघ, चौरासी- मथुरा,पृ.९६; रू. ०.६५।

(२७) **नमस्कार महामन्त्र** : गुजराती; पं. सुशीलविजय; सोमाभाई पुनमचन्द दोशी; कपडवंज (गुजरात); पृ. २४; (१९६१)।

(२८) **नमस्कार महामन्त्र** : गुजराती; हरिसत्य भट्टाचार्य, अंग्रेजी से गुजराती अनुवाद - जयन्तीलाल दवे; श्री जैन आत्मानंद सभा; भावनगर (गुजरात); पृ. १२०; रु.१.००

(२९) नमस्कार महामत्र महात्म्य : हिन्दी;सं. चन्दनमल नागौरी; जैन पुस्तकालय; छोटी

सादड़ी(राजस्थान); पृ. १०२; रु. २.००; १९५३।

(३०) **नमस्कार महामन्त्र साधना के आलोक में :** हिन्दी; साध्वी राजमती; गुलाबचन्द धडिवा; नया टोला; पटना. पृ. १००; रु. ७.५०; (१९७७)।

(३१) **नमस्कार महिमा :** गुजराती; कीर्तिविजय; श्री जैन मित्र मण्डल, शांताक्रुझ (वेस्ट) बम्बई -४०० ०५४; पृ. १०८; रु.०.७५;(१९६१)।

(३२) **नमस्कार स्वाध्याय(प्राकृत) :** गुजराती; सं. आचार्य धुरन्धरसुरि, मुनि जम्बुविजय, तत्वानन्द विजय; जैन साहित्य विकास मण्डल, ११२, घोड़बन्दर रोड़; इर्ला ब्रिज,विले पारले, बम्बई - ४०० ०५६; पृ. ३३६; रु. १५.००; (१९६२)।

(३३) **नमस्कार स्वाध्याय (संस्कृत) :** गुजराती; क्रम ३२ अनुसार; पृ. ११४; रु. २०.००; (१९६१)।

(३४) **नमस्कार-मन्त्रसिध्दि :** गुजराती; श्री धीरजलाल टोकरशी शाह; नरेन्द्र प्रकाशन सरस्वती सदन, दूसरा माला, ११३-१५ केशवजी नायक रोड़, बम्बई - ४०० ००९

(३५) **नमस्कार मिमांसा :** गुजराती; पं. भद्रंकरविजयजी गणिवर; श्री जैन धार्मिक तत्वज्ञान पाठशाला, सी/५, आरती, पुराना नागरदास रोड़, चीनॉय कॉलेज के सामने, अंधेरी (पूर्व)बम्बई - ४०० ०६९।

(३६) **नमस्कार चिंतामणी :** गुजराती; पं. भद्रंकरविजयजी गणिवर; (क्रम ३५ अनुसार)

(३७) **नमस्कार महामन्त्र :** गुजराती; पं. भद्रंकर विजयजी गणिवर; (क्रम ३५ अनुसार)

(३८) **नमस्कार मंत्रनुं ध्यान :** (क्रम ३५ अनुसार)

(३९) **नमस्कार चिंतामणी :** गुजराती; मुनि कुन्दकुन्दविजयजी;श्री जिनदत्तसूरि मण्डल, दादावाड़ी, अजमेर।

(४०) **नमस्कार महामंत्रनुं विज्ञान :** गुजराती; श्री किरणजी।

(४१) **नमस्कार महामंत्र:अनुप्रेक्षात्मक स्वरुपभागी :** गुजराती; मुनि अरुणविजयजी।

(४२) **नमस्कार महामंत्र :** गुजराती; श्री चमनलाल मणीलाल।

(४३) **नमस्कार महामंत्र ग्रंथनी उपोद्घात :** गुजराती; आ. भुवनभानु सूरीश्वरजी।

(४४) **नवकार गुण-गंगा :** गुजराती/हिन्दी; आ. जयन्तसेनसूरजी, 'मधुकर'; अ.भा. श्री राजेंद्र जैन नवयुवक परिषद, जे.के. संघवी, जामली नाका, थाणे (महाराष्ट्र) ४०० ६०१

(४५) **नवकार चालीसा (पद्य) :** हिन्दी;अशोकमुनि; श्री जैन दिवाकर दिव्य ज्योति कार्यालय, मेवाड़ी बाजार, ब्यावर (राजस्थान); पृ. १६; रु. ०.२५।

(४६) **नवकार मंत्र का अर्थ :** हिन्दी, ज्ञानचन्द्र जैन; हकीम ज्ञानचंद्र जैन दि. जैन धर्म प्रसार केंद्र, लाहौर; पृ. ४४; १९१३।

(४७) **नवकार मन्त्र या पंचपरमेष्ठी :** गुजराती; पं. सुखलाल; चंदुलाल गोकलदास शाह, श्री जैन युवक सेवा समाज, अहमदाबाद; पृ. १६; १९६७।

(४८) **नवकार मन्त्रनी महिमा :** गुजराती; सं. कीर्तिविजय; श्री जैन मित्र मण्डल, शांताक्रुझ(वेस्ट), बम्बई - ४०० ०५४, पृ. १०८, रु. ०.८५, १९६१।

(४९) **नवकार मन्त्रनो महिमा :** गुजराती; पं. बेचरदास दोशी; हिन्दी अनुवाद - पं.

शोभाचंद्र भारिल्ल।

(५०) **नवकार महामन्त्र कल्प (और ज्योतिष्य-सार)** : हिन्दी; सं. किशनलाल कोठारी, संग्रह, -हजारीमल महाराज; हँसराज बच्छराज नाहटा, सरदार शहर (राजस्थान); पृ. २०८; रु. २.५०; १९६९।

(५१) **नवलाख नमस्कार महामन्त्र की नित्य जाप-नोंद** : पृ. १६; १९६७।

(५२) **नवकार आराधना** : हिन्दी; आ. जयंतसेनसूरीश्वरजी 'मधुकर', राजेन्द्रसुरि साहित्य प्रकाशन मन्दिर, राणापुर - अहमदाबाद, प्राप्तिस्थान - क्रम ४४ अनुसार।

(५३) **नवकार मंत्र तत्काळ केमफळे** : गुजराती; मुनि तत्वानंद विजयजी।

(५४) **नित समरो नवकार** : गुजराती; (क्रम ३५ अनुसार)

(५५) **नमो मन से नमो तन से** : हिन्दी;आ. जयंतसेनसूरीश्वरजी 'मधुकर', क्रम ४४ अनुसार।

(५६) **नमोकार महामन्त्र** : हिन्दी; पं. रतनचंद भारिल्ल; पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-४, बापूनगर, जयपुर - ३०२ ०१५।

(५७) **पंचपद वन्दना (पद्य)** : हिन्दी; आ. तुलसी; महालचन्द भादानी, श्री डुंगरगढ, (बीकानेर); पृ. ८।

(५८) **पंचपद वन्दना (पद्य)** : हिन्दी; मुनि महेन्द्रकुमार 'प्रथम', अर्हत प्रकाशन, अ. भा. जैन श्वे. तेरापंथी समाज, ३६६-३६८, तोदी कार्नर, ३२, इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता; पृ. ८; रु. ०.२५; १९७८।

(५९) **पंचपरमेष्ठी** : हिन्दी; पुज्य भिक्खू; श्री सूत्रागम प्रकाशन समिती, जैन स्थानक, रेल्वे रोड़, गुड़गांव कैंट; पृ. १०८; रु. १.२५; १९५७।

(६०) **पंचपरमेष्ठी महामन्त्र (याने श्री जैनधर्मनुं स्वरुप)** : गुजराती; चरणविजय गणिवर्य; श्री केशरभाई जैन ज्ञान मन्दिर, पाटण (उ.गुजरात); पृ. ५०; रु. ४.००; १९५१।

(६१) **पंचपरमेष्ठी मङ्गल (पद्य)** : हिन्दी; मुंशी नाथुराम; लाला कन्हैयालाल भगवानदास जैन, लखनऊ; पृ. ३२; १८९९।

(६२) **पंपरमेष्ठी पूजा (पद्य)** : हिन्दी; त्रिलोकचंद पाटणी, सं. दीपचन्द पांड्या; श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर, फंड गाँव मेवदा (केकड़ी). पृ. ७६; १९४७।

(६३) **पंचनमस्कार (सोपज्ञ वृत्ति सहित)** : प्राकृत-संस्कृत, जिनकीर्तिसूरि; झवेरीचन्दभाई रामजी झवेरी, देरासर के पास, नवसारी (गुजरात); पृ. २४; रु. ०.५०; १९४७।

(६४) **पंचपरमेष्ठी नमस्कार के चमत्कार (कथाएँ)** : हिन्दी; मुनि कुन्दकुन्दविजय, गुजराती से अनुवाद चाँदमल सीपाणी; श्री जिनदत्तसूरि मण्डल, दादावाड़ी, अजमेर; पृ. १२६; रु. ४.००; १९७४।

(६५) **पंचपरमेष्ठी मन्त्रराज ग्रंथ (अध्यात्मसार माला, ध्यानमाला)** : गुजराती; भद्रंकरविजय; जैन साहित्य विकास मंडल, बम्बई ४०० ०५६; पृ. २९१; रु. १०.००; १९७१।

(६६) **पंचपूजा (पद्य)** : हिन्दी; हीराचन्द; शा. मोतीचन्द लुकचन्द कालुसकर, फलटण (महाराष्ट्र); पृ. ५५।

(६७) **परमेष्ठी नमस्कार अने साधना** : गुजराती; भद्रंकरविजयजी, श्री नमस्कार महामन्त्र आराधक मण्डल, महावीर नगर, झवेरी सड़क नं. १६, नवसारी (गुजरात); पृ. २५१; रु. ३.५०, १९७४।

(६८) **परमेष्ठी नमस्कार** : गुजराती; भद्रकरविजयजी, सोमचन्द डी. शाह, कल्याण प्रकाशन मन्दिर, भवन निवास के सामने, पालीताणा (गुजरात); पृ. १६६; रु. १.२५; १९५७।

(६९) **परमेष्ठी नमस्कार** : हिन्दी; भद्रकरविजयजी, गुजराती से अनुवाद सोहनलाल पाटणी; श्री जिनदत्तसूरि मण्डल, दादावाड़ी, अजमेर; पृ. १२६; रु. ४.००; १९७४।

(७०) **मंगल मंत्र णमोकार** : एक अनुचिंतन : हिन्दी; डॉ. नेमिचंद्र जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, बी/४५-४७, कनॉट प्लेस नई दिल्ली - ११० ००१; पृ. २२२; रु. १०.००; १९७९; षष्ठ संस्करण । १४, हूंसंटिशन एरिया, लोधी रोड़, नई दिल्ली - ११० ००३.

(७१) **मन्त्राधिराज** : गुजराती, कान्तिलाल ईश्वरलाल; अर्पणा, बम्बई; पृ. २४३; रु.७.५०; १९७०।

(७२) **महामन्त्रना अजपाला** : गुजराती; अभय सागर; श्री आगमोध्दारक, जैन संघ माला, कपड़वंज (गुजरात); पृ. १९२, १९५८।

(७३) **महामन्त्रनी आराधना** : गुजराती; अभय सागर; श्री जैन श्वे. संघनी पेढी, पीपली बाजार, इन्दौर (म.प्र.); पृ. ६४; १९५८. प्रथम आवृत्ति।

(७४) **महामन्त्रनी आराधना** : गुजराती, अभय सागर , क्रम ७२ अनुसार; पृ. ११६; रु. ०.७५, १९६५; द्वितीय आवृत्ति।

(७५) **महामन्त्र आराधना** : (प्रश्नोत्तरी); गुजराती, डॉ. एन. के. गांधी, श्री शामजी वेलजी वीराणी, श्री कड़वीबाई वीराणी स्मारक ट्रस्ट, ५, दीवानपुरा, राजकोट (गुजरात) पृ. ५३७; रु. ४.००; १९५७ ।

(७६) **महामन्त्र की अनुप्रेक्षा** : हिन्दी; मूल गुजराती; भद्रंकर विजय; मंगल प्रकाशन मन्दिर, कड़ी, उत्तर गुजरात; पृ. १३६, रु. २.५०; १९७१।

(७७) **महामन्त्र नवकार** : हिन्दी; मधुकर मुनि; मुनिश्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन; पीपलिया बाजार, ब्यावर (राजस्थान); पृ २०;रु. ०१५; १९७६

(७८) **महामन्त्र नवकार** : हिन्दी; उपा.अमरमुनि; भारत जैन महामण्डल, १३४-३६ जवेरी बाजार, (पहला माला), खाराकुआ के सामने, बम्बई - २; पृ. २४; रू.०.७५; १९७४। (७९) **महामन्त्र नवकार** : हिन्दी; अमरमुनि; सन्मति ज्ञानपीठ, लोहामंडी-आगरा; पृ.१४४; रू.१.५०;१९६१,द्वितीय संस्करण।

(८०) **महामन्त्र नवकार** : हिन्दी; अमरमुनि; क्रम-७९ अनुसार; पृ.१३६, रू.१.५०; १९६९,तृतीय संस्करण।

(८१) **महामन्त्र प्रभाव** : गुजराती; विजयअमृतसूरीश्वर; श्री हर्ष पुष्पामृत जैन ग्रंथमाला,

सौराष्ट्र ;पृ.८८;रू.०.८०; १९६४।

(८२) **महामन्त्रनुं रहस्य** :गुजराती; मुनि प्रभाकर विजय; श्री कान्तिलाल डाह्याभाई दसाड़िया, अभिनन्दन एण्ड कम्पनी, उस्मानपुरा; जैन देरासर के सामने, अहमदाबाद;पृ.८६; १९७५।

(८३) **मंत्र भलो नवकार** :गुजराती; भद्रंकरविजयजी; श्री जैन धार्मिक तत्वज्ञान पाठशाला, सी/५, आरती, जुना नागरदास रोड़, चीनॉय कॉलेज के सामने,अंधेरी (पूर्व) बम्बई- ४०००६९

(८४) **महामंत्र साधना** :गुजराती; मुनि कुन्दकुन्दविजयजी;श्री जिनदत्त सूरि मण्डल, दादावाड़ी, अजमेर ।

(८५) **महामंत्रना अजपाळा** : गुजराती; मुनि क्षमा सागरजी,

(८६) **विविध लिपि में नवकार** : (११लिपियाँ) :हिन्दी; मुनि वीरसेनविजय; मंत्री,लब्धि जैन साहित्य सदन, छाणी, जि.बड़ौदा (गुजरात);पृ.११; १९७३।

(८७) **विश्वप्राण श्री नवकार** : गुजराती ; मफतलाल संघवी; रीसड़ा डीसा; पृ.१९२; रू.१.००; १९६०।

(८८) **सचित्र नवकार** : गुजराती; मुनि हरीशभद्रविजय, नवजीवन ग्रंथमाला, गारीआधार (सौराष्ट्र)

(८९) **हे नवकार महान्** : हिन्दी; पद्मसागरसूरीश्वरजी;श्री किरीटभाई फुलचंद वखारिया, श्री अरुणोदय फाउन्डेशन ट्रस्ट, अहमदाबाद मेडिकल सोसायटी के पीछे,- अहमदाबाद।

(९०) **श्री नवकार महामन्त्र** : गुजराती; श्री रसीकलाल छगनलाल शेठ श्री पार्श्वनाथ एस्टेट कार्पोरेशन,५०, हरसिद्धि चेम्बर्स, आश्रम रोड़, अहमदाबाद - ३८०००५

(९१) **श्री नमस्कार महामन्त्र** : हिन्दी; पूर्णानन्दविजय; सेठ नथमल टीकमचन्द जैन सदर बाजार, शिवपुरी (म.प्र.);पृ.२०; १९५४।

(९२) **श्री नमस्कार महामन्त्र** :गुजराती; मुनि भानुविजय; श्री विजय दान सूरीश्वर जैन ग्रन्थमाला, धर्मशाला, गोपीपुरा, सुरत (गुजरात) पृ.३३;१९५१।

(९३) **श्री नमस्कार महामन्त्र मौक्तिमाला** : गुजराती; मुनि सुशीलविजय; ज्ञानोपासक समिती, बौटाद(गुजरात); पृ.६४; रु.०.७५; १९६०।

(९४) **श्री नमस्कार महामन्त्रना दृष्टांतो** गुजराती; मुनि कुन्दकुन्दविजय; साधना प्रकाशन मन्दिर, दिगविजय, प्लाट शेरी नं ४६, जामनगर (गुजरात); पृ.४१५; रु.३.००; १९५७।

(९५) **श्री नमस्कार महामन्त्रनुं विज्ञान** : क्रम ९४ के अनुसार।

(९६) **श्री नमस्कार महामन्त्रनुं दर्शन** : गुजराती; कान्तिलाल मोहनलाल किरण; श्री जैन साहित्य सभा, बम्बई, पृ.११६;रू.०.७५;१९५९।

(९७) **श्री नमस्कार महात्म्यम्** : हिन्दी; सिध्दसेनाचार्य, संस्कृत से अनुवाद एवं सं. भद्रंकर विजय; श्री जैन साहित्य प्रसार समिति, मुणोत भवन,पीपलिया बाजार, ब्यावर(राजस्थान); पृ.४६; १९६८।

(९८) **श्री नवकार मंत्र संग्रह** :गुजराती; मास्टर नानालाल मगनलाल अहमदाबाद; पृ. ३०; १९६९।

(९९) **श्री नवकार महिमा** : हिन्दी; भद्रंकरविजय; शोरीलाल नाहर, प्रधानाध्यापक, श्री शान्तिलाल जैन मिडिल स्कूल,ब्यावर(राज)पृ.४०; १९५९।

(१००) **श्री नवकार महामन्त्र कल्प** : हिन्दी; सं.चन्दनमल नागौरी; जैन पुस्तकालय, छोटी सादड़ी (राज.); पृ.११९; १९६०,।

(१०१) **श्री नवकार महामन्त्र कल्प (मोती की माला तथा गुरुदेव स्तवनावली)** :हिन्दी;श्री जैन श्वे. मित्र मंडल, कलकत्ता; पृ.११३।

(१०२) **श्री मंत्रराज गुणकल्प महोदधि** :हिन्दी; जयदयालु शर्मा, प्रधानाध्यापक, श्री डुंगर कॉलेज, बीकानेर, पृ.२५४; रू.३.५०; १९२०।

महावीर-वाणी

एस खलु गंथे, एस खलु मोहे,
एस खलु मारे, एस खलु णरए। (आचारांग सूत्र १/१/२)

—यह हिंसा ही वस्तुत: ग्रन्थ - बन्धन है, यह ही मोह है, यह ही मार मृत्यु है और यह ही नरक है।

वीरेहिं एयं अभिभूय दिट्ठं, संजेतहिं सया अप्पमत्तेहिं। १.१.४.

—सतत अप्रमत्त जितेन्द्रिय वीर पुरषों ने मन के समग्र द्वन्द्वों को अभिभूत कर सत्य का साक्षात्कार किया है।

अणभिक्कंतं च वयं संपेहाए, खण जाणाहि पंडिए। १.२.१.

—हे प्रबुध्द साधक! जो बीत गया सो बीत गया! शेष रहे जीवन को ही लक्ष्य में रखकर समय का मुल्य समझ।

आसं च छंदं च विगिंच धीरे! तुमं चेव सल्लमाहट्टु। १.२.४.

—हे धीर-पुरुष! आशा-तृष्णा और स्वच्छंदता का परित्याग कर। तू स्वयं ही इन शल्य-काटों को मन में रखकर पीड़ा पा रहा है।

नो निन्हवेज वीरियं। १.५.३.

—अपनी योग्य शक्ति को कभी छुपाना नहीं चाहिए।

साधना नवकार की

– श्री जे. के. संघवी

नवकार की साधना अर्थात् सर्व समर्पणभाव की पात्रता के विकास की लक्ष्यपूर्वक साधना ।

नवकार की साधना अर्थात् पापों के मूल रूप दुर्भाव के सम्पूर्ण क्षय की साधना ।

नवकार की साधना अर्थात् अरिहंत परमात्मा की आज्ञानुसार पवित्र एवं अप्रमत्त जीवन जीने की साधना ।

नवकार की साधना अर्थात् परमपद की साधना ।

नवकार के स्वभाव का स्पष्ट बोध हमें नवकार के सातवें पद से होता है ।

सातवां पद है - **'सव्वप्पावप्पणासणो'** । सभी पापों के मूल क्षय की ओर नवकार के साधक का लक्ष्य होना चाहिये । पाप के मूल का क्षय जितनी मात्रा में होगा सर्व मंगल रूप आत्मभाव का विकास क्रमशः उतनी मात्रा में होगा । नवकार गारंटी देता है, सभी पापों का क्षय कर, अशुभ कर्मों का विनाश कर सर्व मंगलों में उत्कृष्ट मंगल प्रदान करने की ।

नवकार को अपनी चिंताओं का सारा भार सौंप देने पर ही उसकी अचिन्त्य अपूर्व शक्ति का अनुभव किया जा सकता है । नवकार की शरण में साधक नम्रता से जाये, दीनता से नहीं ।

अहं भाव के त्याग से आती है नम्रता,

जब कि दीनता तो जीव के परिणामों को तोडने वाली है ।

जिस प्रकार माता की गोद में बालक निश्चिंत रहता है उसी प्रकार नवकार माता की गोद में साधक निश्चिंत रहता है ।

नवकार का शरण इसलिये अनिवार्य है कि हम केवल स्वयं के प्रयत्नों द्वारा महामोह के गूढ बंधनों से छूट सकने में समर्थ नहीं है ।

शरणागत का रक्षण करना नवकार का वचन है ।

सामान्य भूमिका में रहे मानव के पास कोई महान वस्तु प्रस्तुत की जाये तब स्वयं की सामान्यता के कारण उसे वह सामान्य लगती है और उसके विशिष्ट प्रकार के लाभ से वह सर्वथा वंचित रह जाता है । नवकार को पहचानने/जानने के विषय में कुछ ऐसी ही स्थिति अपनी भी है ऐसा अपनी वाणी, विचार और आचार से प्रतीत हो रहा है ।

अन्यथा क्या नवकार जैसे महामंत्र के शुभयोग के बाद भी जीवन प्रवाह वैर और ईर्ष्या की गंदी गलियों में बहना संभव है ? शेष पृष्ठ 8 पर

शाश्वत धर्म को भेंट-

1100/-रानी (राज.) में श्री राजेन्द्र जयंतसेन सम्यग् कन्या शिविर के आयोजन के उपलक्ष में पू. साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी की प्रेरणा से शिविर आयोजकों की ओर से सप्रेम भेंट।

101/-चि. हंस कुमार का शुभविवाह सौ कां. मेनका के साथ 8-7-91 को हुआ। इस अवसर पर आहोरनिवासी शा. सुकनराजजी हिम्मतमलजी गोलेछा (फर्म सुकनराज मोहन लाल-राजमुन्द्री) की ओर से सप्रेम भेंट।

51/-आहोर निवासी शा. उत्तमचंदजी जैन विजयवाड़ा के ७ जुलाई को ४१ वें जन्म दिवस के उपलक्ष में सप्रेम भेंट!

आपका पत्र मिला—

....जुलाई मास का अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। ज्ञान कसौटी ज्ञानवर्धक रहा सब लेख रूचिकर और उत्तम है। छपाई बहुत स्वच्छ और सुन्दर है।

-किशोर पी. शाह नवसारी (गुज.)

....शाश्वत धर्म का प्रसार-प्रचार दिन दूना बढ़ रहा है, इसका मुख्य कारण इसकी विशेषताएँ है। **-चन्द प्रकाश सिंघवी, मालाड़ (प.) बम्बई**

....आपका जुलाई अंक आज ही मिला। शब्द सागर स्पर्धा काफी ज्ञानवर्धक है और ज्ञान कसौटी भी उत्तम है। नेकनियती और लगन अवश्य सफलता देंगे।

वसंत सोलंकी (बम्बई)

....शाश्वत धर्म जुलाई ९१ का अंक प्राप्त हुआ। अच्छा है, विशेषकर श्री राजेन्द वचनामृत (संकलित) तथा मनुष्य के प्रकार बहुत ही अच्छा लगा।

-एस. पन्ना लाल जैन-मेसूर

....दूसरे लेख अत्यन्त उत्तम, रुचिकर व ज्ञानवर्धक है।

--किशोर सोलंकी-बेंगलोर

आपके कुशल एवं सुघड़ सम्पादन में प्रकाशित 'शाश्वत धर्म' की प्रति मिली। आकर्षक आवरण एवं नवीन तकनिक से प्रकाशित यह पत्रिका सहज ही आकर्षत लगी।

सामाजिक बुराइयाँ, पर्यावरण, लोकतंत्र की अशुद्धि, व्यक्तिगत जीवन में गिरावट आर्थिक विसंगतियाँ आदि ऐसी स्थितियाँ हैं जिनको रोशनी देने का प्रयत्न हो, ऐसे लेख एवं विचार प्रकाशित हो जो न केवल राष्ट्र बल्कि समूची दुनिया को राह दिखा सके। 'शाश्वत धर्म' की सफलता की कामना एवं आपके कुशल संपादन के लिये बधाई।

-ललितगर्ग (सहसम्पादक-अणुव्रत) नई दिल्ली

....अंक काफी रोचक है, आपने जो वर्ग पहेली का कालम शुरू किया, वास्तव में सराहनीय है। इसमें रोचक तरीके शान की वृद्धि होती है।

-सुमंगला जैन, (म. प्र.) इन्दौर

नमस्कार-महामंत्र

– श्री मुमताज अहमद चिस्ती

सर्वोत्कृष्ट जीव योनी मानव जीवन में अभिवादन, नमन, वंदन की महत्ता सर्वोपरि स्वतः सिद्ध है । भारतीय संस्कृति में अपने से बड़े एवं श्रेष्ठ यानि महान् एवं उज्ज्वल पवित्र आत्माओं को उदात्त एवं प्रबल भक्ति भाव से पुलकित होकर नमन एवं वंदन करना, एक अनुपम परम्परा रही है । निर्मल एवं सलौनी आत्माएँ आस्था के आयाम के रूप में सर्वत्र सर्वजन के लिए पूजनीय बन कर श्रद्धा की केन्द्र बिन्दु बन जाती है । निर्लिप्त सद्गुणों एवं अप्रतिम प्रतिभा के आलोक में 'अहम्' स्वाह होकर त्याग, तपश्चर्या एवं महानता के चरण-कमलों में अपने आपको सर्वतोभावेन अर्पण कर देता है ।

जैन दर्शन में वंदन की महत्ता संस्कृति के सर्वोच्च उत्तुङ्ग शिखर पर आरूढ़ है । इस दर्शन की पारम्परिक मूल भाषा प्राकृत में नमस्कार को 'नवकार' कहा जाता है । इसे पञ्चपरमेष्ठी के रूप में भी जाना जाता है । क्योंकि **इस महामंत्र में पाँच पद हमारे लिये आलम्बन, आदर्श एवं लक्ष्य माने गये हैं । नवकार महामंत्र मङ्गलमय सिद्धि मंत्र है । इसकी महानता, विशालता एवं उपादेयता सर्वोच्च एवं सर्वाङ्ग, मङ्गलमय एवं आत्म कल्याणी राम बाण औषधि है,** जिसकी महत्ता से आध्यात्मिक धर्म ग्रन्थों के असंख्य पृष्ठ छलक उठे हैं ।

नमस्कार महामंत्र के प्रथम पाँच पदों में संसार की समस्त आराध्य, वंदन-सुपात्र एवं भव्य आत्माओं को नमन एवं वंदन सविधि किया गया है । **इस महामन्त्र में किसी व्यक्ति विशेष, देव विशेष, अवतार विशेष, आराध्य भगवन् विशेष या ईश्वर विशेष को वंदन न कर उपरिवर्णित में पाये जाने वाले गुणों के धारी चराचर के समस्त वंदन योग्य महान् आराध्यों को नमन किया गया है । इस महामंत्र में किसी धर्म, जाति, सम्प्रदाय या समूह की बू नहीं आती अतः यह महामंत्र सर्वग्राह्य एवं अनापत्तिजनक सार्वजनिक परलौकित अक्षुण्ण सम्पत्ति है ।** जैन साहित्य का प्रत्येक क्षेत्र इस सर्वतोमुखी, अत्यन्त प्रभावक अनामिसिद्ध मंत्र-नवकार मंत्र की गौरव-गाथा से गुञ्जारित है । जैनाचार्यों ने तो यहाँ तक कह दिया है कि चौदह पूर्व के विशाल ज्ञान से भी ऊपर नवकार महिमा है ।

इस महामंत्र के प्रथम पाँच पद जिनमें समस्त चराचर के आराध्यों के गुणों को नमन किया गया है उनका जिक्र यहाँ पर करना परम आवश्यक है ।

१. **"णमो अरिहंताणं"** :- अर्थात् अरिहन्तों को नमस्कार हो । "अरिहंत" शब्द गुण वाचक सर्वनाम है । अरि+हंत = अरि दमनक या दुश्मनों का नाश करने वाले । दमन, नाश, हत्या आदि शब्दों से आप चौंक गये होंगे । यहाँ पर काया के शत्रु या अन्त शत्रु मोह, माया, राग, द्वेष, काम, क्रोध, मद, लोभ आदि हैं । (जिनसे अनेक दुःख, क्लेश और संघर्ष होते हैं,) इन आत्मा के शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाले ही अहिंसा एवं शान्ति के अक्षय, असीम

सागर अरिहंत होते हैं । इस प्रकार इस पद में आत्मा के अन्तः शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाले समस्त देवी-देवता, अवतार-महापुरूषों को वन्दन किया गया है । **अरिहन्त शब्द अत्यन्त व्यापक एवं अपने आप में परिपूर्ण है ।**

२. **"णमो सिद्धाणं"** :- अर्थात् सिद्ध पुरुषों को नमस्कार । जिन्होंने अपने समस्त कर्मों के फल को भोगकर सिद्धि प्राप्त कर ली या जो कृत-कृत्य हो गये । यानि समस्त प्रकार के कर्मों का क्षय करके कर्म-मल से सर्वथा मुक्त हुई आत्मा, जन्म-मरण के कुचक्र से स्वतन्त्र अजर, अमर, सिद्ध, बुद्ध सर्वथा मुक्त मोक्ष प्राप्त है । उन्हें सिद्ध नाम से उद्‌बोधित कर नमन व वंदन किया गया है - **जो आत्मा से परमात्मा बन गया ।**

व्यवहारिकता में सर्वगुणों से सम्पन्न देहधारी जीवन युक्त अरिहंत होते हैं तथा जो शरीर-मुक्त होकर जन्म-मरण के लौकिक दुष्चक्र से मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त हो गये या जिनकी आत्मा परमात्मा में विलीन हो गई वे ही सिद्ध प्रभु हैं । **अतः सिद्धत्व को प्राप्त होने वाले सभी निर्गुण आत्माओं को वंदन ।**

३. **"णमो आयरियाणं"** :- सभी आचार्यों को नमस्कार हो । जैन परम्परा में जो शुद्ध साध्वाचार का, संयम का, निष्पक्ष मानवीयता का सर्वाङ्ग पालन करते हुए धर्मसंघ को नेतृत्व प्रदान कर, धार्मिक नियमों, परम्पराओं, अनुष्ठानों का स्वयं पालन करें, तथा चतुर्विध संघ (साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका) से पालन करवायें वे आचार्य कहलाते हैं । नवकार महामंत्र एवं जैन दर्शन में आचार्य का तृतीय पद है ।

जैनाचार साधना में पञ्चमहाव्रतों (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) का पालन सर्वस्व, सर्वतोमुखी-सर्व प्रमुख आयाम है । पंचमहाव्रतों की पालना प्राणपण से दृढ़ संकल्पित होकर करना आचार्य का नैतिक दायित्व तो है ही साथ ही अन्य भव्य प्राणियों से पालन करवाना व भूल होने पर उचित प्रायश्चित करवाकर सत्पथ प्रशस्त करना भी आचार्य की जिम्मेदारी है ।

४. **"णमो उवज्झायाणं"** :- अर्थात् उपाध्यायों को नमस्कार हो । अज्ञान अंधकार के बीहड़ वन में यत्र-तत्र भटकने वाले तिमिराच्छन्न भव्य प्राणियों को विवेकालोक प्रदान करने वाले, मानव जीवन की अन्तग्रन्थियों को सहज, सुबोध एवं सूक्ष्मता से सुलझाने वाले अध्यात्मयोगी को जैन परम्परा में उपाध्याय कहा गया है । **अध्यात्म विद्या (जड़-चेतन, विवेक-विज्ञान आदि) के शिक्षण का भार उपाध्याय वहन करता है ।**

५. **"णमो लोए सव्वसाहूणं"** :- संसार के समस्त साधुओं को नमस्कार हो । धर्म, सम्प्रदाय, वर्ण, वर्ग, आदि भेद भाव के बिना आदर्श साध्वाचार का पालन करने वाले चराचर के समस्त साधुओं को वंदन किया गया है । **प्रमुखतः आत्मा की साधना करने वाला साधक ही साधु माना गया है** । सांसारिक वासनाओं (तृष्णा) को त्याग कर पञ्चेन्द्रियों को सर्व प्रकार से वश में करके अखण्ड सर्वाङ्ग ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए क्रोध, मोह, मान, माया, लोभ पर विजय पाने के लिये सतत-अथक प्रयत्नशील तथा पञ्चमहाव्रत पालनहार साधु कहलाते हैं । ये ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार इन पञ्चाचारों में अहर्निश संलग्न रहते

हैं । जैन दर्शन की समभाव दृष्टि इस पद से पूर्ण रूपेण प्रतिबिम्बित होती है । यह एक दीप्तिमान महान् आदर्श है ।

नवकार मंत्र के उपर्युक्त पञ्चपदों में प्रथम दो पद (अरिहन्त व सिद्ध) देव रूप हैं और अंतिम तीन पद (आचार्य, उपाध्याय व साधु) गुरु रूप में हैं । इस प्रकार नवकार मंत्र में देव गुरु को सम्यक् श्रद्ध भाव से नमन किया गया है । नमन, वंदन के द्वारा उन पवित्रात्माओं के प्रति श्रद्धा, भक्ति एवं पूज्य भावना का संचार प्रकट होता है ।

स्वत्व को प्राप्त, परमात्मा में विलीन, निष्कलङ्क, सवोत्कृष्ट विशुद्ध आत्मा केवल सिद्ध को ही माना गया है तो प्रश्न उठता है सर्वोपरि को सर्व प्रथम नमन क्यों नहीं ? जैन दर्शन के अनुसार सिद्ध के स्वरूप का भान कराने वाले, जन्म-जन्मान्तरों से अज्ञानान्धकार के निवड़ विशाल वन में भटकने वाले जीव को सत्य की ज्योत्सना प्रदान करने वाले परमोपकारी अरिहन्त भगवान् ही हैं, अतः सर्व प्रथम उन्हीं को नमन किया जाना युक्ति संगत है । कबीर ने भी अपने पद में इस तथ्य को साङ्गोपाङ्ग स्वीकारा है -

"गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, का के लागूँ पाय,
बलिहारी गुरुदेव की, गोविन्द दियो बताय ।"

उपर्युक्त तर्क से शंका उत्पन्न होती है कि वर्तमान में सत्य का उपदेष्टा साधु है, क्यों न सर्वप्रथम उन्हें ही नमन किया जाय । ज्ञानालोक में दृष्टिपात से स्वतः सिद्ध है, "सर्व प्रथम यथार्थ का साक्षात्कार करने वाले और अनुपम अद्वितीय ज्ञान के आलोक में सत्य-असत्य का प्रायोगिक विवेक पूर्ण ज्ञान कराने वाले अरिहंत ही हैं । उनकी यथार्थ सत्य वाणी के दिव्य प्रकाश में ही साधु जन आजकल जन-साधारण का पथ प्रशस्त करते हैं । सत्य साक्षात्कारकर्ता, मूल उपदेष्टा होने के कारण गुरु से पहले अरिहन्त भगवान को वंदन किया गया है ।"

नवकार मंत्र के अग्र भाग में नमस्कार के प्रतिफल की सारगर्भित संक्षिप्त झलक है ।

'एसो पंचणमोक्कारो-सव्वपावप्पणासणो ।'

यह पंच नमस्कार-सब पापों का नाश करने वाला है ।

"मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।"

और समस्त मंगलों में प्रधान (प्रथम) मंगल है ।

जैन परम्परा नवकार मंत्र को महान् मङ्गल मान कर बड़ा आदर का स्थान देती है । **अनन्त आत्म गुणों को विस्तृत करने वाला सर्व प्रधान मङ्गल नवकार मंत्र है** । नवकार मंत्र में ९ पद हैं । प्रथम पाँच पद वंदना के तथा अंतिम चार पद उसकी उपादेयता या फल के हैं । ९ का अंक अपने आप में पूर्णाङ्क माना गया है । क्योंकि गणित शास्त्र में ० से ९ तक ही अंक माने गये हैं ।

जैन मान्यतानुसार नवकार मंत्र का अन्तर्मन एवं उदात्त भाव से एकाग्र चित्त होकर मनन करने वाले का मङ्गल ही होता है अर्थात् कभी अहित नहीं होता । नवकार महामंत्र इह-लोक तथा परलोक में सर्वत्र सब सुखों का मूल माना गया है ।

राजा श्रीपाल का असाध्य कुष्ठ रोग कैसे नष्ट हुआ ?

सेठ सुदर्शन के लिये सूली को स्वर्ण सिंहासन में किसने बदला ?

भयङ्कर विषधर नाग सुरम्य फूलमाला में कैसे परिणित हो गया ?

सती सुभद्रा द्वारा छलनी से पानी किसने निकाला ?

जैन कथा साहित्य तपाक से अत्यन्त दृढ़ शब्दों में एक ही स्वर में सहज भाव से कह उठता है **'नवकार महामंत्र'** । वस्तुतः सच्ची श्रद्धा भक्ति एवं दृढ़ संकल्प वाले के शब्दकोष में 'असम्भव' शब्द ढूँढने से भी नहीं मिलता ।

इस आत्म कल्याणी, महामङ्गलकारी, अनन्त सिद्धि मंत्र की महिमा का वर्णन मेरे जैसा अत्यन्त अल्पज्ञ, साधारण बुद्धि वाला जीव तो क्या करेगा, केवलज्ञान प्राप्त अरिहन्त प्रभु भी इसकी सम्यक महत्ता का पूर्ण बखान वर्णमाला के कतिपय अक्षरों में नहीं करते । पञ्च परमेष्ठी के नाम-स्मरण की महत्ता की एवं उपादेयता की कोई सीमा नहीं है । अनन्त मङ्गलकारक यह महामंत्र है ।

प्रशान्त महासागर के जल बिन्दु तथा पर्वताधिराज हिमालय के परमाणुओं को आधुनिक वैज्ञानिक युग में गिन लेना तो सम्भव एवं सरल हो सकता है परन्तु पञ्च परमेष्ठी के गुणों की एवं महत्ता की गणना करना कभी संभव न हो सकेगा ।

अन्त में निष्कर्ष रूप में यह लिखना प्रासंगिक ही है कि नवकार महामंत्र समस्त सांसारिक मङ्गलों से सर्वोपरि, सर्वोत्कृष्ट मङ्गल है । यह भाव मङ्गल होने से कभी अमङ्गल नहीं हो सकता । द्रव्य मङ्गल कभी भी अमङ्गल बन सकता है । इसमें व्यक्ति पूजा नहीं, साम्प्रदायिकता, जातीयता या वर्गीकरण नहीं, कोई पूज्यात्मा अछूती नहीं रही, अतः **यह महामङ्गलकारी, असीम उपादेयतावाला सर्वकल्याणकारी नवकार महामंत्र है ।** 🕉

बम्बई में प्रथम आयोजित 'जैन पुस्तक मेला'

सितम्बर में आयोजित होने वाले जैन पुस्तक मेले को प्रकाशकों द्वारा व्यापक सहकार मिल रहा है। श्री राज राजेन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट, त्रिशला इलेक्ट्रॉनिक्स, डिवाइन नोलेज सोसाइटी, महावीर विद्यार्थी कल्याण केन्द्र, जैन विश्वभारती, श्री देवकुमार जैन ऑरिएन्टल लायब्रेरी, टू डे अेंड टूमारो प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, विश्ववात्सल्य प्रायोगीक संघ, सत्यसमर्थक संघ आदि सुप्रसिद्ध संस्थायें इसमें भाग ले रही हैं। पुस्तक मेले के प्रचार/प्रसार को तेज किया जा रहा है। भाग लेने के इच्छुक प्रकाशक/संस्थायें तुरंत सम्पर्क करें — न्यू पब्लिकेशन्स, 12 हीराभुवन, वी.पी. रोड

मुलुंड (पश्चिम) बम्बई - 400080

फोन - 5605483

शब्द सागर इनामी स्पर्धा (४)

संकलन-प्रदीप एम. जैन

(प्रस्तुत पृष्ठ काटकर दिये गया वर्गों में आवश्यक शब्द भरकर अपने पूरे नाम एवं पते के सात कार्यालय में भिजवायें। सम्पूर्ण सही प्राप्त उत्तरों में से लक्की ड्रॉ द्वारा प्रथम पांच को (प्रथम-पचास रुपये; द्वितीय-चालीस रुपये; तृतीय-तीस रुपये; चतुर्थ-बीस रुपये; पंचम-दस रुपये का साहित्य) एवं शेष को प्रोत्साहन इनाम भिजवाये जाकर उनके नाम व स्पर्धा के उत्तर अक्टूबर के अंक में प्रकाशित किये जायेंगे। उत्तर इसी पृष्ठ में भरकर १०सितम्बर तक कार्यालय में पहुंचाना आवश्यक है। आयोजक का निर्णय अंतिम होगा, इस विषय में किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार नहीं किया जायेगा।-सम्पादक)

पुरस्कार सौजन्य : अ. भा. श्री रा. जै. न. परिषद-शाखा जोगेश्वरी (बम्बई)

प्रश्न :-निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर सामने दिये गये वर्गो में भरिये—

(१) श्री नमिनाथ भगवान की माता का नाम→

(२) गोड़वाड़ पंचतीर्थी का एक तीर्थ→ 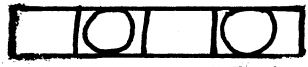

(३) श्री मुनिसुव्रत स्वामीजी के पहले गणधर→ 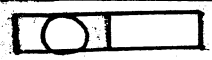

(४) श्रावक के १४ नियमों में से एक→

(५) श्री धर्मनाथ भगवान की माता का नाम→ 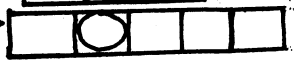

(६) अरिहंत, जिनेश्वर,→ 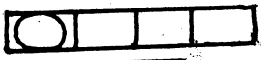

(७) समाधिमरण....→ 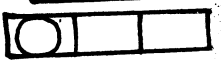

(८) महातीर्थ शत्रुंजय है, महामंत्र नवकार है, वैसे ही.....पर्युषण है→ 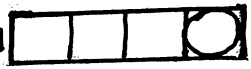

(९) प्रवचन (अर्धमागधी में)→

(१०) श्री अजितनाथ भगवान के पिता का नाम→

(११) ..... शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम

तस्मात् कारुण्य भावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर → 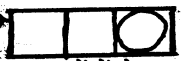

उपरोक्त वर्गों में से ◯ गोल निशान में आये हुए अक्षरों में से एक वाक्य बनता है, जो निम्नांकित प्रश्न का उत्तर है-

प्रश्न इस प्रकार है-जब कोई मुमुक्षु संयम (दीक्षा) अंगीकार करता है, तो वह पांच महाव्रत अंगीकार करता है, उसमें से एक महाव्रत का नाम उपरोक्त अक्षरों से बनता है।

गोल वर्गों में प्राप्त अक्षर →

वाक्य एवं उत्तर → 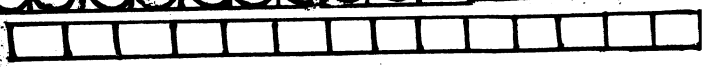

प्रतियोगी का नाम, पता व उत्तर

आचार्य श्री का जावरा में गौरवमय प्रवेश
चार पुस्तकों का विमोचन

(विशेष प्रतिनिधी श्री अशोक श्रीमाल एवं कांतीलाल भण्डारी द्वारा)

झलकियाँ :

★ मंगल प्रवेश के इस चल समारोह में जैनेतर भी गहुँली करते हुए देख गए।

★ परिषद एवं समाज के अधिकांश लोग सफेद पोशाख के साथ केसरिया टोपी एवं केसरिया दुपट्टे डाले हुए थे।

★ जुलुस में ३ बेण्ड, ढोल, नगारे, एवं अनेकों प्रकार के वाद्य यंत्रों के साथ रथ एवं पालकियाँ चल रही थी।

★ आगे-आगे सभी पूर्व आचार्यों के चित्र सजे हुए रथ चल रहे थे।

★ भारी संख्या में युवतियाँ, महिलाएँ, तथा वद्धाएँ केसरिया वेष धारण किए मंगल कलश लिए हुए चल रही थी। खोचरोद परिषद के कार्यकर्ता अपने बेज लगाकर एक विशाल समुह के साथ अपने उत्साह का प्रदर्शन कर रहे थे।

★ मंगल प्रवेश के शुभअयसर पर भारतवर्ष के विभिन्न प्रांतों के ८५ गांव एवं नगर से श्रावक श्राविकाओं का आगमन हुआ।

★ जुलूस को देखने के लिए नगर के लोग अपने-अपने मकान के छज्जे एवं गेलरियों पर उत्साह पूर्वक एकत्र हो रहे थे।

★ प्रात:काल ५ बजकर ५१ मिनिट से प्रारम्भ हुआ यह कार्यक्रम दोपहर एक बजे आचार्य श्री के मंगलाचरण के बाद समाप्त हुआ।

★ आज के इस शुभ अवसर पर नगर के सभी नवकार मंत्र आराधको एवं बाहर से आये हुए सभी महानुभावों का स्वामीवात्सल्य दादावाड़ी में रखा हुआ था।

★ कार्यक्रम के समय जावरा नगर में समाज के व्यापारियों का व्यापार बन्द था। साथ ही मण्डी में अवकाश घोषित किया गया था।

★ पीपली बाजार स्थित उपाश्रय के सामने विशाल पाण्डाल बनाया गया था और वह छोटा पड़ गया। पाण्डाल से बाहर दूरी तक दर्शनार्थी और श्रोतागण खड़े दिखाई देते थे। एक अवसर तो ऐसा आया कि अतिथि एवं पत्रकारों के लिए निर्धारित स्थान के बाजु की कनातें खोलना पड़ी।

★ अखिल भारतीय सौधमवृहत्पोगच्छिय त्रिस्तुतिक जैन श्री संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गगलदासजी संघवी अहमदाबाद वाले अपनी वयोवृद्ध अवस्था के बाद भी चल समारोह में पैदल चलते हुए दिखायी दिये।

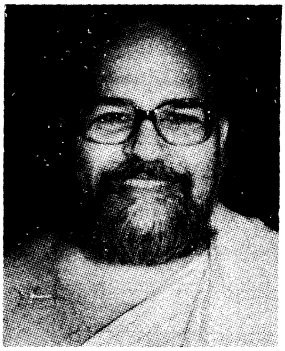

जावरा (म. प्र.) मालवा धरती का वह एतिहासिक हृदय स्थल जहाँ परमपूज्य गुरूदेव श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. ने क्रियोद्धार कर शिथिलताओं के विरुद्ध शंखनाद किया था।

आज उसी धरती पर स्थित जावरा शहर प्रसन्नता युक्त गतिविधियों एवं चहल पहल का केन्द्र बना था।

और यह सत्य भी था कि प्रभात की पहली किरण धरती पर आये सूर्य के मंगलाचरण के साथ आई जबकि आसमान पर सूर्य बादलों की और से छुप-छुप कर जावरा नगर में आज चहल पहल कर रहे धर्म प्रेमीजनों को उर्जा प्रदान कर रहा था। और ऐसा हो भी क्यों नहीं आज सभी के कदम जावरा शहर की चौपाटी की ओर चले जा रहे थे। आंखे आतुर थी शासन सम्राट के दर्शन हेतु, मस्तिष्क व्याकुल था साहित्य मनिषी के मंगलाचरण हेतु हृदय चाह रहा था दिग्दृष्टा के दर्शन की चाह।

वर्तमानाचार्य तीर्थ प्रभावक, गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयंतसेनसुरीश्वरजी म. सा. ने अपने मुनि मण्डल के साथ प्रात: ५ बजकर ५१ मिनिट पर श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी जिन मंदिर (चौपाटी) से नगर की ओर प्रवेश प्रारंभ किया। आत्मिय उत्साह का प्रदर्शन करती हुई युवकों की टोलियॉ नाच उठी और बालिकाओं की मण्डलिया गाँ उठी! जुलुस नगर में ज्यों ज्यों आगे बढ़ता चला गया त्यों त्यों विशाल होता गया।

और अब प्रारंभ हुआ आचार्य श्री के मंगल प्रवेश पर नगर वासियों के हर्ष का प्रगटिकरण गहुँली के माध्यम से। जैन जैनेतर भक्ति भावपूर्वक गहुँलिया कर रहे थे एवं अबाल वृद्ध नरनारी जय घोष से आकाश गुंजा रहे थे। नगर के विभिन्न भागों से होता हुआ यह जुलुस ठीक ग्यारह बजे पीपली बाजार धर्म सभा स्थल पर पहुँचा। आज के इस मंगल अवसर पर जैन त्रिस्तुतिक संघ के राष्ट्रिय अध्यक्ष सेठ गगलदास बम्बई, थराद त्रिस्तुतिक संघ के अध्यक्ष, बाम्बे मेटल्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के केन्द्रीय अध्यक्ष श्री सेंवती भाई मोरखिया एवं पूर्व न्यायाधीश जैन दर्शन के मर्मज्ञ साहित्यकार वेदों के ज्ञाता श्री मुरारीलालजी तिवारी, युवा उद्योग पति एवं परिषद के उपाध्यक्ष श्री चेतनकुमारजी काश्यप, त्रिस्तुतिक श्री संघ के महामंत्री भँवरलालजी छाजेड़, परिषद के संस्थापक अध्यक्ष श्री सोभाग्यमलजी सेठीया, युवापिढी के युवा शिल्पकार श्री सूरेन्द्र कुमार लोढा, परिषद के प्रादेशिक अध्यक्ष श्री डा. सोहनलालजी सुराना, परिषद के भूतपूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्री सी. बी. भगत, गुजरात प्रांतीय परिषद के अध्यक्ष श्री चन्द्रकान्त भाई बोहरा-बम्बई, भरतपुर गुरु मंदिर के ट्रस्टी एवं त्रिस्तुतिक जैन श्री संघ राजस्थान प्रांत के अध्यक्ष श्री सोमतमलजी डोसी स्थानीय दिगम्बर जैन समाज प्रमुख श्री अशोक गंगवाल, श्री वर्धमान जैन स्थानक के श्री माणकलालजी कोचट्टा खत्तरगच्छ समाज प्रमुख श्री रतनलालजी धाड़ीवाल पूर्व पार्षद इन्दरमलजी टुकड़िया, पूर्व महामंत्री भारतसिंह तथा दुग्ध

महासंघ के अध्यक्ष एवं पूर्व सांसद श्री महेन्द्रसिंह जी कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथी के रूप में उपस्थित थे।

सर्व प्रथम श्री गगलदास संघवी द्वारा दीप प्रज्वलन व श्री सेवंतीभाई मोरखिया द्वारा गुरूदेव के चित्र पर माल्यापर्ण किया गया। श्री मदनभाई (प्रकाश बेण्ड) एवं महिला परिषद की महिलाओं द्वारा अलग-अलग दो स्वागत गीत प्रस्तुत किये गये। पार्श्वनाथ जैन संगीत मण्डल द्वारा भी गीत प्रस्तुत किया गया, इस अवसर पर आचार्य श्री को काम्बली वोहराने का लाभ श्री चेतन कुमारजी काश्यप द्वारा लिया गया। कार्यक्रम की अगली कड़ी में विभिन्न व्यक्तियों एवं समुदाय प्रमुखों ने अपने विचार प्रगट किये। मुख्य रूप से जावरा श्री संघ के अध्यक्ष श्री शांतिलालजी दसेड़ा की वह मार्मिक अपिल जो संघ संगठन के लिए थी अत्याधिक प्रभावी रही।

आचार्य श्री द्वारा रचित "भगवान महावीर ने क्या कहा?" का श्री मुरालीलाल तिवारी, 'चिर प्रवासी' का श्री कांतिलाल खिमावत, "मंगलमय नवकार" का श्री चन्द्रकांत भाई वोहरा तथा "पारसमणी" पुस्तक का विमोचन अहमदाबाद त्रिस्तुतिक संघ के मंत्री श्री हरी भाई भंसाली द्वारा किया गया।

जावरा संघ के प्रमुखों द्वारा आये हुए अतिथियों का भावभीना अभिनन्दन किया गया।

विमोचित पुस्तक पर बोलते हुए श्री मुरारीलालजी तिवारी ने कहा कि ज्ञान के सागर को आचार्य श्री ने चन्द कलसों में नहीं चन्द पन्नों में बांधा है यह मात्र पारसमणी का विमोचन नहीं मणी कांचन का योग है, ज्ञानार्जन की बात करते हुए उन्होंने कहा कि सूरज तो दिन में ही चमकता है परंतु ज्ञान का सुरज कभी अस्त नहीं होता है। भगवान महावीर ने क्या कहा के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए न्यायाधिपति ने आचार्य श्री को साधुवाद देते हुए कहा कि आचार्य श्री ठीक कहते हैं कि भगवान तो सत्य में है और अहिंसा मां स्वरूप भगवती है जिससे अच्छी मानसिकता का निर्माण योग्य विचारों का पादुर्भाव तथा जीवन में दृढता एवं सहृदयता का विकास होता है।

आचार्य श्री के जीवन पर बोलते हुए माननीय श्री तिवारीजी ने कहा कि भारतीय संस्कृति चिटीयों की संस्कृति नहीं हैं (चिटीयां अपना संग्रहित खाद्यान्न अलग-अलग रखती है वह उसमें एक रसता नहीं ला पाती) वह मधुमयी संस्कृति है" जिसमें यह पता लगाना कठिन है कि किसमें कौन से रस का कितना पराग है।

अपने प्रेरक साहित्यिकता से ओत प्रोत विभिन्न धर्म ग्रन्थों सुभाषितो से युक्त उद्‌बोधन के अंत में न्यायमूर्ति महोदय द्वारा कहा गया कि आचार्य श्री के इस चातुर्मास की वह महान उपलब्धि होगी जब आप सभी नियमित रूप से प्रवाहित प्रवचन रूपी ज्ञान गंगा में गोता लगाकर अपने जीवन को सत्य एवं अहिंसा की ओर ले जाने के लिए अग्रसित

होंगे।

और अंत में मंगलाचरण के साथ आचार्य श्री ने इस विशाल सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि भगवान महावीर ने जगत के जीवों को बिना भेदभाव के मार्गदर्शन दिया। उन्होंने उपस्थित जनों से पूछा कि क्या आप दिन रात पंथ भेद के झगड़ों में उलझे रहते हैं। उन्होंने स्वयं उत्तर दिया 'नहीं', क्योंकि व्यक्ति जब व्यापार में लगा रहता है तो वह व्यापारी बन जाता है, परिवार में रहता है तो गृहपति बन जाता है रिश्तों में जाता है तो सामाजिक बन जाता है, और नेतृत्व करता है तो राजनितिज्ञ बन जाता है। अर्थात् वह दिगम्बर या श्वेताम्बर तब तक ही है जब वह उन मंदिरों में है या वह स्थानक वासी भी तब तक ही है जब वह स्थानक में है।

इसलिए हमें विनम्रता सहृदयता विवेक रखते हुए आपसी सामंजस्य स्थापित करते हुए अपने जीवन को धन्य बनाना है चातर्मास होते ही विनम्रता की वृद्धि एवं अहम् की समाप्ती के लिए है।

धर्म सभा का सफल संचालन परिषद के केन्द्रीय कोषाध्यक्ष श्री प्रकाशजी कांठेड़ ने अपनी सारगर्भित टिप्पणियों के साथ किया। और रेली का सफल संचालन श्री पारस दसेड़ा द्वारा किया गया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम को सफल बनानो में संघ एवं परिषद के श्री विजय दसेड़ा, श्री नगीन सकलेचा, श्री भंवरलाल सुराणा, श्री इन्दरमल दसेड़ा, श्री शांतीलाल जी बोरखेड़ा वाला विजय आँचलिया, सुरेश धाड़ीवाल एवं हस्ती सी. कर्नावट का सराहनीय योगदान रहा।

शोक श्रद्धांजली—

(१) अ. भा. श्री. रा. जै. न. प. शाखा धामन्धा (धार) के अध्यक्ष श्री भारतमलजी चंडालिया का आकस्मिक दुःखद निधन दि. ५-६-९१ को एक दुर्घटना में हो गया।

(२) राजगढ़निवासी परमगुरुभक्त श्री सेवारामजी सराफ का स्वर्गवास १०-७-९१ बुधवार को हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति के सेवाभावी व्यक्ति थे।

शाश्वत धर्म परिवार एवं परिषद की ओर से भावभीनी श्रद्धांजली।

परिषद द्वारा आयोजित ज्ञान शिविर सम्पन्न

रतलाम (म. प्र.) : यहाँ परम पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराज 'मधुकर' के सानिध्य तथा अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के तत्वावधान में आयोजित दस दिवसीय जैन सद्ज्ञान आराधना शिबिर का समापन श्री रतलाम त्रिस्तुतिक जैन संघ द्वारा प्रसिद्ध उद्योगपति श्री चेतनकुमारजी कश्यप की दादी मां साहब श्रीमती झुमकुबाई कन्हैयालालजी कश्यप के सम्मान समारोह में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री सुन्दरलालजी पटवा ने किया। समारोह की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री हस्तीमलजी फिरौजिया (काइनेटिक होण्डा) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में सांसद श्री गुमानमलजी लोदा म. प्र. उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री वीरेन्द्र दल ज्ञानी तथा म. प्र. लोकनिर्माण मंत्री श्री हिम्मतजी कोठारी उपस्थित थे।

शिबिर संचालक श्री सुरेन्द्रजी लोढा (मन्दसौर) ने शिबिर उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुये कहा कि जीवन की गुत्थियों को सुलझाने के लिये यह एक उपयुक्त माध्यम है। सुसंस्कार, सदाचरण तता सद्प्रवृत्ति का ज्ञानमयी आचार इसके शिक्षण से छात्रों के जीवन में आरोपित होता है।

पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् जयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराज ने कहा कि शिबिर की प्रवअत्ति से छाथों में आराधना की भूमिका तैयार होती है। इससे छात्र जीवन की पूंजी एकत्र करते है।'

समारोह में प्रावीण्य सूची के प्रथम पांच छात्रों को मुख्यमंत्री श्री पटवा के हाथों से पुरस्कृत किया गया।

शिविर का आयोजन रतलाम से तीन किलोमीटर दूर श्री सागोदिया तीर्थ पर किया गया। शिविर संचालक श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा ने विभिन्न जैन विषयों का अध्ययन करवाया। शिबिर में मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान तथा महाराष्ट्र के छात्रों ने भाग लिया। प्रावीण्य सूची का प्रथम पुरस्कार श्री संजय कूमठ (इंदौर) तथा द्वितीय श्री जितेन्द्र कुमार जैन (राणापुर) को प्राप्त हुआ। छाथों की विभिन्न प्रतियोगिताएँ भी हुई। शिविर काफी सफल रहा।

पूज्य जैनाचार्य श्रीमद्जयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराज ने अपने प्रवचन प्रदान किये।

शिविर को सफल बनाने के लिये अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद कर रतलाम शाखा के अध्यक्ष श्री ओ सी. जैन अपने साथियों देवेन्द्र मेहता, महावीरजी जैन, निर्मलजी कटारिया, चित्तरंजनजी आदि के सात रात-दिन जुटे रहे।

-दीपक बेलाणी

अ. भा. श्री राजेन्द्र जयन्तसेन सम्यग्ज्ञान कन्या शिक्षण शिविर समापन समारोह

प. पू. तीर्थप्रभावक, साहित्य मनीषी, शासन सम्राट वर्तमानाचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. की शुभाज्ञानानुवर्तिनी पूज्या सरलस्वभाविनी साध्वीजी श्रीमहाप्रभाश्रीजी म., डा. श्री प्रियदर्शनाश्रीजी एवं डा. श्री सुदर्शनाश्रीजी की पुनीत निश्रा में दस दिवसीय "सम्यग्ज्ञान कन्या शिविर रानी स्टे. का समापन समारोह दि. ३०-६-९१ को निर्विघ्न सोल्लास सम्पन्न हुआ।

३० जून को प्रात: ९ बजे समापन समारोह का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम पूज्या साध्वीजी म. द्वारा मंगलाचरण हुआ। तदनन्तर पूज्या माँ सरस्वती-माल्यार्पण-श्री छगनराजजी बूटा आहोर वाले एवं गुरू देव श्रीमद राजेन्द्रसूरि-माल्यार्पण श्री खिमराजजी संघवी रानीवालों ने किया तत्पश्चात् सरस्वती-वंदना-भाव विभोर होकर कु. ममता, कु. दया, कु, त्रिशला कु. संगीता व कु. रेखा द्वारा की गई।

अध्यक्षपद को रानी निवासी श्री खिमराजजी संघवी एवं मुख्य अतिथि पद को आहोर निवासी श्री छगनराजजी बूटा ने सुशोभित किया। समारोह का संचालन परम आदरणीय श्री सुकनराजजी धार्मिक अध्यापक द्वारा किया गया।

अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि महोदय का स्वागत कु. रूचिका धारीवाल, कु. ममता नागरेचा, कु. नम्रता मेहता एवं कु. त्रिशला जैन द्वारा किया गया।

शिविर आयोजकों का स्वागत कु. सीमा मेहता एवं कु. संगीता द्वारा किया गया। संचालक महोदय का स्वागत श्रीमान् छगनराजजी बूटा एवं श्री खिमराजजी संघवी द्वारा किया गया। स्थानीय रानी निवासी श्री हीराचंदजी जैन, श्री पारसमलजी जैन एवं श्री भंवरलालजी चौहान का स्वागत कु. दया, कु. नीरू मेहता, रंजू बागरेचा एवं कुसुम बोहरा ने माल्यार्पण द्वारा किया। श्री खिमराजजी भाई (पूजारीजी) शर्मा का बहुमान श्री छगनराजजी बूटा एवं श्री हीराचंदजी जैन ने किया एवं उन्हें अटेची फिनिश कप सेट एवं अभिनन्दन-पत्र शिविरार्थिनी छात्राओं द्वारा दिया गया।

तत्पश्चात् शिविरार्थिनी छात्राओं ने अपने शिविरानुभव (भाषण) सुनाए। जिनमें कु. ममता जैन-पाली, कु. त्रिशला जैन-भरतपुर, कु. ममता जैन पाली, कु. आभा जैन-भरतपुर। उक्त शिविरार्थिनी छात्राओं में भी विशेष रूप से कु. ममता जैन-पाली एवं कु. पिंकी जैन-भरतपुर के विचार सशक्त, उद्बोधक एवं प्रेरणादायक रहे। साथही उन्होंने प्रतिवर्ष ऐसे शिविर लगाने की समाज से अपील की। फिर कविता पाठ कु. सुनीता जैन-भरतपुर ने किया। तत्पश्चात् विदाई गीत कु. रेखा ममता एवं कु. संगीता संघवी ने सुरीले स्वर में गाया। इसके बाद नाटक कु. शिल्पा नीता आदि द्वारा प्रस्तुत किया गया। जो इतना रोचक था कि दर्शक गण हंस-हंस कर लोटपोट हो गए। पुन: पूज्या साध्वीजी द्वयश्री ने अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने नारी उत्थान, कर्तव्य एवं कन्या शिविर के महत्व पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् शिविर आयोजकों को कु. ममता द्वारा अभिनन्दन-पत्र पठन कर भेंट किया गया। उसके बाद अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि महोदय द्वारा धन्यवाद। फिर शिविर परीक्षा-परिणाम घोषित हुआ। जिसमें ए ग्रुप में पथम श्रेणी में प्रथम स्थान कु. रूचिका धारीवाल-पाली, द्वितीय स्थान कु. नम्रता मेहता-पाली एवं तृतीय स्थान कु. सीमा मेहता जालोर ने प्राप्त किया। सु श्री कु. रूचिका ने ३०० में से २४१ अंक प्राप्त किए। बी ग्रुप में प्रथम श्रेणि में प्रथम स्थान कु. ममता वागरेचा-पाली, द्वितीय स्थान कु. त्रिशला जैन-आहोर एवं तृतीय स्थान कु. संगीता जे. संघवी आहोर ने प्राप्त किया। सुश्री कु. ममता बागरेचा ने ३०० में

से २४० अंक प्राप्त किए। आहोर निवासी श्री छगनराजजी बूटा द्वारा ए और बी दोनों ग्रुपों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्तकर्ता को पुरस्कार स्वरूप क्रमशः दिवाल घड़ी, चाँदी का सिक्का अटैची एवं मल्टीपरपज सेट आदि विभिन्न पुरस्कार दिए गए। ६० प्रतिशत या उससे उपर अंक प्राप्त करने वाली एवं उत्तीर्ण होनेवाली छात्राओं को लगभग १२५ रु. का आहोर निवासी श्री छगनलालजी बूटा इसके अतिरिक्त श्री हस्तीमलजी भंडारी जोधपुर निवासी, पाली निवासी श्री शांतिलालजी मेहता, रानी निवासी श्री अचलचंदजी परमार एवं पारसमलजी चौहान-आहोर, मदनगंज (किशनगढ), भरतपुर, भीनमाल वालों की ओर से शिविर में भाग लेने वाली सभी छात्राओं को विभिन्न पुरस्कार दिया गया। तदनन्तर आगामी ग्रीष्मकालीन १९९२ के श्रुतज्ञान प्रेमी शिविर-४ आयोजकों के नाम घोषित किए गए।

(१) आहोर निवासी श्री छगनराजजी बूटा (२) श्री खिमराजजी चुन्नीलालजी संघवी-रानी निवासी (३) श्री कांतिलालजी जयन्तीलालजी खीमावत खिमेल (४) पाली निवासी श्री हणवंत चंदजी मेहता तत्पश्चात् पू. मां सरस्वती एवं पूज्यपाद दादागुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. की आरती की गई। फिर कु. ममता, दया, त्रिशला आदि बालिकाओं के द्वारा शिविर-विदाई गीत गाया। जिस से समस्त बालिकाओं का दिल रो उठा। आंखों से गंगा-जमुना बह गई। कण्ठ अवरुद्ध हो गया। फिर प. पू. साध्वीजी श्री ने मांगलिक प्रदान किया। जयनारों के साथ समापन समारोह का कार्यक्रम वि र्जित हुआ।

इस प्रसंग पर श्री छगनराजजी बूटा की ओर से दस वर्ष तक निरन्तर एक शिविर आयोजक के रूप में अपना नाम घोषित किया।

इसके साथ ही इस शिविर काल में समस्त छात्राओं ने विनय-विवेक, संयम-सदाचार, कठोर अनुशासन एवं स्वावलम्बी जीवन-कर्तव्य पालन का पाठ सीखकर अपने जीवन में कुछ न कुछ नियम लेकर विदा हुई। यह शिविर की महान उपलब्धि रही। शिविर काल में समस्त बालिकाओं को शिविर-प्रायोजकों की ओर से सम्पूर्ण सुविधाएँ उपलब्ध करवायी गई।

बडनगर में गुरुमन्दिर जिर्णोद्धार, प्रतिष्ठा व ज्ञानमंदिर उद्घाटन

बडनगर - जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी आदि मुनिमंडल एवं साध्वी समुदाय की उपस्थिति व निश्रा में २६ जून से ३ जुलाई तक अष्टान्हिका महोत्सव के आयोजन के साथ ही राजेन्द्रसूरि गुरुमन्दिर जिर्णोद्धार, प्रतिष्ठा एवं ज्ञान मन्दिर का उद्घाटन ३ जुलाई को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में विशेषरुप से श्री भानमलजी (जालोर) श्री चेतनजी काश्यप (रतलाम), विधायक श्री पारस जैन व उदयसिंह पण्ड्या पधारे थे। स्वामीवात्सल्य व शोभायात्रा का आयोजन किया गया था। उज्जैन, रतलाम, झाबुआ, राजगढ़, पारा, खाचरौद, जावरा आदि स्थानों से गुरुभक्तों का आगमन हुआ**(प्रेषक-श्री महेश कुमठ)**

खुली पुस्तक परीक्षा आयोजन

आचार्य गुणरत्नसूरीश्वरजी लिखिल 'रे कर्म तेरी गति न्यारी' व 'कहीं मुरझा न जाएं' पुस्तकों को खुली रखकर परीक्षा का आयोजन किया गया है। विस्तृत जानकारी हेतु निम्नांकित पते पर सम्पर्क करें-आध्यात्मिक शिक्षण केन्द्र, श्री शांतिनाथजी जैन मन्दिर पेढी, पाली बाजार, मु. पो. व्यावर जिला-अजमेर (राज.)

समाचार-सार

- **बोंदवड - (महा.)** -जलगांव एवं बुलढाना जिला स्तरीय "जैन युवा सम्मेलन" पू. साध्वीजी अक्षय श्रीजी आखा आदि ठाणा की प्रेरणा से ७ जुलाई को श्री जैन संघ बोंदवड़ की ओर से आयोजित किया गया।
- **सिरोही** - पू. आचार्य श्री गुणरत्नसूरिजी म. सा. द्वारा लिखित 'रे कर्म तेरी गति न्यारी' पुस्तक का विमोचन मालेगांव निवासी श्री भैरमलजी हकमाजी के कर कमलों द्वारा समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।
- **भरतपुर - (राज.)** -श्री राजेन्द्रसूरि जैन कीर्ति मन्दिर प्रांगण में जिनमन्दिर, गुरुमन्दिर एवं श्री यतीन्द्र विहार यात्री भवन का खात मुहूर्त दि. २०-७-९१ आषाढ़ सुदी ९ शनिवार को सेठ श्री चैतन्यकुमारजी काश्यप के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस निमित्त श्री राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजन का आयोजन किया गया।
- **अमेरीका** - अमेरीका के न्यूजर्सी शहर में प्रथम जैन तीर्थ सिद्धाचल की स्थापना एवं पंचकल्याणक व प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन दि. २ अगस्त से ११ अगस्त तक किया जायेगा। अमेरीका जाने के इच्छुक सज्जन निम्नांकित पते पर सम्पर्क कर सकते हैं। -श्री गौतम औसवाल, ६६ वीर नगर, दिल्ली-७.
- **कांदिवली (बम्बई)** -प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी समग्र जैन चातुर्मास सूची १९९१ का प्रकाशन श्री बाबुलाल जैन 'उज्ज्वल' द्वारा किया जा रहा है। अपने-अपने गांव, नगर उपनगर, शहर जहां-जहां पर भी पू. आचार्यों, साधु, साध्वीयों के चातुर्मास स्वीकृत हुए हैं; उनका सम्पूर्ण विवरण निम्न पते पर भिजवाएँ। विशेष जानकारी हेतू सम्पर्क सूत्र:- श्री बाबुलाल जैन (उज्ज्वल) संयोजक, १०५ तिरुपति अपार्टमेंट/आकुर्ली क्रास रोड़ नं. १ **कांदिवली (पूर्व) बम्बई-४०० १०१**
- **खीमेल (राज.)** -पू. आचार्य श्री सुशीलसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश दि. २१ जुलाई ९१ आषाढ़ सुदी १० रविवार को भव्य चल समारोह सह हुआ।
- **बम्बई** - पू. मुनिराज श्री विमलसागर जी म. सा आदि ठाणा एवं पू. साध्वी श्री सुशीमा श्री जी म. सा. आदि ठाणा का चातुर्मास हेतु प्रवेश दि. १८ जुलाई आषाढ़ सुदी ७ गुरुवार को प्रार्थना समाज पर हुआ।
- **भीनमाल - (राज.)** -पू. मुनिराज श्री भुवनविजयजी, जयानंदविजयजी म. सा. सम्यग्रत्नविजयजी, रामरत्नविजयजी, हरिश्चन्द्रविजयजी आदि ठाणा एवं पू. साध्वी श्री स्नेहलता श्री जी आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश दि. १९-७-९१ श्री महावीर स्वामी जैन मन्दिर उपाश्रय में भव्य शोभा यात्रा के साथ हुआ। चातुर्मास करवाने का लाभ शा. बाबुलालजी अमीचंदजी बाफना परिवार ले रहे हैं। प्रवेश अवसर पर आहोर, धाणसा, धानेरा आदि ग्रामों से गुरुभक्त आये थे।
- **उदयपुर - (राज.)** -पू. मुनिप्रवर श्री रत्नसेन विजयजी म. सा. आदि ठाणा एवं पू. साध्वी श्री भव्यरत्नाश्रीजी आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश १२-७-९१ आषाढ़ १ शुक्रवार को भव्य चल समारोह के साथ हुआ। इस अवसर पर पू. मुनि श्री द्वारा सम्पादित 'दिव्य संदेश' मासिक के 'युवाचेतना' विशेषांक का विमोचन हुआ।
- **रत्नागिरी** - पू. आचार्य श्री भद्रंकर सूरीश्वरजी म. सा. की निश्रा में भव्य अंजनशलाका एवं प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द

सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य श्री को कोकण के विविध संघो द्वारा 'कोकण उद्धारक' विरुद से विभूषित किया जा कर ७५ रजतकमल द्वारा गुरुपूजन किया गया। पू. आचार्यश्री का चातुर्मास सायन (बम्बई) में है।

- **मदनगंज - (राज.)** - पू. साध्वीजी श्री कुसुमप्रभा श्री जी आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश २७-७-९१ को भव्य शोभा यात्रा के साथ हुआ। इस निमित्त दोपहर को श्री पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजन का आयोजन कर सामूहिक आयम्बिल भी किये गये।
- **जोबट - (म. प्र.)** - पू. आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी की प्रेरणा से जिनमन्दिर हेतू भूमिपूजन, खात मुहूर्त एवं शिलारोपण का कार्यक्रम २०-७-९१ को सानन्द सम्पन्न हुआ।
- **बड़नगर - (म. प्र.)** - जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरिजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वीजी कनकप्रभा श्रीजी म. सा. आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश १४-७-९१ को श्री राजेन्द्र जैन ज्ञान मन्दिर-बस स्टेण्ड पर विशाल शोभा यात्रा के साथ हुआ।
- **नागदा (जंक्शन) - (म. प्र.)** - अ. भा. श्री रा. जै. न. प. शाखा नागदा के वार्षिक चुनाव आचार्य श्री जयंतसेन सुरिजी म. सा. की निश्रा में सम्पन्न हुए जिसमें अध्यक्ष श्री सुनिल छाजेड़, उपाध्यक्ष-श्री दिलीप गादिया, सचिव-श्री अनिल ओरा, सहसचिव-श्री कमल जैन, प्रचार मंत्री-श्री सुरेश नाहटा एवं कोषाध्यक्ष-श्री दिलीप जैन को मनोनीत किया गया।
- **जावरा - (म. प्र.)** - दि. ७-७-९१ को पू. गुरूदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा.के १२३ वें कियोद्धार दिवस (जयंती) को दादावाड़ी में विविध भक्तिपूर्ण कार्यक्रमों के साथ मनाया गया।
- **ब्यावर - (राज.)** - पू. आचार्य श्री गुणरत्नसूरिजी म. सा. आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश २०-७-९१ को भव्य चल समारोह के साथ हुआ। दि. २२-७-९१ को ५ श्रमणीयों की बड़ी दीक्षाविधी सम्पन्न हुई चातुर्मासावधि में प्रति रविवार को प्रात: आचार्य श्री के द्वारा 'रामायण' पर आधारित सार्वजनिक प्रवचन आयोजित किये जायेंगे।
- **कोयम्बटूर** - पू. साध्वी श्री मुक्तिश्रीजी आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश दि. २७-६-९१ को हुआ। दि. ९-७-९१ से पंचान्हिका महोत्सव आयोजित किया जाकर दि. १३-७-९१ मंदिरजी का शिलान्यास मुहूर्त सम्पन्न हुआ।
- **अहमदाबाद** - श्री राजेन्द्रसूरि जैन पाठशाला द्वारा ग्रीष्मावकाश में नमस्कार महामंत्र व जिनपूजा के विषय में अध्ययन करवा कर परीक्षा आयोजित की गयी, जिसमें ८० भाई बहनों ने भाग लिया। साध्वीजी भुवनप्रभाश्रीजी एवं शशीकलाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में पाठशाला के अध्यक्ष श्री बचूभाई चिमनलाल धरु एवं अन्य ट्रस्ट्रियों की उपस्थिति में ३० जून को इनाम वितरीत किये गये।
- **पुणे** - गणिवर्य श्री मणिप्रभसागरजी आदि ठाणा की निश्रा में जंगम युगप्रधान श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी की ८३७ वीं पुण्यतिथि आषाढसुदि ११ को मनायी गयी। शोभाया गुणानुवाद सभा, पूजा, आंगी, भावना का आयोजन किया गया था।
- **खाचरोद** - आषाढ वदी ११ के दिन प. पू.

आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी म. सा. की निश्रा में श्रीमती चाँदबाई चौहान के ५०० आयम्बिल तप की पूर्णाहूति पर नवपद पूजन एवं साधर्मीवात्सल्य का आयोजन परिवार द्वारा किया गया। आषाढ़ सुदी १ को श्री पार्श्वनाथ जिनालय में ध्वजारोहण किया गया।

- **अंधेरी (पूर्व) - (बम्बई)** - पू. साध्वी श्रीदिव्यप्रभाश्रीजी म. सा.आदि ठाणा की निश्रा में चातुर्मास काल में प्रति शनिवार दोपहर १ से ४ बजे तक श्री चन्दनबाला कन्या शिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।
- **वक्तापुर - (साबरकांठा)** - आचार्यश्री आनंदघनसूरीश्वरजी आदि ठाणा एवं साध्वीजी पूर्णकलाश्रीजी आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश एवं ध्वजारोहण आषाढ़सुदि ६ को सानंद सम्पन्न हुआ। साधर्मिक भक्ति का लाभ शाह बाबुलाल लीलाचंद ने लिया।
- **बोटाद** - प. श्री शीलचन्द्रविजयजी गणिवर के शिष्य मुनिराज श्री कल्याणकीर्ति विजयजी की बडी दीक्षा आसाडसुदि १० को सम्पन्न हुयी।
- **मद्रास** - साध्वीजी अनंतकीर्तिश्रीजी म. की शिष्यायें साध्वीजी संस्कारनिधिश्रीजी एवं साध्वीजी धृतिवर्धनाश्रीजी की बडी दीक्षा असाडसुदि ११ को सम्पन्न हुयी। इस उपलक्ष में त्रिदिवसीय जि भक्ति महोत्सव का आयोजन किया गया था।
- **रानीबन्नूर** - आचार्य श्री भुवनभानुसारीश्वरजी के शिष्य मुनि श्री भुवनसुंदरविजयजी आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश आषाढ़ सुदि २ को हुआ।

मंदसौर त्रिस्तुतिक समाज में एकता

मंदसौर – मंदसौर त्रिस्तुतिक जैन समाज में लगमग आठ वर्षों से तड़ें पडी हुई थीं। दो गुट समानान्तर व्यवस्थाएँ चला रहे थे। कई बार एकता के प्रयत्न हुए जो कि असफल रहे। गत दिनों वर्तमानाचार्य श्रीमद् जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज 'मधुकर' का यहां आगमन हुआ। प्रवेश के प्रसंग पर उनका भव्य स्वागत किया गया। नगर में तोरण द्वार बनाए गए। उनका प्रभावशाली प्रवचन राजेन्द्र विलास सभागृह में हुआ। इसके असर के कारण समाज में दिन भर गतिविधियां चलीं। रात्रि को अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के उपाध्यक्ष श्री चेतन्यकुमारजी कश्यप की उपस्थिति में दोनों पक्षों ने वर्तमानाचार्य श्री मधुकरजी को विवाद के मुद्दों का निर्णय करने के लिए एक ही पत्र पर हस्ताक्षर का निवेदन किया। वर्तमानाचार्य श्री ने जावरा प्रवेश के पश्चात अपना फैसला भेजा जिसके अनुसार मंदसौर में कार्यवाही प्रारंभ हो गई है। फैसले में कहा गया है कि श्री मिश्रीलालजी हींगड़ तथा श्री राजमलजी लोढा समाज के आजीवन क्रमशः श्री गजेनुसिंहजी हिंगड़ तथा श्री सुरेन्द्रजी लोढा कार्य संचालन करेंगे। नवीन कार्य समिति तीन वर्षों के लिए निम्नानुसार बनाई गई।

सर्वश्री शांतिलालजी एलचीवाला, जिनेन्द्रकुमारजी सिसौदिया, शांतिलालजी फोफरिया, शांतिलालजी चपरोत, सौभाग्यमलजी करनास, पारसमलजी डोली, मोहनलालजी खाबिया, मनोहरलालजी सोनगरा तथा दिलीपकुमारजी संघवी। एक सलाहकार समिति बनाई गई जिसमें श्री राजमलजी खाबिया, मदनलालजी चपरोत, सौभागमलजी संघवी, घीसालालजी हत्यानावाला, चांदमलजी दूगड़, सूरजमलजी छिंगावत तथा शांतिलालजी कोठारी लिए गए।

फैसले से मंदसोर में हर्ष की लहर छा गई है

बैंगलोर में श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर व गुरुमंदिर का भूमिपूजन एवं खनन विधि सम्पन्न

आचार्य श्री स्थूलभद्रसूरीश्वरजी म. सा. की निश्रा में के. एस. एस. लेन (एवेन्यु रोड़ क्रॉस) में श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मन्दिर व गुरु गौतमस्वामी व राजेन्द्र गुरुमन्दिर का भूमि पूजन एवं खनन विधि आषाढ सुदी ११ दि. २२ जुलाई को सम्पन्न हुयी। भूमि पूजन का लाभ कांकरिया ओटमलजी वेलाजी परिवार सूरा निवासी व खनन विधि का लाभ सोलंकी पुखराजजी उकाजी परिवार सायला वालों ने लिया। शिलान्यास आषाढ सुदी १५ को हुआ।

जावरा नगर में
बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न
जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज
की पावन पवित्र निश्रा में
श्री नमस्कार महामंत्र आराधना

का भव्य आयोजन १७ से २५ अगस्त ९१ तक
अधिकाधिक संख्या में आराधना के लिए पधारिये

निमंत्रक
श्री सौधर्मवृहत्तपोगच्छीय जैनश्वेताम्बर
त्रिस्तुतिक संघ, जावरा
अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नव युवक परिषद शाखा-जावरा

आवश्यकता है।

भीनमाल (राज.) में श्री राजेन्द्रसूरि जैन पाठशाला के लिये धार्मिक अध्यापक / अध्यापिका की आवश्यकता है। इच्छुक अध्यापक / अध्यापिका शीघ्र निम्नांकित पते पर सम्पर्क करें।- **बाबुलाल नाहर** (व्यवस्थापक) **श्री राजेन्द्रसूरि जैन पाठशाला, महावीर स्वामीजी का मन्दिर-भीनमाल,** जिला-जालोर (राज.)-३४३ ०२९

पूज्य गुरूदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज की
क्रियोद्धार भूमि जावरा जि. रतलाम, (म. प्र.)

अखिल भारतीय

श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का शानदार १५ वां अधिवेशन

१५ व १६ अगस्त १९९१ गुरूवार व शुक्रवार को

शुभ निश्रा - पूज्य आचार्यदेव
श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज
अध्यक्षता - श्री सेवन्तीभाई मोरखिया,
अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद
स्थल - श्री राजेन्द्र जैन पौषधशाला,
पिपलीबाजार, जावरा

इस अधिवेशन में अधिक से अधिक संख्या में पधार कर समाजोन्नति के इस महायज्ञ को सफल बनाईए।

आयोजक :

श्री सौधर्मवृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक संघ, जावरा
अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद,
शाखा जावरा

निवेदक :

चैतन्य कश्यप
केन्द्रीय उपाध्यक्ष

बाबुलाल बोहरा
केन्द्रीय महामंत्री

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

श्रीमती झमकुबाई कश्यप का भव्य सन्मान समारोह सम्पन्न

रतलाम – यहां वर्तमानाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज 'मधुकर' के सान्निध्य में खैरादीवास नीमवाला उपाश्रय के निकट नवनिर्मित जिनालय में जिनेश्वरदेव तथा गुरुदेव की प्रतिमाओं के प्रतिष्ठोत्सव का भव्य आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न होने के पश्चात जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विशाल प्रांगण में सन्मान समारोह आयोजित किया गया जिसमें धर्मवीर समाजसेवी स्व. श्री कन्हैयालालजी कश्यप की धर्मपत्नी श्रीमती झमकुबाई कश्यप को अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। श्रीमती झमकुबाई कश्यप अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के उपाध्यक्ष श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप की दादी माँ साहब हैं। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में म. प्र. के मुख्यमंत्री श्री सुन्दरलालजी पटवा तथा विशेष अतिथि के रूप में सांसद श्री गुमानमलजी लोढ़ा, म. प्र. उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री वीरेन्द्रदत्तजी ज्ञानी तथा म. प्र. के लोकनिर्माण मंत्री श्री हिम्मतजी कोठारी ने भाग लिया। अध्यक्षता सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री हस्तीमलजी पिरोदिया (काइनेटिक होंडा) ने की। समारोह में दस हजार श्रद्धालुओं की विशाल जनमेदिनी उपस्थित थी।

समारोह में भाषण देते हुए श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप ने श्रीमती झमकुबाई कश्यप की ओर से पूज्य वर्तमानाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के निर्देशानुसार सुकृत कार्यों के लिये व्यय करने हेतु ग्यारह लाख रुपये का स्थायी कोष बनाने की घोषणा की। साथ ही रतलाम जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अन्तर्गत श्री कन्हैयालालजी कश्यप वाणिज्य महाविद्यालय प्रारम्भ करने हेतु दो लाख रुपये, त्रिस्तुतिक जैन समाज रतलाम को पचहत्तर हजार रुपये तथा शाश्वत धर्म को ग्यारह हजार रुपये देने की भी घोषणा की। अन्य संस्थाओं को भी आपने दान दिया।

मुख्य मंत्री श्री सुन्दरलालजी पटवा एवं अन्य अतिथिगणों ने श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप की घोषणा का स्वागत किया। श्रीमती झमकुबाई कश्यप को मुख्यमंत्री जी ने सपत्नीक पधारकर अपनी ओर से बेस भेंट किया। रतलाम की विभिन्न संस्थाओं की ओर से बेस व मालाएं अर्पित की गई। रतलाम के सभी समुदाय के प्रतिनिधियों ने स्वागत किया। अभिनन्दन पत्र का वाचन श्री ओ. सी. जैन ने किया। इसे भेंट मुख्यमंत्री जी ने किया।

वर्तमानाचार्य श्री मधुकरजी ने कहा कि अपने धन की सार्थकता उसे सुकृत में लगाने में है। कश्यप परिवार का सदैव समाज व रतलाम नगर को योगदान रहा है।

समारोह में विभिन्न समाजसेवियों का सन्मान भी किया गया।

स्वगच्छीय चातुर्मास सूची
(आचार्यश्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी एवं समुदायवर्ती मुनिमंडल)

जावरा	:	सौधर्मवृहत्पोगच्छीय वर्तमानाचार्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी, मुनिश्री नित्यानंदविजयजी, मुनिश्री विश्वरत्नविजयजी, मुनिश्री पद्मरत्नविजयजी, मुनिश्री सिद्धरत्नविजयजी, मुनिश्री अपूर्वरत्नविजयजी, मुनिश्री विद्वदरत्नविजयजी, मुनिश्री नयरत्नविजयजी
खोराऊ	:	संयमवय स्थविर मुनिराज श्री शान्तिविजयजी, मुनिश्री जयरत्नविजयजी, मुनिश्री अशोकविजयजी, मुनिश्री आनन्दविजयजी
भीनमाल	:	मुनिराज श्री भुवनविजयजी, मुनि श्री जयानन्दविजयजी, मुनि श्री सम्यग्रत्नविजयजी, मुनि श्री रामरत्नविजयजी, मुनि श्री हरिशचन्द्रविजयजी।
सियाणा	:	मुनिराज श्री केवल विजयजी, मुनि श्री वीररत्न विजयजी, मुनि श्री हर्षितरत्न विजयजी।
अहमदाबाद	:	मुनिराज श्री जयकीर्ति विजयजी, मुनि श्री मुक्तिचंद्र विजयजी।
पाटण	:	मुनिराज श्री हेमरत्न विजयजी, मुनि श्री प्रशान्तरत्न विजयजी।
उज्जैन	:	मुनिराज श्री जगत्चन्द्र विजयजी।
आगरा	:	वयोवृद्धा साध्वीजी श्री कुसुमश्रीजी, श्री कुमुदश्रीजी, श्री हर्षपूर्णाश्रीजी, श्री मोक्षपूर्णा श्रीजी।
जालोर	:	साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी, डॉ. श्री प्रियदर्शनाश्रीजी (पी. एच. डी.), डॉ. श्री सुदर्शनाश्रीजी (पी. एच. डी.)।
अहमदाबाद	:	साध्वीजी श्री भुवनप्रभाश्रीजी, श्रीचन्द्रयशाश्रीजी, श्री शशिकलाश्रीजी, श्री अनन्तदृष्टाश्रीजी, श्रीमयुरकलाश्रीजी, श्री चारित्रकलाश्रीजी, श्री भक्तिरसाश्रीजी।
इन्दौर	:	साध्वीजी श्री स्वयंप्रभाश्रीजी, श्री अनन्तगुणाश्रीजी, श्री भव्यगुणाश्रीजी, श्री रत्नयशाश्रीजी, श्री अक्षयगुणाश्रीजी, श्री सिद्धान्तगुणाश्रीजी, श्री समकितगुणाश्रीजी, श्री शीतलगुणाश्रीजी।
पालीताणा	:	साध्वीजी श्री दमयंतीश्रीजी, श्री प्रेमलताश्रीजी, श्री पूर्णकिरणाश्रीजी, श्री सुनन्दाश्रीजी, श्री सूर्योदयाश्रीजी, श्री कैलाशश्रीजी, श्री कल्परेखाश्रीजी।
बड़नगर	:	साध्वीजी श्री कनकप्रभाश्रीजी, श्री मोक्षगुणाश्रीजी, श्री कैवल्यगुणाश्रीजी, श्री दर्शितगुणाश्रीजी, श्री विनीतगुणाश्रीजी, श्री वात्सल्यगुणाश्रीजी।
खाचरौद	:	साध्वीजी श्री कल्पलताश्रीजी, श्री हितप्रज्ञाश्रीजी, श्री सौम्यगुणाश्रीजी, श्री विद्वद्गुणाश्रीजी, श्री वैराग्यगुणाश्रीजी।
सियाणा	:	साध्वीजी श्री महिलाश्रीजी, श्री शशिप्रभाश्रीजी, श्री पुण्यप्रभाश्रीजी, श्री दिव्यदर्शनाश्रीजी।
थराद	:	साध्वीजी श्री कोमललताश्रीजी, श्री शासनलताश्रीजी, श्री अनेकान्तलताश्रीजी, श्री यशोलताश्रीजी।
आगरा	:	साध्वीजी श्री सूर्यकिरणाश्रीजी, श्री अरुणप्रभाश्रीजी, श्री सम्यग्प्रभाश्रीजी, श्री शरदप्रभाश्रीजी।
भीनमाल	:	साध्वीजी श्री स्नेहलताश्रीजी, श्री पुण्यदर्शनाश्रीजी, श्रीतत्वलताश्रीजी, श्री विज्ञानलताश्रीजी, श्री हर्षितरेखाश्रीजी।
जावरा	:	साध्वीजी श्री आत्मदर्शनाश्रीजी, श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी, श्री चारुदर्शनाश्रीजी।
आणन्द	:	साध्वीजी श्री वसन्तमालाश्रीजी, श्री रंजनमालाश्रीजी।
सूरत	:	साध्वीजी श्री दिव्यदृष्टाश्रीजी, श्री अविचलदृष्टाश्रीजी, श्री अनुपमदृष्टाश्रीजी, श्री अमितदृष्टाश्रीजी।
मन्दसौर	:	साध्वीजी श्री दर्शितकलाश्रीजी, श्री दर्शनकलाश्रीजी, श्री जीवनकलाश्रीजी।

शब्दसागर इनामी स्पर्धा क्रं. २ के उत्तर व परिणाम

परिणाम - प्राप्त उत्तरों में सात प्रतियोगियों के उत्तर सम्पूर्ण सही पाये गये। लक्की ड्रॉ द्वारा प्रथम, द्वितीय व तृतीय की घोषणा कर इनाम मनीआर्डर द्वारा भिजवाया गया है, शेष को प्रोत्साहन पुरस्कार भेजा जा रहा है। क्रमशः नाम इस प्रकार हैं-

प्रथम - श्री एस. आर. डूंगरवाल (सेंधवा); **द्वितीय** - श्री पंकज जैन (उज्जैन);

द्वितीय - श्री पंकज जैन (उज्जैन);

तृतीय - श्री जिनेन्द्र जैन (इन्दौर)

सफल प्रतियोगी - कु. निलम एन. शाह (बम्बई); कु. हेमल वी. शाह (विजयवाड़ा); श्री गौतम बागरेचा (बालोतरा); कु. नीरू बी. जैन (थाने)

आवश्यकता है!

विजयवाड़ा (आं. प्र.) में जैन धार्मिक अध्यापक/अध्यापिका की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें-

संपर्कसूत्र

श्री संभवनाथ राजेन्द्र जैन ट्रस्ट

सेक्रेटरी, जैन मन्दिर पेढ़ी,

कुन्दुलवारी स्ट्रीट-विजयवाड़ा - 520 001 (आ. प्र.)

अ.भा. श्री राजेन्द्र जयन्तसेन सम्यग्ज्ञान कन्या शिविर समापन समारोह

रानी स्टेशन दि. ३०.६.९१

(१.) शिविरार्थियोंद्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम

(४.) परीक्षा देती हुई शिविरार्थी कन्यायें

(२.) ए-ग्रुप में प्रथमक्रमांकप्राप्त कु. रुचीका धारीवाल (पाली)

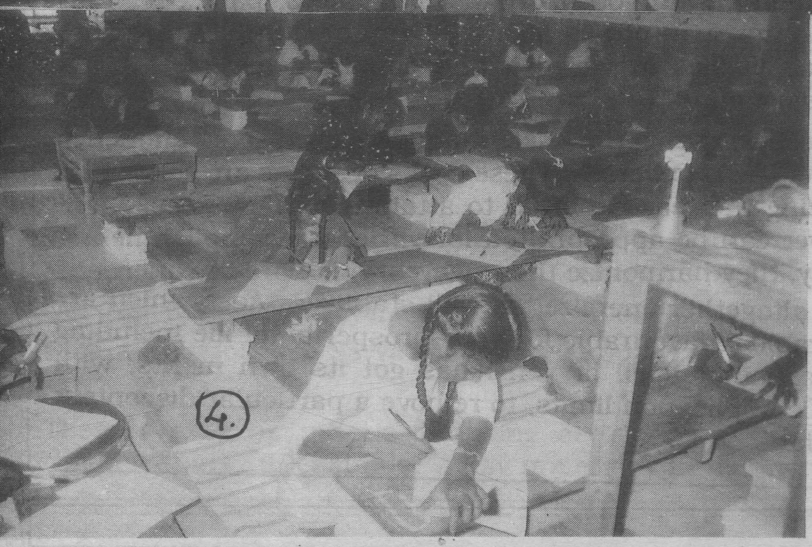

(३.) बी. ग्रुप में प्रथमक्रमांक प्राप्त कु. ममुता बागरेचा - दोनो को इनाम वितरण श्री छगनराज बूटा (आहोर) ने किया

शिविर सानिध्य -
साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी
साध्वीजी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी (P.H.D.)
साध्वीजी श्री सुदर्शनाश्रीजी (P.H.D.)

NAVKAR MANTRA - THE WAY TO SUCCESS

— **Shree Rajendra P. Mahatma**

INTRODUCTORY

➽ Blessed am I that I am born to this humanity and I had the luck to love her !

How I love others? If I could love myself - I can love myself if I am happy. How I can be happy? If there exist no sorrows. Sorrows are attributed to mind ie, senses of brain and the source of actuation of brain is soul. Soul is the eternal energy which makes you living being - it is the absolute germination of your life. If the qualities of soul are conserved you are happy and successful, failing which you tend to be apparently alive.

The sorrows are perturbed state of your mind which distabilizes the inherent melody of your's thought and feeling - the feeling of peace and content. As no "matter" can homogeneously mix with "soul" or find a way for intrusion, so thus the prevelant materialism presents you no solutions or solace to the problems co-related with the soul, but spiritualism can conclude melioration. Besides, materialism can console sufferings - being different than sorrows, are attributed to the vivo and are the disturbances to the synchronization of your body organs like illness, pain etc., that too for minimum span of time. Thus, it can be affirmed that true happiness of life lies in yourself and can be achieved through some process of mind.

Deiteous ascetics, during the ancient era developed some phonetics in the form of spells or verses. These spells or verses are consistent of reorganizing the reactive mind to attain true happiness, there virtous power can be appropraited for various accomplishments. Scientifically, they harmonize those waves which are uncongruent to you and altogether energize, as well stabilize, those which are timely desirable & favourable for your prosperity (of life including mind). A particular spell or verse has got its own merits, with some specific application limits, to remove a particular discontent or persecution.

Greatest of all is **"Navkar Mantra"**, the absolute perfect composition incorporated with paramount power, to elevate yourself and achieve all pervading welfare. This is an established pre-eminent **Mahamantra** and remains the celebrity of all times. It enables you to synthesize your Latent Power to ascend the steps of universal success, while experiencing the true happiness. Through meditation, observing this spell/verse, you can pave the way to attain omniscience. It is the most perfect creation in phonetics, capable of producing resonance to every desirable frequency generated in your vivo with that of present in this universe. Subsequently, these resonances develops favourable conditions, for fullfillment of any of your's volition, with reference to time, circumstances, planets/stars, prospects and others.

WHAT IT CAN DO FOR YOU

It can safeguard you from any dangers to your peaceful life. If your enemies waylay for, you can move safe; If you face slavery, you can gain freedom; If trapped in a calamity or disaster, you can overcome the same with comfort; If a dreaded disease or pain encompasses you, you get relief; If inauspiciously offended, you can regain respect; If your progress gets restraints, they are removed besides getting more chances; If injustice sents you to jail, you can set free - by muttering this mantra with devotion.

Horescopes are becoming more popular, because of increasing complexities and troublesome human life. The planets & stars and their movements essentially affects your material body (as Newton's law states that any two material objects in this universe have a force of attraction between them, no matter least or greater). "Mahamantra - Navakar" helps you with salubrious remedies. To withstand or remove the influence of an impropitious planet, specially during unfavourable constellations, you can pray as per following details :

MANTRA	JAP	PLANETS/STARS
Om Hrim Namoh Arihantanam	1,000	for Moon, Venus
Om Hrim Namoh Sidhanam	1,000	for Sun, Mars
Om Hrim Namoh Ayariyanam	1,000	for Jupiter
Om Hrim Namoh Uvajyayanam	1,000	for Pluto
Om Hrim Namoh Loye Savva Sahhunam	1,00	for Saturn, Typhon & Ketu

These are to be practiced during certain time periods of the constellations, at least once a day preferably in the morning.

નવકાર આરાધના

– શ્રી કીર્તિલાલ હાલચંદ વોરા, થરાદવાળા

વિતરાગ સમો દેવો, શત્રુંજય સમો ગીરિ
નવકાર સમો મંત્ર, ન ભૂતો ન ભવિષ્યતિ

➽ જૈન ધર્મના શાસ્ત્રો અને સુત્રોમાં નવકાર મંત્રનું સ્થાન અજોડ અને અદ્વિતીય છે. જેના નામ સ્મરણથી આ સંસારની અનેક ઉપાધિઓ આપણાથી દૂર થઈ જાય છે.

આજના વિજ્ઞાનયુગમાં ઘણાને સ્વાભાવિક પ્રશ્ન થશે કે નવકાર મંત્રના સ્મરણ કે જાપથી ઉપાધિ મુક્ત થવાય જ કઈ રીતે ? આજે આપણે સર્વે કામના આરંભે અને ત્યારબાદ પણ જાણતા-અજાણતા સતત નવકારનું સ્મરણ કરતા જ હોઈએ છીએ છતાં આધિ-વ્યાધિનો અંત દેખાતો નથી. તો પછી આ મંત્રથી સર્વ દુઃખોનો ક્ષય થાય એ કઈ રીતે ?

આનો જવાબ છે એક જઃ કોઈપણ કાર્ય કરતાં પહેલાં તેનું મહત્ત્વ સમજી અને તેના માટે થતી ક્રિયા એકાગ્રતાથી અને ભાવપૂર્વક શ્રદ્ધા સાથે કરવામાં આવે તો જ તે ફળદાયી બને છે. દા. ત. માંદગી વખતે ડૉ. ની દવાના ઊપયોગના બદલે એના જ લખેલ કાગળને વાંચ્યા કરીએ તો એની અસર કઈ રીતે થાય ?

એજ રીતે નવકાર સ્મરણ કરતી વખતે શરીર અને સ્થાનની શુદ્ધિની સાથોસાથ મનની એકાગ્રતા અને આત્મામાં ડુબકી લગાવવી પણ જરૂરી છે. સંસારની દરેક પળોજણને કોરે મૂકી, બધું ભૂલી જઈ શુદ્ધ ભાવ-મનથી એકાગ્રતાપૂર્વક જો નવકાર મંત્રનું એક પદ પણ સ્મરણમાં રમવા માંડે તો એનાથી આત્મભાનના આકાશમાં ઉડવાનું આપણા માટે સરળ બની રહે. સમજીપૂર્વક થતી દરેક ક્રિયા ફળીભૂત થતી હોઈ શ્રી નવકાર મહામંત્રનો અર્થ આપણે સમજવો જરૂરી છે.

'નમો અરિહંતાણં' નો અર્થ છે અરિહંત ભગવંતોને નમસ્કાર થાઓ. 'અરિ' એટલે દુશ્મન અને 'હંતાણં' એટલે હણનાર - એટલે કે દુશ્મનોને હણનાર - તો પછી ભગવાન મહાવીર અરિહંત કેમ કહેવાયા ? તેમણે ક્યા દુશ્મનોનો નાશ કર્યો ?

નાશવંત શરીરને કષ્ટ આપનાર કોઈ પણ જીવને દુશ્મન ગણાય જ નહિ કારણ કે આ શરીરના દુશ્મનો આત્માના દુશ્મનો હોતા નથી. આત્માના દુશ્મનો છે ક્રોધ, લોભ, મોહ, માન, માયા, મત્સર. આત્માને પવિત્ર બનાવવા આત્માના આ દુશ્મનોનો નાશ કરવો. આ દોષોથી આત્માને મુક્ત કરવો અને મુક્ત રાખવો એ જ ખરૂં મહત્વ છે. ભગવાન મહાવીરે એ કર્યું. આપણે પણ આ દોષોનો નાશ કરીને આત્માને ઉચ્ચ ગતિએ લઈ જઈ શકીએ.

શ્રી પંચમંગલ મહાશ્રુત સ્કંધ

– પ. પૂ. શ્રી સુધર્મ સાગરજી મ. સા. (માલણવાલા)

શ્રી પરમેષ્ઠિ ભગવંતોનુ આલંબન ન મળવાના કારણે ભૂતકાળના અનંતા ભવભ્રમણ કરવા પડ્યા, તેનો અંત આજે તેઓના આલંબનથી આવી રહ્યો છે. નામ, આકૃતિ, દ્રવ્ય અને ભાવ વડે ત્રણેય જગતને પવિત્ર કરનારા સર્વ ક્ષેત્રના અને સર્વકાળના શ્રી અરિહંતોની અમે ઉપાસના કરીએ છીએ.

નવકાર-નમસ્કાર મહામંત્ર જેનું બીજુ નામ શ્રી પંચમંગલ મહાશ્રુત સ્કંધ છે, એને ચૌદપૂર્વનો સાર પણ કહ્યો છે. જેમાં નવપદ, અડસઠ અક્ષર અને આઠ સંપદા છે.

નવકારમંત્રનો જાપ કરવાથી આત્માના શુભ કર્મોનો આશ્રવ થાય છે, અશુભ કર્મનો સંવર થાય છે, પૂર્વકર્મની નિર્જરા થાય છે, મોક્ષસ્વરૂપનું જ્ઞાન થાય છે, સુલભ બોધીપણુ મળે છે અને સર્વકથિત ધર્મની ભવોભવ પ્રાપ્તિ કરાવનાર પુણ્યાનુબંધી પુણ્યકર્મનો ઉપાર્જન થાય છે. નવકારના જાપનો સમય સ્થાન વસ્ત્ર એ બીજા ઉપકરણો એકજ રાખવા જોઈએ, તેને બીજા કામમા વાપરવા નહિ. મન તથા વાણીનું મૌન જાળવવા પ્રયત્ન કરવો, નિયમિતપણે પવિત્ર અને એકાન્ત સ્થળમા પૂર્વ અગર ઉતર દિશા સન્મુખ ને જો જગ્યાની અનુકુળતા હોય તો મકાનની સૌથી નીચેની ભૂમિકામા, જાપ કરવો, જાપ કરતા પહેલા વજપંજસ્તોત્ર વડે આત્મરક્ષા કરવી, જાપ શરૂ કરતા અને પૂર્ણ થયા બાદ પણ મૈત્રી પ્રમોદ, કારૂણ્ય અને માધ્યસ્થ ભાવના ચિંતવવી. જાપમાં ચિતની એકાગ્રતાનું ધ્યાન રાખવું. વિષયોને વિષવૃક્ષ જેવા માનવા, સંસારના સમાગમો ને સ્વપ્ન જેવા જોવા, પોતાની વર્તમાન અવસ્થાને સંસારના નાટકનો એક ભાગ માનવો, તેમજ શરીરને કેદખાનુ અને ઘરને મુસાફરખાનુ માનવુ, આરીતે અનિત્યાદિ ભાવનાઓથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરવો.

નવકારના પ્રભાવે સર્પ ધરણેન્દ્ર બને છે, સમડી રાજકુમારી તરીકે જન્મે છે. અરણ્યનો ભિલ્લા રાજા બને છે. અને તેની પત્ની ભિલ્લાડી રાજરાણી બને છે, પશુઓને ચારનાર ગોવાળનો બાળક પરમ શીલસંપન્ન સુદર્શન શેઠ થાય છે. ભયંકર કોઢ રોગથી વ્યાપ્ત કાયવાળો શ્રીપાલકુમાર પરમરૂપ અને લાવણ્યનો ભંડાર બને છે, નવકારના પ્રભાવે ઘોર વિપત્તિઓ વચ્ચે રહેલા જુગારીઓ પણ પ્રાણાન્ત આપત્તિમાંથી ઊગરી ગયા છે તેમજ સુશીલ અને સમ્યગદૃષ્ટિ મહાસતીઓને પણ જ્યારે પતિ આદિ તરફથી પ્રાણાન્ત આપત્તિ આવી ત્યારે તેમાંથી તેઓ ઊગરી ગઈ છે. સ્મશાનમાં રહેલ શબ સુવર્ણ પુરુષ બની ગયેલ છે. તથા અંધકારમાં રહેલો સર્પ દિવ્ય સુગંધયુક્ત પુણ્યની પુષ્પમાળા બની જાય છે.

આવા દુશ્મનોને નાશ કરનારને નમસ્કાર કરવા માટે 'નમો અરિહંતાણં' નો જાપ આપણે કરીએ છીએ. અભ્યાસપૂર્વક દિવસમાં થોડો થોડો સમય પણ જો આત્માને ખરા સ્વરૂપે ઓળખી રાગ-દ્વેષથી દૂર રહીને 'નવકારનું સ્મરણ' કરીએ તો અરિહંત ભગવાનના સાચા સ્વરૂપને પામી શકીએ.

નિયમિત નવકારના જાપ કરનારને પણ શાંતિ ન મળતી હોય તો એ જોઈને અમુક યુવાવર્ગ નવકારમાંથી શ્રદ્ધા ગુમાવી બેસે છે એનું કારણ છે પૂરતી જાણકારી અને સમજનો અભાવ. આ અજ્ઞાનતા વિકૃતિને પેદા કરે છે જ્યારે જ્ઞાન દ્વારા સંસ્કૃતિનું પ્રદાન થાય છે. આપણી પ્રકૃતિ જો સંસ્કૃતિ તરફ વળે તો જ્ઞાન અને વિકૃતિ તરફ વળે તો અજ્ઞાન પ્રાપ્ત થાય છે.

સમજપૂર્વક આત્મકલ્યાણ અર્થે નવકાર સ્મરણ કરવાને બદલે આપણે સાંસારિક આધિ-વ્યાધિ-ઉપાધિઓમાંથી છૂટકારો મેળવવા જ નવકાર ગણગણવાનું ચાલુ કરતા હોઈએ છીએ અને આ અજ્ઞાન પરિસ્થિતિને લીધે સિદ્ધિ પ્રાપ્ત થતી નથી.

ચોવીસ કલાકની વ્યસ્ત અને ત્રસ્ત પળોજણમાંથી જો થોડો સમય પણ આત્મકલ્યાણ માટે નવકાર સ્મરણમાં ગાળીએ તો આત્મશક્તિમાં વધારો થશે અને માનસિક શાંતિ વધતાં સંસારબોજ હળવોફૂલ લાગશે.

આત્મકલ્યાણ અર્થે નવકાર મંત્ર સ્મરીએ.

पृष्ठ 57 का शेष.....

HOW TO PRACTICE

The prayer of Navkar requires wisdom and belief, in addition with self-control on sex, deciet, greed and worldly pleasures, during the course of its meditation. You have to sit with clean body (just after bath), in a clean and silent place. As the proportion of purity varies so as the results ie, your gains corresponds with subject to the devotion and fulfillment of conditions. Real experiences still continue to be witnessed with this Mahamantra and anyone irespective of cast, sex, age can utilize the same privelage. Yes, it is certainly possible, today also, to examine the inherent capabilities of spiritual power. Again, it is possible to reform your distorted life for improved humane qualities, welfare and mastery over self.

The Navakar is :

"Obeisance to Arahantas. Obeisance to Sidhas. Obeisance to acharyas. Obeisance to Upadhyayas. Obeisance to all the Sadhus in the world. This five-fold obeisance is the destroyer of all the vices and (so) among all the (types of) auspiciousness (this) becomes the fore-most auspiciousness."

Be optimistic and elevate yourself in this rare human birth !

જંગલમાં મંગલ

એક અદ્‌ભુત ચમત્કારિક ઘટના

– શ્રી રસિકલાલ સી. પારેખ

"નમસ્કાર મંત્ર વિશેષાંક" અંગેનો પરિપત્ર મળેલો ... ત્યાં સુધી મારા અંગત જીવનમાં, જો કે હું ધાર્મિક પત્રનો સંપાદક હોવા છતાં, એક પણ એવી ઘટના બનેલી નહી. તેમજ અમુક માણસોની કપોળકલ્પિત વાતો, મારા માન્યામાં ન આવે તેવી વાતો મળેલી. પરંતુ દૃઢધર્મી શ્રાવક હોવા છતાં સંજોગોવશાત્ ચમત્કાર ઉપર શ્રદ્ધા બેસતી નહીં, કારણ કે કર્મવાદમાં જ માનું છું.

જોગાનુજોગ આપનો પરિપત્ર મળ્યા બાદ મારા કુટુંબ સાથે વર્ષાકાળના દિવસોમાં ગીરના જંગલમાં જવાનું બન્યું. ત્યારે નમસ્કાર મંત્રના ચમત્કારનો પ્રસંગ બન્યો જે લખી જણાવું છું.

અમો રાજકોટના સ્થા. કુટુંબના સભ્ય છીએ. મારી એક નાની બહેન ઈન્દીરા જેતપુર પરણાવેલી છે. અને હાલ રાજકોટ રહે છે. તેઓના કુળદેવી કનકાઈ માતાજી છે. બહેન કોઈ બાધા લઈને બેઠી કે મારે મારા માતાજીના દર્શન કરવા કનકાઈ માતાજી તાત્કાલિક જવું છે. બનેવી પરદેશ ધંધાર્થે વસવાટ કરે છે. તેથી કોઈ પણ સંજોગોમાં મને સાથ આપવા આગ્રહ કર્યો.

કનકાઈ માતાજીનું સ્થાનક જૂનાગઢ જિલ્લામાં મધ્યગીરમાં અડાબીડ જંગલ વચ્ચે સતાધારથી ઊંડે ૨૪ કી.મી. ને અંતર આવેલ છે.

ગીરનું જંગલ ગુજરાત સરકારે અભ્યારણ્ય તરીકે જાહેર કરેલ હોવાથી તે હદની અંદર આવેલ નેસડામાં વસતા માલધારીને પણ બીજે ખસેડેલ છે. અને ચારે બાજુથી હદ બાંધી ચેક પોસ્ટ ઊભી કરેલ છે. તેમની પરવાનગી વગર જંગલમાં જવાની સખત મનાઈ છે.

તપાસ કરતાં જાણવા મળેલ કે ચોમાસાની સીઝનમાં ગીરમાં જવાના દરેક રસ્તા બંધ હોય છે. કેડીના માર્ગ ઉપર છ/છ ફુટ ઘાસ ઊગી નીકળે છે. તેમજ રસ્તામાં આવતા અનેક નાના મોટા ઝરણાઓ કોતરો વચ્ચે બે કાંઠે હોય છે. તેથી ગીરના ચેકપોસ્ટ એટલે પ્રવેશ દ્વારથી જવા દેવામાં આવતા નથી.

પરંતુ આકરી બાધા લઈને બેઠેલ નાની બ્હેન ઈન્દુને સમજાવવી ઘણુ જ મુશ્કેલ કાર્ય હોઈ, હિંમત કરીને એક એમ્બેસેડર ગાડીમાં હું, મારા ધર્મપત્ની મારી પુત્રી, બન્ને નાની પરિણીત બ્હેનો, બે નાના ભાણેજ તથા એક નાની ભાણેજ, મોટા બનેવી શ્રી કનુભાઈ શેઠ (એડવોકેટ) તથા ડ્રાઈવર સહિત નાના મોટા દશ સભ્યોએ રાજકોટથી વહેલી સવારે ૫.૩૦ વાગ્યે ગીર તરફ પ્રયાણ કર્યું.

સામાન્ય રીતે રાજકોટથી કનકાઈનેસ ૧૬૭ કી.મી. થાય, તેથી માનેલ કે ત્રણ કલાકમાં નિર્ધારિત સ્થળે પહોંચી જઈશું. અને જૂનાગઢ સમયસર પહોંચી ચા પાણીને ન્યાય આપ્યા બાદ

મેંદરડા થઈને સાસણ તરફ આગળ વધ્યા. સાસણ પહોંચ્યા બાદ વનરક્ષક અધિકારીએ સલાહ આપી કે ચોમાસાને લીધે બધા રસ્તા બંધ છે. અને આ સીઝનમાં કનકાઈના જંગલમાં જવું ઉચિત નથી. કારણ કે ભયંકર જંગલમાં ધોળે દીવસે વનના રાજા જંગલમાં મસ્તીમાં પડ્યા હોય તેમજ રસ્તો પણ તમને મળશે નહિ. તેમને અમોએ અમારા બહેનની ટેકની વાત કરી. ત્યારે તેમણે કહ્યું કે કદાચ સતાધારને રસ્તે જવાશે માટે તે રસ્તે પ્રયત્ન કરો. અમો ૨૭ કી.મી. મેંદરડા પાછા ફર્યા. ત્યાંથી બીલખા વીસાવદર ને માર્ગે સતાધાર પહોંચ્યા. સતાધારથી જંગલમાં જવા માટેનો રસ્તો ભૂલ્યા અને દશેક કિ.મી. જઈ પાછા સતાધાર આવ્યા અને ફરી પૂછપરછ બાદ સતાધારથી દક્ષિણ દિશા તરફ જંગલમાં દાખલ થયા અને યોગ્ય માર્ગ તરફ આગળ વધ્યા. ગીચ ઝાડીમાં ફરી રસ્તો ભૂલ્યા. બલ્કે રસ્તો જ મળે નહિ. ભયંકર અને ઘટાટોપ જગંલમાં અભ્યારણ્યને કારણે કોઈ માનવ વસ્તી મળે નહીં. રસ્તો તદ્દન ખરાબ. જે માર્ગે જઈ રહ્યા હતા, તે કેડીયા માર્ગ ઉપર ચાર-ચાર ફુટ ઘાસ ઊગી નીકળેલું. ગાડી પાછી વળી શકે તેવી સ્થિતિ નહીં. ધીમેધીમે કીડી વેગે મોટર આગળ જઈ રહી હતી, તેમ તેમ જંગલની ભયાનકતા ઓર વધતી જતી હતી. ચારેક કિલોમીટર આગળ વધ્યા બાદ ડ્રાઈવર, મારા બનેવી કનુભાઈ શેઠ તથા મારી પણ હિંમત તૂટતી જતી હતી. ઘટાટોપ ઝાડ, પવનની લેરખીઓને કારણે પાંદડાઓનો ખળખળાટ, પશુ-પંખીનો કલરવ, નીરવ શાંતિ-બપોરના એક વાગવાનો સમય અને નાછુટકે ગાડી ઊભી રાખવી પડી. બીક હતી ક્યાંક કોઈ, પણ દિશા તરફથી જંગલી પ્રાણી કે વનનો રાજા આવી પડે તો ... શું સ્થિતિ ?' મોટર બગડે તો ? ... વાતાવરણમાં નરી શૂન્યતા તથા ગંભીરતા આવતી જતી હતી. કુટુંબના દરેક નાના મોટા સભ્યોના મુખ ઉપર ગ્લાનિ તથા બીકના એંધાણ વર્તાઈ રહ્યાં હતાં. દરેકના કપાળ ઉપરની રેખાઓ ઉપસી આવેલ ... આવા ઠંડક ભર્યા વાતાવરણ વચ્ચે પણ પસીનાના બિંદુઓ સ્પષ્ટ નજરે તરતા હતા. કોઈને કોઈની સાથે વાત કરવામાં પણ અણગમો દેખાતો હતો.

ડ્રાઈવર તથા કનુભાઈ શેઠ હેઠા ઊતર્યા કે કદાચ કોઈ માણસ મળે તો પૂછીએ કે કનકાઈનો રસ્તો ક્યો ? હું પણ હેઠો ઊતર્યો પરંતુ સ્ત્રી વર્ગને એકલા મુકીને મને પણ રસ્તો શોધવા જવું ઉચિત ન લાગ્યું. તેથી મોટરના કાચ બંધ કરી હું બહાર ઊભો રહ્યો. અને કુટુંબના દરેક સ્ત્રી સભ્યો તથા બાળકોને કહ્યું કે **હવે ફક્ત આશરો છે આપણા નવકારમંત્રનો. દરેક નાના મોટા નવકારમહામંત્ર ચાલુ કરી દયો. અને તેના પુણ્ય પ્રતાપે કંઈક રસ્તો નીકળી જશે. અને સૌએ એકધારા મહામંત્રના જાપ ચાલુ કરી દીધા. અરે પાંચ વર્ષનો અમીશ (ભાણેજ) આંખ બંધ કરીને ઝડપી ગતિએ નવકારમંત્ર બોલવા લાગ્યો.** એ જ વખતે થોડે દૂર એક છીંડામાંથી એક ખેડૂત જેવા વૃદ્ધ, મારા બનેવીને મળ્યા અને બોલ્યા કે જમણી બાજુએ ધીમેધીમે આગળ વધો. અર્ધો કી.મી. બાદ જંગલખાતાનું ચેક પોસ્ટ આવશે અને ત્યાંથી દશ ગાઉ જતાં માતાજીનું મંદિર આવશે ....

સૌને થોડી શાન્તિ થઈ. અને નવકારમંત્રના જાપ સાથે ગાડી ધીમેધીમે આગળ ચાલી. અને થોડે દૂર જંગલખાતાનું ચેક પોસ્ટ આવ્યું. **ત્યારે સૌના મોઢા ઉપર હર્ષની રેખા આવી અને લાગ્યું કે નવકાર મહામંત્રનો પ્રભાવ કેટલો છે !**

(શેષ પૃષ્ઠ 64 પર)

શ્રી નમસ્કાર મહામંત્રની આરાધનાની વૈજ્ઞાનિકતા

– શ્રી રાજેન્દ્રકુમાર સારાભાઈ નવાબ

➡ "મંત્ર" એટલે નિશ્ચિત પ્રકારના હ્રસ્વ, દીર્ઘ, ગુરૂ, લઘુ ઉચ્ચારણો ધરાવતા, અમુક નિશ્ચિત પ્રકારના અક્ષરોનો સુઆયોજીત સમુહ. આ વ્યાખ્યા શ્રી નમસ્કાર મહામંત્ર, શ્રી ભક્તામર મંત્ર, કે શ્રી ગાયત્રી મહામંત્ર કે અન્ય કોઈ પણ મહામંત્રને લાગુ પાડી શકાય છે. આ મંત્રબીજાક્ષરોમાં જ મહામંત્રોની વૈજ્ઞાનિકતા સમાયેલ છે. આજના ક્રાંતિકારી વિજ્ઞાનયુગમાં પણ વિજ્ઞાનની કસોટીઓમાં પરિક્ષણ પામી, મંત્રામ્નાયો સત્ય સાબિત થઈ શકે છે.

વિજ્ઞાનવાદના પ્રભાવથી અંજાયેલ આજના યુવાનવર્ગને, સમજણપૂર્વકની સાચી શ્રધ્ધા ઉત્પન્ન કરવા, શ્રી નમસ્કાર મહામંત્રની આરાધનાવિધિ અને તેની ફલશ્રુતિની વૈજ્ઞાનિકતા સમજાવવાની જરૂર છે.

આજનુ વિજ્ઞાન "ધ્વનિની શક્તિ"નો સ્વીકાર કરે છે. વિજ્ઞાનના નિયમ અનુસાર, કોઈ પણ બે પદાર્થોના અથડાવાથી, પ્રતિ સેકંડ ૧૬ જેટલા કંપનો ઉત્પન્ન થાય તો 'ધ્વનિ' સર્જાય છે. જેમ કંપનોની સંખ્યા વધારે સર્જાય છે, તેમ 'ઘોંઘાટ'ની માત્રા વધે છે. પરંતુ જો પ્રતિસેકંડ ૪૦,૦૦૦ થી વધારે કંપનો સર્જાય, તો ધ્વનિ 'અશ્રાવ્ય' બની જાય છે. વિજ્ઞાન તેને 'પેરાસોનિક સાઉન્ડ' નામે ઓળખે છે. આ સાઉન્ડની શક્તિ એટલી બધી તીવ્ર હોય છે, કે તે દરેક પ્રકારના વિઘ્નોનુ છેદન-ભેદન કરીને, અતિ તીવ્ર ઝડપે, નિર્ધારિત સ્થળે પહોંચી જાય છે. અવકાશયાત્રીઓ આ સાઉન્ડની મદદથી, પૃથ્વીલોક જોડે વાતચીત કરી શકે છે.

મનુષ્ય જ્યારે કોઈ પણ મંત્રની આરાધના કરે, ત્યારે તેની જીભ, હોઠ અને તાળવાની હલનચલનથી, સ્મરણ કરાતા વિવિધ શબ્દોના ઉચ્ચારણ અનુસાર, વિવિધ પ્રકારના કંપનો ઉત્પન્ન થાય છે. આરાધક જેમ મંત્રજાપ વધારે સંખ્યામાં કરે, તેમ ધ્વનિકંપનોના સર્જનની માત્રા વધતી જાય છે. અંતે આ ધ્વનિકંપનો "પેરાસોનિક સાઉન્ડ એનર્જી" ઉત્પન્ન કરે છે. આ એનર્જીની મદદથી આરાધક અમુક નિશ્ચિત અંતરે દેવલોકમાં, નિશ્ચિત સ્થળે વસતા 'ઈષ્ટદેવ'ને તેનો સંદેશો પહોંચાડી શકે છે. જૈનશાસ્ત્રો દેવલોકની ભૌગોલિક પરિસ્થિતિ અને અંતરનુ વિસ્તારથી વર્ણન કરે છે. દરેક દેવની 'પરિસ્થિતિ' એક બીજાથી ભિન્ન પ્રકારની હોય છે. આથી જૈન શાસ્ત્રો પ્રત્યેક દેવની આરાધના માટે અલગ અલગ પ્રકારના મંત્રબીજાક્ષરો, તથા તેના જાપની સંખ્યા વર્ણવે છે.

આજનુ વિજ્ઞાન પણ "UFO" ના દૃષ્ટિકોણથી GOD અને 'MIRACLES' નો સ્વીકાર કરે છે. આમ મંત્રના જાપ અને તેની ફલશ્રુતિરૂપે પ્રાપ્ત થતી 'ઈષ્ટસિધ્ધિ' વૈજ્ઞાનિક સત્ય હકીકત છે.

શ્રી નમસ્કાર મહામંત્ર, ૬૮ અક્ષરો અને ઉચ્ચારણોનો સમુહ છે. તેમાં મુખ્યત્વે પરમ મંગલકારી પંચપરમેષ્ટિને નમસ્કાર કરવામાં આવ્યા હોવા છતાં, મહાશક્તિશાળી ણ'કાર, બીજા મંત્રબીજાક્ષરો, અનેક સ્વર અને વ્યંજન, હ્રસ્વ-દીર્ઘ ઉચ્ચારણો તો સમાયેલ છે જ. પરમ મંગલકારી પંચ પરમેષ્ટિની પવિત્રતા લક્ષ્યમાં રાખીને આરાધક, તેની 'શક્તિઓ'નો સદુપયોગ કરે, તે જ નમસ્કાર મહામંત્રના જાપનો મૂળભૂત આશય છે.

મંત્રામ્નાયોના પ્રાચીન ગ્રંથોમાં શ્રી પંચપરમેષ્ટિના નામાક્ષરો 'असिआउसा' નો ઉપયોગ કરી, વશીકરણ-મારણ-કામ્ય પ્રયોગો વર્ણવાયેલ છે જ. પરંતુ તેનો મૂળભૂત આશય, આરાધક અનિવાર્ય સંજોગોમાં ધર્મમાર્ગને સરળ બનાવવા, દુષ્ટ તત્વોના નિયંત્રણનો જ છે.

આમ છતાં પણ શ્રી નમસ્કાર મહામંત્ર "સ્વયં શક્તિનો સ્ત્રોત" છે, તે વૈજ્ઞાનિક કસોટીઓથી ચકાસી શકાય, તેવું સત્ય છે.

(पृष्ठ 62 का शेष)

વાત અહીંથી અટકતી નથી. જંગલના બીટ ગાર્ડ સાથે પૂછપરછ ચાલુ હતી. એજ વખતે જંગલના અધિકારી શ્રી સિંહા સાહેબ જીપમાં ત્યાં આવ્યા. અમારી પૂછપરછ બાદ તેમણે સલાહ આપી કે વર્તમાનમાં કનકાઈ જેવું ઉચિત નથી. રસ્તો બહુ જ ખરાબ છે. છેલ્લા ત્રણેક માસથી અમે પણ અંદર જતા નથી અને જ્યારે તમારી સાથે સ્ત્રીવર્ગ છે ત્યારે ખોટું જોખમ લેવું યોગ્ય નથી. કારણકે કદાચ ધીમેધીમે આગળ ચાલો. પરંતુ ખાડા, ટેકરા અને કોતરોને લીધે મોટર બગડે તો ... ? તો તમારી સ્થિતિ તદ્દન કફોડી થઈ જશે. અને મારી સલાહ છે કે તમો અહીંથી પાછા ફરી જાવ. પરંતુ **મનોમન નિશ્ચય કરી લીધો કે નવકાર મહામંત્રને પ્રતાપે અહીં સુધી પહોંચ્યા છીએ તો એ જ નવકારમંત્રના પ્રતાપે નિર્વિઘ્ને નિશ્ચિત સ્થળે પહોંચી જઈશું.**

હિંમતથી આગળ વધ્યા. ખાડા, ટેકરા, અડાબીડ જંગલ, બે કાંઠે વહેતા કોતરોમાંથી પસાર થતાં ઝરણા પસાર કરી, નવકારમંત્રના ચાલુ જાપ સાથે ૨૪ કીલોમીટર ૨॥ કલાકે કાપીને કનકાઈના ઘોર જંગલ વચ્ચે માતાજીની મંદિરની ધજાના દર્શન થયા ત્યારે કુટુંબના સભ્યો અને બાળકોના મુખ ઉપર આનંદની લેરખી આવી ગઈ અને ખૂપ જ ગેલમા આવી ગયા. અને સૌને ખાત્રી થઈ ગઈ કે આ નવકાર મહામંત્ર એ એક અદ્‌ભુત ચમત્કારીક મહામંત્ર છે.

आकर्षक 'क्षमापना कार्ड' मंगवायें

सांवत्सरिक क्षमापना हेतु आकर्षक चार रंगी ऑफसेट में मुद्रित लेमीनेशनयुक्त *'क्षमापना कार्ड'* निम्नांकित पते पर मनीआर्डर फॉर्म भेजकर मंगवाये जा सकते हैं। प्रति १० कार्ड सेट का मूल्य ६ रुपये

नोट- कार्ड कम से कम दस या दस के गुणांक में ही भेजे जायेंगे।

मंगवाने का पता :- शाश्वत धर्म कार्यालय
जामली नाका
थाने- ४००६०१ (महाराष्ट्र)

- शाश्वत धर्म के संरक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी , * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगमचंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा पोता प्रतापचंदजी - सरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल शांतिलाल जिनेशकुमार, बेटा पोता कन्नाजी कटारिया-जाखल निवासी. * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ-धानेरा, स्व. मयाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपूत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल, बाबुलाल, रसिकलाल मेहशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रुपेशकुमार, पुत्रपौत्र स्व. मोरखीया नानचंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी, * श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतीलाल, किशोरकुमार, बेटा पोता खुशालजी रामाणी-गुडा बालोतान (फर्म. शांतिलाल ज्वेलर्स, नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता सांकलचंद जेरूपजी - भेंसवाड़ा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई , सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटापोता बेचरदासजी छाजेड़ - नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज), * श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी - सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा. * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल, कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परिवार बागरा निवासी, फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा, * श्री विमलनाथ जैन डोसी दहेरासर - थराद.

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक चुकाये बिना भेजने की
अनुमति प्राप्त लायसेन्स नं. ३५

—इनसे सदा बचिए—

● **जुआ** – जुआ खेलने वाले का कोई विश्वास नहीं करता। जुआरी सदा चिन्तित रहता है। जुआ खेलने वाले पाण्डवों के समान दु:ख संकट और अपमान पाते हैं।

● **मांस** – मांस खाने से मनुष्य का मन दयाहीन, व कठोर हो जाता है। मांस खाना हिंसा को बढ़ाना है। मांस खाने से शरीर में अनेक बीमारियां उत्पन्न हो जाती है। जैसे हृदयरोग, पक्षाघात (लकवा) कैंसर तथा लीवर।

● **शराब** – शराब, व्हिस्की आदि पीने से बुद्धि नष्ट हो जाती है। शराब का अर्थ है शरारत का पानी। इसके पीने से मनुष्य शरारती बन जाता है शराब आदमी को पशु बना देती है, आदमी बेभान हो जाता है। इससे दिल कमजोर होकर हार्ट फैल तक हो जाता है इसके अधिक प्रयोग से गूर्दे तबाह हो जाते हैं इससे गुण्डागर्दी पनपती हैं।

● **वेश्या** – वेश्या गमन करने से शरीर में अनेक रोग उत्पन्न होते हैं मनुष्य का जीवन गन्दा हो जाता है। वेश्या से प्रेम करने वाला धर्म, कर्म, तप, जप आदि अपने सब कर्त्तव्य भूल जाता है। पैसे की बर्बादी होती है। समाज में उस व्यक्ति की प्रतिष्ठा घटती है।

● **शिकार** – अपने मनोरंजन या जीभ के स्वाद के लिए किसी जीव को मारना महापाप है यह पाप मनुष्य की दुर्गति में ले जाता है। शिकार खेलने कारण ही श्रेणिक राजा नरक का कष्ट भोग रहा है।

● **चोरी** – चोरी करने वाले अनेक प्रकार के दण्ड पाते हैं। चोर को सदा भय लगा रहता है। चोरी के द्वारा ही व्यक्ति में अनेक व्यसनों की शुरुआत होती है। जिससे व्यक्ति का जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है अत: चौर्य कर्म से सदा मुक्त रहना चाहिये, छोटी से छोटी वस्तु भी क्यों न हो बिना अनुमति के ग्रहण नहीं करनी चाहिये।

● **पर स्त्री–गमन** – पर स्त्री-गमन सेवन करने वाले का जीवन संसार में कलंकी हो जाता है और वह पराभव में नरक में जाता है परस्त्री गमन से शील तो भंग होता ही है साथ ही चोरी का दोष भी लगता है।

ये सातों व्यसन सातों नरकों के द्वार हैं जो व्यक्ति इनको त्याग देता है उसका जीवन सब दु:खों से छूट जाता है।

सम्पादक : जे. के. संघवी, अ. भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये
डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स-थाने में मुद्रित।